अष्ट देवी आराधना

मनुष्य की आयु बहुत थोड़ी है और अनेक विघ्न, बाधाओं से भरी हुई है। दिन के बाद दिन बीतते चले जाते हैं और यों ही जीवन समाप्त हो जाता है महर्षि मनु ने सबको सावधान करके कहा है—

पूर्वे वयसि तत् कुर्यात् येन वृद्धः सुखं वसेत्।
यावज्जीवन्तु तत् कुर्यात् येना मुत्र सुखं वसेत्॥

अर्थात् बाल्यावस्था में ऐसा कार्य करो जिससे बुढ़ापे में सुख प्राप्त हो और जीवन भर ऐसा कार्य (ईश्वर भक्ति) करो जिसके द्वारा परलोक में सुख प्राप्त हो।

अष्ट देवी आराधना

दुर्गा, काली, वैश्नो, लक्ष्मी, गौरा पार्वती, सरस्वती, गायत्री, गंगा आदि अष्ट देवियों का चरित्र, पूजा-उपासना, विधि यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, चालिसा आदि समन्वित अत्युपयोगी पुस्तक।

लेखक

राजेश दीक्षित



पुस्तक भण्डार का नया नाम

इस पुस्तक के प्रकाशक का नया पता

हिन्द पुस्तक भण्डार

खारी बावली, दिल्ली-६ फोन : २६६३१४

शो रूम : नई सड़क, दिल्ली-६

[illegible] आराधना भी छपकर तैयार है।

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

लेखक
राजेश दीक्षित

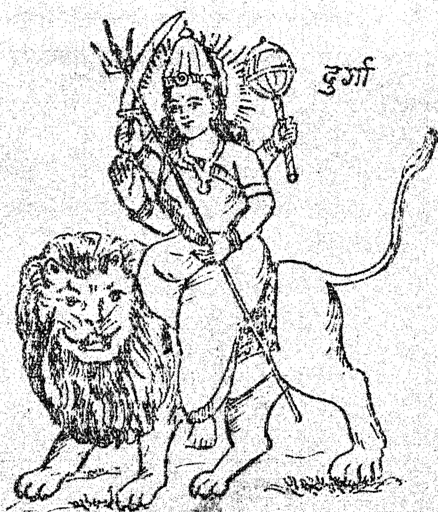
मूल्य
स्वदेश में : 8.25 Rs.
विदेश में { 21 SH. / 1 £ / 1½ $

मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस,
सोनीपत (निकट दिल्ली)

निम्न आराधनाओं का इस पुस्तक में समावेश है—

दुर्गा आराधना
काली आराधना
वैश्नो आराधना
लक्ष्मी आराधना
गौरा पार्वती आराधना
सरस्वती आराधना
गायत्री आराधना
गंगा आराधना

श्री दुर्गा आराधना



राजेश दीक्षित

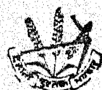
श्री दुर्गा आराधना

[श्री दुर्गा-चरित्र, पूजा-उपासना विधि, यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, आरती, चालीसा आदि समन्वित अत्युपयोगी पुस्तक]

3-762

राजेश दीक्षित





देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : 265403, 261030, 264191

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

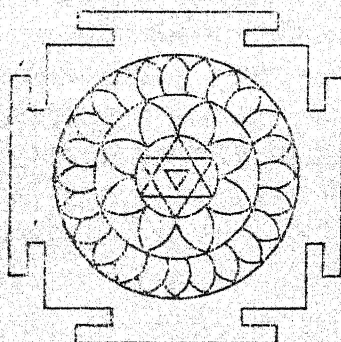
लेखक
राजेश दीक्षित

मूल्य
स्वदेश में : डेढ़ रुपया
विदेश में : चार शिलिंग

मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस,
सोनीपत (निकट दिल्ली) हरयाणा

संक्षिप्त श्री दुर्गा-चरित्र

एक समय महिषासुर राक्षस ने जब अपने अत्याचारों से तीनों लोकों को विचलित कर दिया तथा देवता भी भयभीत होकर अपनी प्राण-रक्षा के लिए इधर-उधर भटकने और छिपने लगे। उस समय महिषासुर इन्द्रलोक पर अधिकार करके स्वयं इन्द्र के सिंहासन पर आ बैठा तथा इन्द्र पद का उपभोग करने लगा। यह देखकर सब देवता ब्रह्माजी को साथ लेकर भगवान् शिव तथा विष्णु जी के समीप



श्री दुर्गा पूजन यन्त्र

आये और उन्हें महिषासुर के अत्याचारों से परिचित कराते हुए अपनी कष्ट-कथा कह सुनाई। उस वृत्तान्त को सुनकर शिवजी तथा श्री विष्णु को अत्यन्त क्रोध आया तथा उन दोनों के मुंह से एक-एक महान् तेजो राशि प्रकट हुई। उसी समय अन्यान्य देवताओं के शरीर से भी अलग-अलग तेजो राशियां प्रकट हुईं। फिर उन सभी तेजो राशियों से मिलकर एक महातेजपुन्ज बना और उसी महातेजपुन्ज ने कुछ ही देर में एक परमतेजस्वी देवी का स्वरूप धारण कर लिया।

यह महिमामयी देवी दुर्गा नाम धारिणी थी। इस प्रकार भगवती दुर्गा की उत्पत्ति समस्त देवताओं के सम्मिलित तेज से हुई है।

भगवती दुर्गा के प्राकट्य को देखकर सभी देवता आनन्दमग्न हो गये। फिर सभी ने उन्हें अस्त्र, शस्त्र, कमण्डलु, माला, आसन, वाहन आदि विभिन्न वस्तुएं उपहार में दी। पर्वतराज हिमालय ने उस देवी को सवारी के लिए सिंह की भेंट दी। तब वह देवी बारम्बार अट्टहास तथा गर्जना करने के उपरान्त देवताओं को आश्वस्त करते हुए बोली—"हे देवताओ! अब तुम सब निर्भय हो जाओ। मैं उस महा-दुष्ट महिषासुर का दल-बलसहित संहार करूंगी।" देवी के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर सभी देवता अत्यन्त आनन्दित हुए। तत्पश्चात् वह देवी अपने अट्टहास तथा गर्जन द्वारा तीनों लोकों को कम्पायमान करती हुई महिषासुर के समक्ष जा पहुंची और उसे युद्ध के लिए ललकारा। देवी से युद्ध करके महिषासुर अपने सम्पूर्ण सैनिकों तथा सहयोगियों सहित मृत्यु को प्राप्त हुआ, फलतः देवता लोग प्रसन्न होकर पुनः अपने-अपने लोक में सुख पूर्वक रहने लगे तथा देवराज इन्द्र भी निष्कण्टक होकर इन्द्रासन पर पुनः पदारूढ़ हुए।

महिषासुर के अतिरिक्त भगवती दुर्गा ने शुम्भ, निशुम्भ, चण्ड, मुण्ड, रक्तबीज आदि महाबली दैत्यों का भी संहार करके विश्व के समस्त प्राणियों को निष्कण्टक कर दिया। इस प्रकार देवी ने विविध प्रकार के लीला चरित्र किये हैं, जिनका विस्तृत वर्णन मार्कण्डेय पुराण, देवी भागवत आदि ग्रंथों में पाया जाता है।

भगवती दुर्गा अपने भक्तों के समस्त संकटों को दूर करने वाली, शत्रुओं को नष्ट करने वाली तथा धन-धान्य की वृद्धि कर अभीप्सित फल देने वाली है। नौ देवियों के रूप में प्रसिद्ध भगवती दुर्गा की उपासना चैत्र तथा आश्विन (क्वार) के महीनों के ६ दिनों में विशेष

रूप से की जाती है। इन दिनों को 'नवरात्रि' के नाम से पुकारा जाता है। 'श्री दुर्गा सप्तशती' का नियमित रूप से पाठ करने वाले देवी भक्तों को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है तथा उन्हें सभी कष्टों से छुटकारा मिल जाता है।

सामान्य-पूजा-विधि

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर, मन, वचन एवं कर्म की शुद्धि सहित पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, शिखा में गांठ बांधें तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें। फिर इष्ट देव की मूर्ति, चित्र अथवा प्रतीक को चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर अपने अग्रभाग में स्थापित करे। इस पुस्तक के पांचवें पृष्ठ पर आटे, रोली, हल्दी अथवा चावलों द्वारा देव मूर्ति के सम्मुख चित्रित करें। यदि इस यन्त्र को स्वर्ण, रौप्य अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा लिया जाय तो उसे बारम्बार उपयोग में भी लाया जा सकता है। देव-पूजन के साथ ही यन्त्र-पूजन भी करना चाहिए।

जल पूर्ण पात्र तथा पूजन सामग्री को संकलित कर अपने आसन के समीप ही रख लें तथा इष्टदेव की मूर्ति के समीप शुद्ध घृत का दीपक प्रज्ज्वलित कर, धूप बत्ती, अगर बत्ती आदि जला दें।

सर्वप्रथम 'स्वस्ति वाचन' का पाठ करें। फिर पवित्रीकरण, आचमन, हस्त प्रक्षालन तथा भूत-शुद्धि की क्रियाएं सम्पन्न कर पहले

विघ्न-विनाशन आदि पूज्य श्री गणेश जी का ध्यान करें तदुपरान्त 'संकल्प-वाक्य' का उच्चारण करते हुए नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा इष्ट देवी का ध्यान तथा यथा-विधि पूजन करें।

पूजा की समाप्ति पर स्तोत्र, कवच, चालीसा आदि का पाठ एवं आरती, प्रदक्षिणा आदि कृत्य करने चाहिये।

स्वस्ति-वाचन

"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाःविश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ॥१॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षं पयोधाः। पयःस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥३॥ ॐअग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रो देवता दित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥४॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः वनस्पतयःशान्तिरेव शान्तिःसामा शान्तिरेधि॥ ॐविश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ शान्तिः ॥५॥ भवतु ॥"

उक्त 'स्वस्ति वाचन' में जहाँ-जहां ˇ इस प्रकार का चिह्न है, वहाँ 'ग्वं' की भांति उच्चारण करना चाहिये । 'स्वस्ति वाचन' के बाद नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जलसे आचमन करें। तथा अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़कें, तत्पश्चात् दोनों हाथों को धो लें । आचमन करते तथा जल छिड़कते समय "**ओ३म् केशवाय नमः स्वाहा । ओ३म् नारायणाय नमः स्वाहा । ओ३म् माधवाय नमः स्वाहा ।**" इन मन्त्रों का उच्चारण करते जाना चाहिये ।

पवित्रीकरण का मन्त्र

"ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार जल छिड़ककर आचमन करें तथा हाथ धो डालें ।

'पवित्रीकरण' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भूत-शुद्धि' करें ।

भूत-शुद्धि का मन्त्र

"ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥"

'भूत-शुद्धि' के उपरान्त दायें हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प तथा जल लेकर अग्रलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए विघ्न-विनाशन 'श्री गणेश जी का ध्यान' करें—

श्री गणेश ध्यान मन्त्र

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नतस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥"

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर, हाथ में दूर्वा अक्षत, पुष्प आदि को श्रीगणेश जी के समीप स्थापित कर, पुनः दायें हाथ में तिल, कुश, जल तथा यज्ञोपवीत लेकर नीचे लिखे 'संकल्प वाक्य' का उच्चारण करें।

संकल्प वाक्य

"हरिः ॐ तत्सत् । नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे षष्टिसंवत्सराणां मध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने,

'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' वासरे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये चन्द्रे भौमे बुधे बृहस्पतौ शुक्रे शनौ राहौ केतौ एवं गुण विशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मादि) ऽहं धर्मार्थ काम मोक्ष हेतवे श्रीगणपति पूजन महं करिष्ये ।"

उक्त संकल्प वाक्य में जहां-जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां क्रमशः विद्यमान, संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिये। ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', वैश्य को 'गुप्तोऽहं' तथा शुद्र को 'दासोऽहं' शब्द का उच्चारण करना चाहिये।

'संकल्प-वाक्य' के पश्चात् सर्व प्रथम नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपनी इष्ट देवी श्री भगवती दुर्गा जी का 'ध्यान' करना चाहिए—

ध्यान के मन्त्र

"विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटबिलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चाप गुणं तर्जनीं
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥१॥

दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो:
स्वस्थै:स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्रय दु:खभय हारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।। २ ।।
सिंहस्था शशि शेखरा मरकत प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजै:
शंखं चक्र धनु: शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभि शोभिता ।
आमुक्तांगदहारकंकणरणात्कांचीक्वणान्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु वो रत्नोल्लसत्कुंडला ।।३।।
खड्ग चक्रगदेषुचापपारिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिर:
शङ्ख संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपितै हरौ कमलजो हन्तुं मधुंकैटभम् ।।४।।
जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधानमोऽस्तुते ।।५।।"

आवाहन का मन्त्र

"आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये ।।"

उक्त मन्त्र द्वारा श्री भगवती दुर्गा का 'आवाहन' करने के पश्चात् उन्हें 'आसन' प्रदान करने के हेतु अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

आसन का मन्त्र

"अनेक रत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'आसन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पाद्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

पाद्य का मन्त्र

"गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाऽऽहृतम् ।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अर्घ्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

अर्घ्य का मन्त्र

"गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया ।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्नता सर्वदा ॥"

'अर्घ्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमनीय' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

आचमन का मन्त्र

"आचम्यतां त्वया देवि भक्तिं मेह्यचलां कुरु ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'स्नान' के हेतु जल का निक्षेप करें—

स्नानीय जल का मन्त्र

"जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम् ।
स्नापयामि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादिफलप्रदाम् ॥"

'स्नानीय-जल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पंचामृत-स्नान' करायें—

पञ्चामृत-स्नान का मन्त्र

"पयोदधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम् ।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे ॥"

'पंचामृत-स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'शुद्धोदक-स्नान' करायें—

शुद्धोदक स्नान का मन्त्र

"परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये ।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमाश ते ॥"

'शुद्धोदक स्नान' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'वस्त्र' समर्पित करें—

वस्त्र का मन्त्र

"वस्त्रं च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् ।
मया निवेदतं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥"

'वस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "उपवस्त्र' समर्पित करें—

उपवस्त्र का मंत्र

"यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा ।
तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥"

'उपवस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'मधुपर्क' समर्पित करें—

मधुपर्क का मन्त्र

"दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम् ।
मधु पर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने ॥"

'मधुपर्क' के पश्चात् निम्नखिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'गन्ध' समर्पित करें—

गन्ध का मन्त्र

"परमानन्द सौभाग्य परिपूर्ण दिगन्तरे ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि ॥"

'गन्ध' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'कुंकुम' समर्पित करें—

कुंकुम का मन्त्र

"कुंकुमंकान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥"

'कुंकम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आभूषण' समर्पित करें—

आभूषण का मंत्र

"स्वभाव सुन्दराङ्गार्थं नानाशक्त्याश्रिते शिवे ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥"

'आभूषण' के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सिन्दूर' समर्पित करें—

सिन्दूर का मन्त्र

"सिन्दूरमरुणाभासं जयाकुसुमसंनिभम् ।
पूजितासि मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥"

'सिन्दूर' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'काजल' समर्पित करें—

कज्जल का मन्त्र

"चक्षुभ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारके ।
कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'काजल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सौभाग्य सूत्र' समर्पित करें—

सौभाग्य सूत्र का मन्त्र

"सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणि संयुते ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ॥"

'सौभाग्य सूत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'परिमल द्रव्य' समर्पित करें—

परिमल द्रव्य का मन्त्र

"चन्दनागुरु कर्पूर कुंकुमं रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपये ॥"

'परमिल द्रव्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अक्षत' (चावल) समर्पित करें—

अक्षत का मन्त्र

"रञ्जिताः कुकुमौघेन अक्षताश्चाति शोभनाः ।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्नाभव शोभने ॥"

'अक्षत' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्प' समर्पित करें।

पुष्प का मन्त्र

"मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च ।
जाती चम्पक पुष्पाणि गृहणेमानि शोभने ॥"

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पमाला' समर्पित करें—

पुष्पमाला का मंत्र

"सुरभिपुष्पनिवयैर्ग्रथितां शुभ मालिकाम् ।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'पुष्पमाला' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'बिल्वपत्र' समर्पित करें—

बिल्वपत्र का मंत्र

"अमृतोद्भव श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा ।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥"

'बिल्वपत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'धूप' समर्पित करें—

धूप का मन्त्र

"दशाङ्ग गुग्गुलं धूपं चन्दना गुरुसंयुतम् ।
समर्पितं मयाभक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम् ॥"

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दीपक' प्रदर्शित करें—

दीपक का मन्त्र

"घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम् ।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥"

'दीपक' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नैवेद्य' समर्पित करें—

नैवेद्य का मन्त्र

"अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्यचलां कुरु ॥"

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ऋतु फल' समर्पित करें—

ऋतु फल का मंत्र

"द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम् ।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥"

'ऋतु फल' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमन' के लिए जल समर्पित करें—

आचमन का मन्त्र

"कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनमम्बिके ।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके ॥"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अखण्ड ऋतु फल' समर्पित करें—

अखण्ड ऋतु फल का मन्त्र

"नारिकेलं च नारङ्गं कलिङ्गं मञ्चिरं तथा ।
उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम् ॥"

'अखण्ड ऋतु फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ताम्बूल पूंगीफल' समर्पित करें—

ताम्बूल-पूङ्गीफल का मन्त्र

"एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः सुष्ठुवासिताम् ।
वीटिकां मुखवासार्थं मर्पयामि सुरेश्वरि ॥"

'ताम्बूल-पूंगीफल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दक्षिणा' समर्पित करें—

दक्षिणा का मन्त्र

"पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि ।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥"

'दक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नीराजन' आरती करें—

नीराजन का मंत्र

"नीराजनं सुमङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम् ।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि नमोऽस्तुते ।।"

'नीराजन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुये "प्रदक्षिणा' करें—

प्रदक्षिणा का मन्त्र

"नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले ।।"

'प्रदक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दण्डवत्-प्रणाम' निवेदित करें—

प्रणाम का मंत्र

"नमः सर्वहितार्थायै जगदाधार हेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मयाकृतः ।।"

।। इति संक्षिप्त पूजन-विधि ।।

श्री चण्डिका स्तोत्रम्

"या देवी खड्गहस्ता सकलजनपद व्यापिनी विश्वदुर्गा ।
श्यामांगी शुक्लपाशा द्विजागण गणिता ब्रह्मदेहार्धवासा ।।
ज्ञानानां साधयन्ती यति गिर गमनं ज्ञान दिव्य प्रबोधा ।
सा देवी दिव्यमूर्तिः प्रदहतुदुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।१।।
ह्रांह्रीं ह्रूं चर्ममुण्डे शवगमनहते भीषणे भीमवक्त्रे ।
क्रां क्रीं क्रूं क्रोधमूर्तिर्विकृतस्तनमुखे रौद्रदंष्ट्रा कराले ।।
कं कं कं कालधारि भ्रमसि जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती ।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।२।।
ह्रां ह्रीं ह्रूं रूद्ररूपे त्रिभुवन नमिते पाशहस्ते त्रिनेत्रे ।
रां रीं रूं रंग रंगे किलिकिलितरवा शूलहस्ते प्रचण्डे ।।
लां लीं लूं लंब जिह्वे हसति कह कहा शुद्ध घोराट्टहासैः ।
कं काली कालरात्रिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डाप्रचण्डा।।३।।
घ्रां घ्रीं घ्रूं घोररूपे घ घ घ घ घटिते घर्घुरा राव घोरे ।
निर्मांसी शुष्क जंघे पिबतु नर वसा धूम्रधूम्राय माने ।।
द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती सकल भुवितले यक्ष गंधर्व नागः ।
क्षांक्षींक्षूं क्षोभयन्ती प्रदहन्तु दुरितं चण्डमुण्डाप्रचण्डा।।४।।
भ्रां भ्रीं भ्रूं चंडवेग हरिहर नमिते रुद्र मूर्तिश्च कीर्ति-
श्चन्द्रादित्यौ च कर्णोजड़मुकुटशिरो वेष्टितां केतुमालाम्।।
स्त्रक्सर्वोचोरगेन्द्रो शशि किरणनिभौ तारकोहार कण्ठे ।
सादेवी दिव्यमूर्त्तिः प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ।।५।।

खं खं खं खड्गहस्ते वर कनकनिभे सूर्यकांति स्वतेजो ।
विद्युज्ज्वालावलीनां नवनिशित महाक्तिका दक्षिणेन ॥
वामे हस्ते कपालं वर विमल सुरा पूरितं धारयन्ती ।
सा देवी दिव्यमूर्ति प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥६॥
हुं हुं फट् कालरात्रि रु रु सुर मथनी धूम्रमारी कुमारी ।
ह्लीं ह्लीं ह्लीं हत्ति शोरो क्षपितु किलिकिला शब्द अट्टाट्टहासे
हा हा भूत प्रभूते किलिकिलितमुखा कीलयन्ती ग्रसन्ती ।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥७॥
भृंगी काली कपाली परिजनसहिते चण्डिचामुण्ड नित्या ।
रों रों रों कार नित्ये शशिधर धवले कालकूटे दुरन्ते ॥
हुं हुं हुं कार कारी सुरगण नमिते कालकारी विकारी ।
त्रैलोक्यं वश्यकारी प्रदहतु दुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥८॥
वंदे दंड प्रचंडा डमरू रुणिमणिष्टोपटङ्कार घंटे-
नृंत्यन्ती याट्टपातैरटपट विभवै निर्मला मंत्र माला ।
सुक्षौ कुक्षौ वहन्ती खर खरित सखा चार्चिनी प्रेतमाला ।
उच्चैस्तै अट्टहासैर्घुरुघुरितरवा चण्डमुण्डा प्रचण्डा ॥९॥
त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री सच शिखिगमना त्वं च देवीकुमारी।
त्वं चक्री चक्रहस्ता घुरघुरितरवा त्वं वराह स्वरूपा ॥
रौद्री त्वं चर्म मुण्डा सकल भुवितले संस्थिते स्वर्गमार्गे ।
पाताले शैलशृंगे हरिहर नमिते देवि चण्डी नमस्ते॥१०॥
रक्षत्वं मुण्डधारी गिरिगुह विवरे निर्भरे पर्वते वा ।
संग्रामे शत्रुमध्ये विश विश भविशे संकटे कुत्सिते वा ॥
व्याघ्रे चौरे च सर्पे प्युदधि भुवितले वह्निमध्ये च दुर्गे ।
रक्षेत्सा दिव्यमूर्तिः प्रदहतुपुरितं चण्डमुण्डा प्रचण्डा॥११॥

इत्येवं बीज मन्त्रैः स्तव नमित शिवं पातकं व्याधिनाशम्।
प्रत्यक्षं दिव्यरूपं ग्रहगण मथनं मर्द्दनं शाकिनीनाम् ॥
इत्येव वेग वेगं सकल भयहरं मन्त्र शक्तिश्च नित्यम् ।
मंत्राणा स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मंत्रसिद्धिम्
॥ १२ ॥"

॥ इति श्री चण्डिका स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्री दुर्गापदुद्धारस्तोत्रम्

"नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।
नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥१॥
नमस्ते जगच्चिन्त्यमान स्वरूपे
नमस्ते महायोगिनी ज्ञानरूपे
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥२॥
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य
भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारकर्त्री
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥३॥
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये
ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे ।
त्वमेकागतिर्देवि निस्तारनौका
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥४॥

अपारे महादुस्तरे ऽत्यन्तघोरे
विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम् ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तार हेतु
र्नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥५॥

नमश्चण्डिके चण्डदुर्दण्डलीला
समुत्खण्डिताखंडिता शेषशत्रो
त्वमेकागतिर्देवि निस्तारबीजे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥६॥

त्वमेवाद्यभावाधृतासत्यवादि-
र्न्यजाताजिताक्रोधनात्क्रोधनिष्ठा ।
इडापिंगला त्वं सुषुम्ना च नाडी
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥७॥

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे
सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे ।
विभूतिः शची कालरात्रिः सतीत्वं
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥८॥

शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां
मुनिमनुजपशूनां दस्युभिस्त्रासितानम् ।
नृपतिगृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥ ९ ॥

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धार हेतुकम् ।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनाद्घोर संकटात् ॥१०॥

मुच्यतेनात्रसन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले ।
सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेद्भक्तिमान् सदा॥११॥

स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम् ।
पठनादस्य देवेशि किं न सिध्यति भूतले ॥
स्तवराजमिदं देवि संक्षेपोत्कथितं मया ॥१२॥"

॥ इति श्री दुर्गा पदुद्धारस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री अर्गला स्तोत्रम्

"ॐ अस्य श्री अर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णु ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता श्रीजगदम्बा प्रीतये सप्तशती पाठांगत्वेन जपे विनियोगः ॥"

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

ॐ जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥१॥
जयत्वं देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोस्तुते ॥ २ ॥
मधु कैटभ विद्राविविधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ३ ॥
महिषासुर निर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥
वन्दितांघ्रियुगे देवि सर्व सौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७ ॥

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रु विनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ ८ ॥
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ ९ ॥
स्तुवद्भ्यो भक्ति पूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १० ॥
चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ ११ ॥
देहि सौभाग्यमारोग्यं देहिमे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जय देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ १२ ॥
विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमांश्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ १४ ॥
सुरासुर शिरोरत्ननिघृष्ट चरणे ऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥
विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ १६ ॥
प्रचण्ड दैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ १७ ॥
चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ १८ ॥
कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषोजहि ॥ १९ ॥

हिमाचलसुतानाथ संस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि ॥ २० ॥
इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१ ॥
देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ २२ ॥
देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि द्विषो जहि ॥ २३ ॥
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गं संसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥
इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
स तु सप्तशती संख्यावरमाप्नोति सम्पदाम् ॥२५॥"

॥ इति श्री अर्गला स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्री दुर्गा चालीसा

॥ दोहा ॥

जय श्री दुर्गा अम्बिका, जगत्पालिनी मात ।
तुम्हरो चालीसा रचहुँ, कीजै मोहि सनाथ ॥

॥ चौपाई ॥

नमो नमो दुर्गे सुख करनी ।
नमो नमो अम्बे दुःख हरनी ॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी ।
तिहूं लोक फैली उजियारी ॥
शशि ललाट मुख महा विशाला ।
नेत्र लाल भृकुटी विकराला ॥
रूप मातु को अधिक सुहावै ।
दरश करत जन अति सुख पावै ॥

तुम संसार शक्ति लै कीन्हा ।
पालन हेतु अन्न धन दीन्हा ॥
अन्नपूरणा तुम जग पाला ।
तुम्हीं आदि सुन्दरी बाला ॥
प्रलयकाल सब नाशनहारी ।
तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ॥
शिवयोगी तुम्हरे गुण गावें ।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ॥
रूप सरस्वति का तुम धारा ।
दै सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ॥
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा ।
प्रगट भईं बिदारि कें खम्बा ॥
रक्षा करि प्रह्लाद बचायो ।
हिरण्य कशिपु को स्वर्ग पठायो ॥
लक्ष्मीरूप धरयो जग माहीं ।
श्री नारायण अंग समाहीं ॥
क्षीर सिन्धु में करत विलासा ।
दयासिन्धु दीजै मन आसा ॥
हिंगुलाज में तुम्हीं भवानी ।
महिमा अमित न जात बखानी ॥
मातंगी धूमावति माता ।
भुवनेश्वरि बगला सुखदाता ॥
श्री भैरवी जगत की तारिणी ।
छिन्नभाल भव दुःख निवारिणि ॥
लागुर वीर चलत अगवानी ।
केहरि वाहन सोह भवानी ॥

कर महँ खप्पर खंग विराजे ।
जाहि विलोकि काल भय भाजे ॥
कर शोभित तव मातु त्रिशूला ।
जाते उठत शत्रु हिय शूला ॥
नगरकोट में तुम्हीं बिराजत ।
तिहुं लोक में डंका बाजत ॥
शुंभनिशुंभ दैत्य तुम मारे ।
रक्तबीज अगणित संहारे ॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी ।
जेहि अघभार मही अकुलानी ॥
रूप कराल कालिका धारा ।
सैन्य सहित तुम ताहि संहारा ॥
परी भीर संतन पे जब जब ।
भई सहाय मातु तुम तब तब ॥
अमरपुरी अरु बासव लोका ।
तव महिमा सब रहहिं अशोका ॥
बाला में है ज्योति तुम्हारी ।
पूजहिं तुमहिं सदा नर नारी ॥
प्रेमभक्ति युत जो यश गावहिं ।
दुःख दारिद्र निकट नहिं आवहिं ॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई ।
जन्म मरण ते सो छुटि जाई ॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी ।
योग न हो बिनु शक्ति तुम्हारी ॥
शिवशंकर अचरज तप कीन्हो ।
काम क्रोध कहँ बस करि लीन्हो ॥

निशिदिन ध्यान धरहु शंकर को ।
काहु काल नहिं सुमिरो तुम को ॥
शक्ति रूप को मरम न पायो ।
शक्ति गई तब मन पछितायो ॥
शरणागत हुइ कीर्ति बखानी ।
जै जै जै जगदम्ब भवानी ॥
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।
दीन्ह शक्ति नहिं कीन्ह विलम्बा ॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो ।
तुम बिनु कौन हरे दुःख मेरो ॥
आशा तृष्णा निपट सतावै ।
रिपु मूरख मोहिं अति डरपावै ॥
शत्रुनाश की जै महारानी ।
सुमिरहुँ इकचित तुमहिं भवानी ॥
करहु कृपा हे मातु दयाला ।
ऋद्धि सिद्धि दै करहु निहाला ॥
जब लगि जियहुँ दया फल पाऊँ ।
तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ ॥
दुर्गा चालीसा जो गावै ।
सब सुख भोगि परम पद पावै ॥
मोकहुँ निज शरणागत जानी ।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥

॥ दोहा ॥

सिंह वाहिनी मातु तुम, मुद मंगल दातार ।
करहु कृपा जन जानिकै, पर्यो तुम्हारे द्वार ॥

॥ इति श्री दुर्गा चालीसा सम्पूर्णम् ॥

श्री दुर्गा जी की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय दुर्गे गौरी ।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव री ॥ॐ जय॥
मांग सिंदूर बिराजत, टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥ॐ जय॥
कनक समान कलेवर, रक्तांबर राजै ।
रक्तपुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥ॐ जय॥
केहरि वाहन राजत, खड्ग, खप्पर धारी ।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनकी दुःखहारी ॥ॐ जय॥
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योति ॥ॐ जय॥
शुंभ निशुंभ बिदारे, महिषासुर घाती ।
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥ॐ जय॥
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे ॥ॐ जय॥
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ॐ जय॥
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ ।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू ॥ॐ जय॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पति करता ॥ॐ जय॥
भुजा चार अति शोभित, सु-वर-अभयधारी ।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ॥ॐ जय॥
श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावै ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ ॐ जय॥

श्री काली आराधना



राजेश दीक्षित

श्री भैरव उपासना (भैरव पूजा)

प्रत्येक का मूल्य 6/- छह रुपये

श्री शिवजी के प्रति रूप आशुतोष श्री भैरवनाथ जी की पौराणिक कथा तथा पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान एवं स्तुति विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन, आरती, चालीसा आदि का वृहद् संकलन।

सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य 6/- रु० (डाक खर्च अलग)।

छोटी पुस्तक 'श्री भैरव उपासना' मूल्य 1/50 रु० (डाक खर्च अलग)।

श्री शिव उपासना (शिव पूजा)

कैलाशवासी शिवशंकर भूतभावन भगवान आशुतोष शंकर की पौराणिक कथा तथा पूजा आराधना, उपासना, ध्यान एवं स्तुति विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन, आरती, चालीसा आदि का वृहद् संकलन।

सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य 6/- रु० (डाकखर्च अलग)।

छोटी पुस्तक 'श्री शिव आराधना' मूल्य 1/50 रु० (डाकखर्च अलग)।

श्री राम उपासना (राम पूजा)

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी की पौराणिक कथा तथा पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान एवं स्तुति विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन, आरती तथा चालीसा आदि का इस ग्रन्थ में विशद् संकलन है।

सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य 6/- रु० (डाक खर्च अलग)।

छोटी पुस्तक 'श्री राम आराधना' का मूल्य 1/50 (डाक खर्च अलग)।

श्री कृष्ण उपासना (कृष्ण पूजा)

षोडश कलावतार पूर्ण ब्रह्म भगवान श्री कृष्णचन्द की पौराणिक कथा तथा पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान एवं स्तुति विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र कवच, भजन, आरती, चालीसा आदि का विशद् संकलन।

सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य 6/- रु० (डाक खर्च अलग)।

छोटी पुस्तक 'श्री कृष्ण आराधना' का मूल्य 1/50 रु० (डाकखर्च अलग)।

श्री हनुमत् उपासना (हनुमान पूजा)

पवनपुत्र कपिश्रेष्ठ श्री हनुमान बजरंग बली जी की पौराणिक कथा तथा पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान एवं स्तुति विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन, आरती, चालीसा आदि का वृहद् संकलन।

सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक का मूल्य 6/-रु० (डाक खर्च अलग)।

छोटी पुस्तक 'श्री हनुमत् आराधना' मूल्य 1/50 रु० (डाक खर्च अलग)।

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

श्री काली आराधना

[श्री काली-चरित्र, पूजा-उपासना विधि, यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, आरती, चालीसा आदि समन्वित अत्युपयोगी पुस्तक]

राजेश दीक्षित



देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : 265403, 261030, 264191

●
प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

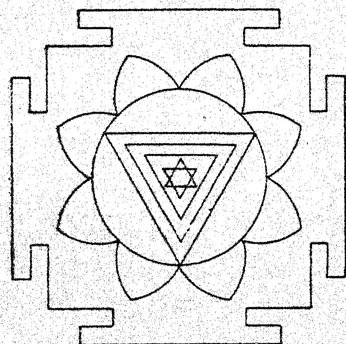
●
लेखक
राजेश दीक्षित

●
मूल्य
स्वदेश में । डेढ़ रुपया
विदेश में । चार शिलिंग

●
मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस
इण्डस्ट्रीयल इस्टेट,
सोनीपत (हरयाणा) भारत

संक्षिप्त श्री काली-चरित्र

एक समय शुम्भ तथा निशुम्भ नामक दो महापराक्रमी असुरों ने अपने बाहुबल द्वारा देवराज इन्द्र को युद्ध में पराजित कर, उनके सभी अधिकारों को अपने हाथ में ले लिया। फलतः इन्द्र सहित अन्य सभी देवता देवलोक से निष्कासित किये जाने पर अपनी प्राण रक्षा



श्री काली पूजन यन्त्र

के लिये इधर-उधर भटकने लगे। कुछ काल बाद देवताओं को यह ध्यान आया कि महिषासुर-मर्दिनी भगवती दुर्गा ने उन्हें पूर्वकाल में यह आश्वासन दिया कि तुम लोग यदि फिर कभी सङ्कट के समय मेरा आह्वान करोगे तो मैं प्रकट होकर तुम्हारे कष्टों को दूर करूंगी। यह स्मरण आते ही देवताओं ने हिमालय पर्वत पर पहुंच कर भगवती महामाया की स्तुति की। उसी समय पार्वतीजी उस स्थान पर आ पहुंचीं और उन्होंने देवताओं से पूछा कि आप लोग यहां किसकी स्तुति कर रहे हैं? इसी प्रश्न के साथ ही पार्वती जी के ही शरीर से एक

तेजोराशि निकली, जिसने एक देवी के स्वरूप में परिवर्तित होकर पार्वती जी से कहा—'ये लोग शुम्भ तथा निशुम्भ से युद्ध में पराजित होकर मेरी ही स्तुति कर रहे हैं।'

पार्वतीजी के शरीर कोश से अम्बिका का प्रादुर्भाव हुआ था, अतः वे समस्त लोकों में 'कौशिकी' नाम से प्रसिद्ध हुई। कौशिकी के प्रकट होने के बाद पार्वती देवी के शरीर का रंग काला हो गया। अतः वे तब से हिमालय पर रहने वाली 'कालिका देवी' के नाम से विख्यात हो गईं।

कौशिकी अम्बिका के प्रकट होने के बाद देवताओं ने उनसे अपनी कथा कही तब देवी ने उन्हें भयमुक्त करने का आश्वासन दिया। उस आश्वासन को पाकर देवता तो अन्य स्थानों पर चले गये, देवी अम्बिका वहीं एक स्थान पर बैठ गईं। इस घटना के कुछ समय बाद शुम्भ-निशुम्भ के चण्ड-मुण्ड नामक दो भृत्य घूमते-घामते उस स्थान पर जा पहुंचे। उन्होंने जब परम मनोहर रूप वाली अम्बिका देवी को वहां बैठे देखा तो अपने स्वामी शुम्भ के पास पहुंचकर यह सूचना दी और कहा कि उन्हें ऐसी परम सुन्दरी के साथ विवाह कर लेना चाहिए।

दूतों की बात सुनकर शुम्भ ने अपने मंत्री को देवी के पास यह प्रस्ताव रखने के लिए भेजा कि वे शुम्भ के साथ विवाह करलें। दूत जब देवी के पास पहुंचा तो देवी ने उसे यह उत्तर दिया कि जो व्यक्ति मुझे युद्ध में पराजित करेगा, मैं उसी के साथ विवाह करूंगी। यदि शुम्भ या निशुम्भ मुझ से विवाह करना चाहते हैं तो उन्हें मुझ से युद्ध करके देखना चाहिए।

देवी के इस उत्तर को सुनकर शुम्भ ने देवी का घमंड चूर्ण करने के लिए अपने सेनापति धूम्र लोचन को भेजा, जिसे देवी ने सेना

सहित पलभर में मार गिराया । तब दैत्यराज ने चण्ड-मुण्ड को भारी सेना के साथ लड़ने के लिए भेजा । जिस समय चण्ड-मुण्ड हिमालय पर्वत पर अपनी सेना लेकर पहुंचे, उस समय उन्हें देख कर क्रोध के कारण देवी का मुंह काला पड़ गया तथा उनकी भौंहें टेढ़ी हो गईं, उसी समय उनकी भौंहों के मध्य भाग से काली देवी प्रकट हुई । काली देवी ने घोर अट्टहास करते हुए पल भर में ही सम्पूर्ण सैनिकों सहित चण्ड-मुण्ड का वध कर दिया, तत्पश्चात् उनके कटे हुए शीशों को अम्बिका देवी के पास ले जाकर यह कहा कि मैंने इन दोनों दुष्टों को मार डाला, अब आप शुम्भ-निशुम्भ का वध कीजिए ।

मार्कण्डेय पुराण तथा अन्य पुराणों में भगवती काली के चरित्र का विस्तृत वर्णन किया गया है । भगवती काली अपने उपासकों की सभी कामनाओं को शीघ्र पूर्ण करती हैं ।

सामान्य-पूजा-विधि

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर, मन, वचन एवं कर्म की शुद्धि सहित पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, शिखा में गांठ बांधें तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें । फिर इष्ट देव की मूर्ति, चित्र अथवा प्रतीक को चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर अपने अग्रभाग में स्थापित करे । इस पुस्तक के पांचवें पृष्ठ पर जिस यंत्र को प्रकाशित किया गया है उसे आटे, रोली, हल्दी अथवा चावलों द्वारा देव मूर्ति के सम्मुख चित्रित करें । यदि इस यन्त्र को स्वर्ण, रौप्य अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा लिया जाय तो उसे बारम्बार उपयोग में भी लाया जा सकता है । देव-पूजन के साथ ही यन्त्र-पूजन भी करना चाहिए ।

जल पूर्ण पात्र तथा पूजन सामग्री को संकलित कर अपने आसन

के समीप ही रख लें तथा इष्टदेवी की मूर्ति के समीप शुद्ध घृत का दीपक प्रज्ज्वलित कर, धूप बत्ती, अगर बत्ती आदि जला दें।

सर्वप्रथम 'स्वस्ति वाचन' का पाठ करें। फिर पवित्रीकरण, आचमन, हस्त प्रक्षालन तथा भूत-शुद्धि की क्रियाएं सम्पन्न कर पहले विघ्न-विनाशन आदि पूज्य श्री गणेश जी का ध्यान करें तदुपरान्त 'संकल्प-वाक्य' का उच्चारण करते हुए नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा इष्ट देवी का ध्यान तथा यथा-विधि पूजन करें।

पूजा की समाप्ति पर स्तोत्र, कवच, चालीसा आदि का पाठ एवं आरती, प्रदक्षिणा आदि कृत्य करने चाहिये।

स्वस्ति-वाचन

"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाःविश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु ॥१॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षं पयोधाः। पयःस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥३॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रो देवता दित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥४॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः वनस्पतयःशान्तिरेव शान्तिःसामाशान्तिरेधि। ॐविश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ शान्तिः ॥५॥ भवतु ॥"

उक्त 'स्वस्ति वाचन' में जहाँ-जहां ˘ इस प्रकार का चिह्न है, वहाँ 'ग्वं' की भांति उच्चारण करना चाहिये । 'स्वस्ति वाचन' के बाद नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जलसे आचमन करें। तथा अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़कें, तत्पश्चात् दोनों हाथों को धो लें। आचमन करते तथा जल छिड़कते समय **"ओ३म् केशवाय नमः स्वाहा। ओ३म् नारायणाय नमः स्वाहा। ओ३म् माधवाय नमः स्वाहा।"** इन मन्त्रों का उच्चारण करते जाना चाहिये।

पवित्रीकरण का मन्त्र

"ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार जल छिड़ककर आचमन करें तथा हाथ धो डालें।

'पवित्रीकरण' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भूत-शुद्धि' करें।

भूत-शुद्धि का मन्त्र

"ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥"

'भूत-शुद्धि' के उपरान्त दायें हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प तथा जल लेकर अग्रलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए विघ्न-विनाशन **'श्री गणेश जी का ध्यान'** करें—

श्री गणेश ध्यान मन्त्र

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नतस्य न जायते ।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।।"

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर, हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प आदि को श्रीगणेश जी के समीप स्थापित कर, पुनः दायें हाथ में तिल, कुश, जल तथा यज्ञोपवीत लेकर नीचे लिखे 'संकल्प वाक्य' का उच्चारण करें ।

संकल्प वाक्य

"हरिः ॐ तत्सत् । नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे षष्टि-संवत्सराणां मध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने,

'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' वासरे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये चन्द्रे भौमे बुधे वृहस्पतौ शुक्रे शनौ राहौ केतौ एवं गुण विशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मादि) ऽहं धर्मार्थ काम मोक्ष हेतवे श्रीगणपति पूजन महं करिष्ये ।"

उक्त संकल्प वाक्य में जहां-जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां क्रमशः विद्यमान, संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिये । ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', वैश्य को 'गुप्तोऽहं' तथा शूद्र को 'दासोऽहं' शब्द का उच्चारण करना चाहिये ।

'संकल्प-वाक्य' के पश्चात् सर्व प्रथम नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपनी इष्ट देवी श्री भगवती कालिकाजी का 'ध्यान' करना चाहिए—

ध्यान के मन्त्र

"या कालिका रोगहरा सुवंद्या
वैद्यैः समस्तै र्व्यहारदक्षैः
जनैर्जनानां भयहारिणी च
सा देवमाता मयि सौख्यदात्री ॥ १ ॥

या माया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्ड विमर्दिनी ।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदाभव ॥ २ ॥
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेशवन्द्याभवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥३॥
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वामीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ४ ॥
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतिधियां हृदयेषु बुद्धि ।
श्रद्धां सतां कुलजन प्रभवश्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥५॥"

आवाहन का मन्त्र

"आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्वनिषूदिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये ॥"

उक्त मन्त्र द्वारा श्री भगवती काली का 'आवाहन' करने के पश्चात् उन्हें 'आसन' प्रदान करने के हेतु अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

आसन का मन्त्र

"अनेक रत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'आसन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पाद्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

पाद्य का मन्त्र

"गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाऽऽहृतम् ।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अर्घ्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

अर्घ्य का मन्त्र

"गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया ।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा ॥"

'अर्घ्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमनीय' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

आचमन का मन्त्र

"आचम्यतां त्वया देवि भक्तिं मेह्यचलां कुरु ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'स्नान' के हेतु जल का निक्षेप करें—

स्नानीय जल का मन्त्र

"जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम् ।
स्नापयामि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादिफलप्रदाम् ॥"

'स्नानीय-जल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पंचामृत-स्नान' करायें—

पञ्चामृत-स्नान का मन्त्र

"पयोदधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम् ।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे ॥"

'पंचामृत-स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'शुद्धोदक-स्नान' करायें—

शुद्धोदक स्नान का मन्त्र

"परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये ।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमाश ते ॥"

'शुद्धोदक स्नान' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'वस्त्र' समर्पित करें—

वस्त्र का मन्त्र

"वस्त्रं च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् ।
मया निवेदतं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ।।"

'वस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'उपवस्त्र' समर्पित करें—

उपवस्त्र का मंत्र

"यामाश्रित्य महामाया जगतसम्मोहिनी सदा ।
तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ।।"

'उपवस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'मधुपर्क' समर्पित करें—

मधुपर्क का मन्त्र

"दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम् ।
मधु पर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने ।।"

'मधुपर्क' के पश्चात् निम्नखिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'गन्ध' समर्पित करें—

गन्ध का मन्त्र

"परमानन्द सौभाग्य परिपूर्ण दिगन्तरे ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि ।।"

'गन्ध' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'कुंकुम' समर्पित करें—

कुंकुम का मन्त्र

"कुंकुमंकान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥"

'कुंकम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आभूषण' समर्पित करें—

आभूषण का मंत्र

"स्वभाव सुन्दराङ्गार्थैं नानाशक्त्याश्रिते शिवे ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥"

'आभूषण' के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सिन्दूर' समर्पित करें—

सिन्दूर का मन्त्र

"सिन्दूरमरुणाभासं जयाकुसुमसंनिभम् ।
पूजितासि मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥"

'सिन्दूर' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'काजल' समर्पित करें—

'सिन्दूर' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'काजल' समर्पित करें—

कज्जल का मन्त्र

"चक्षुभ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारिके ।
कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'काजल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सौभाग्य सूत्र' समर्पित करें—

सौभाग्य सूत्र का मन्त्र

"सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणि संयुते ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ॥"

'सौभाग्य सूत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'गन्ध द्रव्य' समर्पित करें—

गन्ध द्रव्य का मन्त्र

"चन्दनागुरु कर्पूर कुंकुमं रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपये ॥"

'गन्ध द्रव्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अक्षत' (चावल) समर्पित करें—

अक्षत का मन्त्र

"रञ्जिताः कुंकुमौघेन अक्षताश्चापि शोभनाः ।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्नाभव पार्वती ॥"

'अक्षत' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्प' समर्पित करें।

पुष्प का मन्त्र

"मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च ।
जाती चम्पक पुष्पाणि गृहणेमानि शोभने ॥"

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पमाला' समर्पित करें—

पुष्पमाला का मंत्र

"सुरभिपुष्पनिचयैर्ग्रथितां शुभ मालिकाम् ।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'पुष्पमाला' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'बिल्वपत्र' समर्पित करें—

बिल्वपत्र का मंत्र

"अमृतोद्भव श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा ।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥"

'बिल्वपत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'धूप' समर्पित करें—

धूप का मन्त्र

"दशाङ्ग गुग्गुलं धूपं चन्दना गुरुसंयुतम् ।
समर्पितं मयाभक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम् ॥"

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए दीपक' प्रदर्शित करें—

दीपक का मन्त्र

"घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम् ।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥"

'दीपक' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "नैवेद्य' समर्पित करें—

नैवेद्य का मन्त्र

"अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भि समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्यचलां कुरु ॥"

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "ऋतुफल' समर्पित करें—

ऋतु फल का मंत्र

"द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम् ।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥"

'ऋतु फल' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "आचमन' के लिए जल समर्पित करें—

आचमन का मन्त्र

"कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनमम्बिके ।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके ॥"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अखण्ड ऋतु फल' समर्पित करें—

अखण्ड ऋतु फल का मन्त्र

"नारिकेलं च नारङ्गं कलिङ्गं मञ्चिरं तथा ।
उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम् ॥"

'अखण्ड ऋतु फल' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ताम्बूल' समर्पित करें—

ताम्बूल का मन्त्र

"एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः सुष्ठुवासिताम् ।
वीटिकां मुखवासार्थं मर्पयामि सुरेश्वरि ।।"

'ताम्बूल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दक्षिणा' समर्पित करें—

दक्षिणा का मन्त्र

"पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि ।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्।।"

'दक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नीराजन' आरती करें—

नीराजन का मंत्र

"नीराजनं सुमङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम् ।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि नमोऽस्तुते ।।"

'नीराजन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुये 'प्रदक्षिणा' करें—

प्रदक्षिणा का मन्त्र

"नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले ।।"

'प्रदक्षिणा' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दण्डवत्-प्रणाम' निवेदित करें—

प्रणाम का मंत्र

"नमः सर्वहितार्थायै जगदाधार हेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मयाकृतः ॥"

'प्रणाम' के पश्चात् आरती, स्तोत्र आदि का पाठ करें। अन्त में निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'विसर्जन' करें—

विसर्जन का मन्त्र

"इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रजस्थान मनुत्तमम् ॥"

॥ इति संक्षिप्त पूजन-विधि ॥

श्री काली शतनाम स्तोत्रम्

॥ शिव उवाच ॥

ॐ करालवदना काली कामिनी कमलालया ।
क्रियावती कोटराक्षी कामक्षा कामसुन्दरी ॥ १ ॥
कपोला च कराला च काशी कात्यायनी कुहूः ।
कङ्काली कालदमनी करुणा कमलार्चिता ॥ २ ॥
कादम्बरी कालहरा कौतुकी कारणप्रिया ।
कृष्णा कृष्णप्रिया कृष्णपूजिता कृष्णवल्लभा ॥ ३ ॥
कृष्णाऽपराजिता कृष्णप्रिया च कृष्णरूपिणी ।
कालिका कालरात्रिश्च कुलजा कुलपण्डिता ॥ ४ ॥
कुलधर्मप्रिया कामा काम्यकर्म विभूषिता ।
कुलप्रिया कुलरता कुलीन परिपूजिता ॥ ५ ॥

कुलज्ञा कमला पूज्या कैलाशनगभूषिता ।
कुटजा केशिनी कामा कायदा कामपण्डिता ॥ ६ ॥
करालास्या च कन्दर्पकामिनी कामशोभिता ।
केलिप्रिया केलिरता केलिनी केलिभूषिता ॥ ७ ॥
केशवस्य प्रिया केशा काश्मीरा केशवार्चिता ।
कामेश्वरी कामरूपा कामदानविभूषिता ॥ ८ ॥
कामहंत्री कूर्ममांसप्रिया कूर्मादि पूजिता ।
केलिनी करकी कारा करकूर्म्म निषेविनी ॥ ९ ॥
कटकेशरमध्यस्था कटकी कटकार्चिता ।
कटप्रिया कटरता कटकूर्म्म निषेविनी ॥ १० ॥
कुमारी पूजनरता कुमारीजनसेविता ।
कुलाचार प्रिया कौलप्रिया कुल निषेविनी ॥ ११ ॥
कुलीना कुलधर्मज्ञा कुलभीति-विमर्दिनी ।
कामधर्मप्रिया कामा नित्याकामस्वरूपिणी ॥ १२ ॥
कामरूपा कामहरा काममन्दिरपूजिता ।
कामागारस्वरूपा च कामाख्या कामभूषिता ॥ १३ ॥
क्रियाभक्तिरता कामा काञ्चिनी चैव कायदा ।
कोलपुष्पाम्बरा कोला निष्कोला कलहान्तका ॥ १४ ॥
कौषिकी केतिकी कुम्भी कुन्तिला दिविभूषिता ।
इत्येवं शृणु चार्व्वाङ्गि रहस्यं सर्व मङ्गलम् ॥ १५ ॥
यः पठेत् परया भक्त्या स शिवो नाऽत्र संशयः ।
शतनामप्रसादेन किं न सिध्यन्ति भूतले ॥ १६ ॥
ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च वासवाद्या दिवोकसः ।
सहस्रपठनाद् वि सर्वे च विगतज्वराः ॥ १७ ॥
नास्ति नास्ति महामाये तन्त्रमध्ये कथञ्चन ।
कृपया च विना देवि विना भक्त्या महेश्वरी ॥ १८ ॥

प्रसन्ना स्यात् करालास्या स्तवपाठाद्दिगम्बरा ।
सत्यं वच्मि महेशानि अतः परतरं न हि ॥ १९ ॥
न गोलोके न वैकुण्ठे न च कैलाश मन्दिरे ।
अतः परतरा विद्या स्तोत्रं कवचमेव च ॥ २० ॥
त्रिलोकेषु जगद्धात्री नास्यि नास्ति कदाचन ।
रात्रावपि दिवाभागे सन्ध्यायां वा सुरेश्वरी ॥ २१ ॥
प्रजपेत् भक्तिभावेन रहस्यं स्तवमुत्तमम् ।
शतनामप्रसादेन मन्त्रसिद्धिः प्रजायेत ॥ २२ ॥
कुजवारे चतुर्दश्यां निशाभागे पठेत्तु यः ।
स कृती सर्वशास्त्रज्ञः स कुलीनः सदा शुचिः ॥ २३ ॥
सकुलज्ञः सकालज्ञः स धर्म्मज्ञो महीतले ।
प्राप्नोति देवदेवेशि सत्यं परम सुन्दरी ॥ २४ ॥
स्तवपाठाद् वरारोहे किं न सिध्यन्ति भूतले ।
आणिमाद्यष्टसिद्धिश्च भवत्येव न संशयः ॥ २५ ॥
रात्रौ बिल्वतलेऽश्वत्थमूले ऽपराजितातले ।
प्रपठेत् कालिकास्तोत्रं यथाभक्त्या महेश्वरी ॥
शतवार प्रपण्नान्मत्रसिद्धि भवेद्ध्रुवम् ॥ २६ ॥

॥ इति श्री कालीशत नामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री काली कवचम्

कैलास शिखरारूढं शङ्करं वरदं शिवम् ।
देवी प्रच्छ सर्वज्ञ सर्वदेवमहेश्वरम् ॥ १ ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

भगवान् ! देवदेवेश ! देवानां भोगद प्रभो ।
प्रब्रूहि मे महादेव ! गोप्यमद्यापियत् प्रभो ॥ २ ॥

शत्रूणांयेन नाशः स्यादात्मेना रक्षणं भवेत् ।
परमैश्वर्य्यमतुलं लभेद्येन हि तदवद ॥ ३ ॥

॥ भैरव उवाच ॥

वक्ष्यामि ते महादेवि सर्वधर्मविदां वरे ।
अद्भुतं कवचं देव्याः सर्वकामप्रसाधकम् ॥ ४ ॥
विशेषतः शत्रुनाशं सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
सर्वारिष्टप्रशमनभिचार विनाशनम् ॥ ५ ॥
सुखदं भोगदं चैव वशीकरणमुत्तमम् ।
शत्रुसंघाक्षयंयान्ति भवन्ति व्याधिपीडितः
दुःखिनो ज्वरिणश्चैव स्वानिष्ट प्रहतास्तथा ॥ ६ ॥

ॐ अस्यश्री काली कवचस्य भैरव ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्री कालिका देवता । ह्रीं बीजम् । हूं शक्तिः । क्लीं कीलकम् । शत्रुसंघविनाशनार्थे जपे पाठे विनियोगः ।

॥ अथ न्यासः ॥

भैरव ऋषये नमः शिरसि ।
गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे ।
श्रीकालिका देवतायै नमः हृदि ।
ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये ।
हूं शक्तये नमः पादयोः ।
क्लीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ।

एवं करादि न्यासः ।

क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः । इति करषडङ्गन्यासादिकं कुर्यात ॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम् ।
चतुर्भुजां लसज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ॥ ७ ॥
नीलोत्पलसमप्रख्यां शत्रुसंघ विदारिणीम् ।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥ ८ ॥
बिभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम् ।
अट्टाट्टहास निरतां सर्वदा च दिगम्बराम् ॥ ९ ॥
शवासनस्थितां देवीं मुण्डमालाविभूषणाम् ।
इतिध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवचं पठेत् ॥ १० ॥
कालिका घोररूपाया सर्वकामफलप्रदा ।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे ॥ ११ ॥
ॐ ह्रीं स्वरूपिणी चैव ह्रां ह्रीं ह्रूं रूपिणी तथा ।
ह्रां ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपा च सदा शत्रून् प्रणाशय ॥१२॥
श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबन्ध विमोचिनी ।
ह्रां ह्रीं काली रिपूंश्चैव सा हन्तु मम सर्वदा ॥१३॥
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः ।
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शङ्करप्रियाम् ॥१४॥
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका ।
कौमार्य्यैन्द्री च चामुण्डा खादन्तु मम विद्विषाः ॥१५॥
सुरेश्वरी घोररूपा चण्डमुण्ड विनाशिनी ।
मुण्डमालाधृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा ॥ १६ ॥

॥ अथ मन्त्र ॥

"ह्रां ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्रे रुधिरप्रिये रुधिरपूर्णवक्त्रे रुधिरावृतस्तनि मम सर्वशत्रून् खादय खादय हिंस हिंस

मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय विद्रावय विद्रावय शोषय शोषय स्वाहा। रां रीं कारायै मदीपशत्रून् मर्दय स्वाहा। अकं जय जय किर किर किट किट मर्द मर्द मोहय मोहय हर हर मम रिपून ध्वंस ध्वंस भक्ष भक्ष त्रोटय त्रोटय यातुधानिका चामुण्डा सर्वजनान् राजपुरुषान् स्त्रियो मम वश्यं कुरु कुरु अश्वान् गजान् द्रिव्यकामिनिपुत्रान् राज्याश्रयं देहि देहि नूतनं नूतनं धान्यं धनं यक्षं रक्षां क्षां क्षीं क्षं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा ॥ इति मन्त्रः ॥

॥ अथ फलम् ॥

इत्येतत् कवचं पुण्यं कथितं शम्भुना पुरा।
ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति वैरिणः ॥ १७ ॥
वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिताश्च भवन्ति हि।
धनहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा ॥ १८ ॥
सहस्रपठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत् तथा।
ततः कार्य्याणि सिध्यन्ति तथा शङ्करभाषितम् ॥ १९ ॥
श्मशानाङ्गारमादाय चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः।
पादेदकेन पिष्ट्वा च लिखेल्लोहशलाकया ॥ २० ॥
भूमौ शत्रून् हीनरूपानुत्तराशिरसस्तथा।
हस्तंदत्त्वा तद्धृदये कवचं तु स्वयं पठेत् ॥ २१ ॥
प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा वै तथा मन्त्रेण मन्त्रवित्।
हन्यादस्त्रप्रहारेण शत्रोश्च कण्ठमक्षयम् ॥ २२ ॥
ज्वलदङ्गारलेपेन भवन्ति ज्वरिताभृशम्।
प्रोक्षणैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम् ॥ २३ ॥
वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम्।
परमैश्वर्य्यदं चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धिदम् ॥ २४ ॥

प्रभातसमये चैव पूजाकाले प्रयत्नतः ।
सायंकाले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ २५ ॥
शत्रुरुच्चाटनं याति देशाद्वै विच्युतो भवेत् ।
पश्चात् किङ्करतामेति सत्यं सत्यं न संशयः ॥ २६ ॥
शत्रुनाशकरं देवि ! सर्वसम्पत्करं शुभम् ।
सर्व देवस्तुते देवि कालिके ! त्वां नमाम्यहम्॥ २७ ॥

॥ इति श्री कालिका कवचं सम्पूर्णम् ॥

महाकाली का मंत्र

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकाली क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।"

भद्रकाली का मंत्र

"क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्रकाल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।"

श्री काली चालीसा

॥ दोहा ॥

जय जय सीताराम के मध्य वासिनी अम्ब ।
देहु दरस जगदम्ब अब, करहु न मातु विलम्ब ॥

॥ चौपाई ॥

जय काली कंकाल मालिनी ।
जय मंगला महाकपालिनी ॥
रक्तबीज वध कारिणि माता ।
सदा भक्तजन की सुखदाता ॥
शिरोमालिका भूषित अंगे ।
जय काली मधु मद्य तरंगे ॥

हर हृदयारविन्द सुविलासिनि ।
जय जगदम्ब सकल दुखनासिनि ॥
ह्रीं काली श्री महाकराली ।
क्रीं कल्याणी दक्षिणकाली ॥
कलावती जय जय विद्यावति ।
जय तारासुन्दरी महामति ॥
देहु सुबुद्धि हरहु दुख द्वन्दा ।
काटहु स्कल जगत के फन्दा ।
जय ॐ कारे जय हुंकारे ।
महाशक्ति जय अपरम्पारे ॥
कमला कलियुग दर्प बिनासिनि ।
सदाभक्तजन की भयनासिनी ॥
अब जगदम्ब न देर लगावहु ।
दुख दरिद्र सब मोर हटावहु ॥
जयति कराल काल की माता ।
कालानल समान द्युतिगाता ॥
जय शङ्करी सुरेशि सनातनि ।
कोटि सिद्धि कविमातु पुरातनि ॥
कर्पादनी कलि कलमष मोचनि ।
जय विकसित नव नलिन विलोचनि ॥
आनन्दा आनन्द निधाना ।
देहु मातु मोहि निर्मल ज्ञाना ॥
करुणामृत सागरा कृपामयि ।
होहु दुष्ट जन कहँ तुम निर्दयी ॥
सकल जीव तोहि परम पियारे ।
सकल विश्व तव रहहि अधारे ॥

प्रलय काल मँह नर्त्तन कारिणि ।
जग जननी सब जग की पालिनि ॥
महोदरी माहेश्वरि माया ।
हिमगिरि सुता विश्व की छाया ॥
स्वच्छच्छरद मरद धुनिमांहीं ।
गरजत तुही और कोउ नांहीं ॥
स्फुरित मणिगणाकार प्रताने ।
तारागण तू व्योम विताने ॥
श्रीधाने सन्तन हितकारिणि ।
अग्निपाणि तुम दुष्ट विदारिणि ॥
धूम्र विलोचन प्राण विमोचिनि ।
शुम्भ निशुम्भ मथनि वर लोचनि ॥
सहसभुजी सरोरुह मालिनि ।
चामुण्डे मरघट की वासिनि ॥
खप्पर मध्य सुशोणित साजी ।
संहारेउ महिषासुर पाजी ॥
अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका ।
सब एके तुम आदि कालिका ॥
अजा एकरूपा बहुरूपा ।
अकथ चरित्रा शक्ति अनूपा ॥
कलकत्ता के दक्षिण द्वारे ।
मूरति तोरि महेशि अपारे ॥
कादम्बरी पानरत श्यामा ।
जयमातंगि अनूप अकामा ॥
कमलासन वासिनि कमलायनि ।
जय जय श्यामा जय यामायनि ॥

रासरते नवरसे प्रकृति हे।
जयति भक्त उर कुमति सुमति हे ॥
जयति ब्रह्म शिव विष्णु कामदा।
जयति अहिंसा धर्म जन्मदा ॥
जलथल नभ मण्डल में व्यापिनि।
सौदामिनी मध्य आलापिनि ॥
झननन तच्छुमरिन रिन नादिनि।
जय सरस्वती वीणा वादिनी ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं चामुण्डा।
कलित कण्ठ शोभित नरमुण्डा ॥
जय ब्रह्माण्ड सिद्ध कवि माता।
कामाख्या काली विख्याता ॥
हिंगुलाज विन्ध्याचल बासिनि।
अट्टहासिनी अघगन नासिनि ॥
कहँ लगि अस्तुति करहुँ अखण्डे।
तू ब्रह्माण्ड शक्तिजित चण्डे ॥
करहु कृपा सब पै जगदम्बा।
रहहिं निशंक तोर अवलम्बा।
चतुर्भुजी काली तुम श्यामा।
रूप तुम्हार महा अभिरामा ॥
खड्ग और खप्पर कर सोहत।
सुरनर मुनि सबको मन मोहत ॥
तुम्हरी कृपा पाव जो कोई।
रोग शौक नहि ता कहँ होई ॥
जो यह पाठ करै चालीसा।
तापर कृपा करहिं गौरीशा ॥

॥ दोहा ॥

जय कपालिनी जय शिवा, जय जय जय जगदम्ब ।
सदाभक्तजन केरि दुख, हरहु मातु अविलम्ब ॥

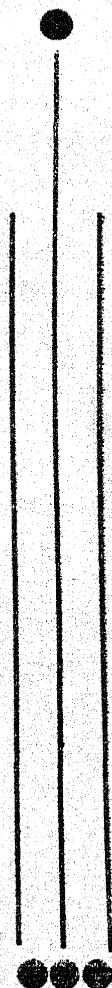
॥ इति श्री काली चालोसा सम्पूर्णम् ॥

श्री काली जी की आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े ।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे ॥
सुन जगदम्बा ! कर न बिलम्बा, सन्तन के भंडार भरे ।
संतन प्रतिपाली, सदाखुशाली, जैकाली कल्याण करे ॥१॥
बुद्धि विधाता, तू जगमाता, मेरा कारज सिद्ध करे ।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे ॥
जब जब भीर पड़ी भक्तन पर, तब तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करे ॥२॥
बार बार तैं सब जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे ।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या हो भोग करे ॥
संतन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करे ।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करे ॥३॥
ब्रह्मा विष्णु महेश सहसफन, लिए भेंट तेरे द्वार खड़े ।
अटल सिंहासन बैठीमाता, सिर सोने का छत्र धरे ॥
हुए शनिश्चर कुंकुमवरणी, जबलांगुर पर हुकुम करे ।
संनन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करै ॥४॥

कुपित होइ कर दानव मारे, चण्डमुण्ड सब चूर करे।
खड्ग त्रिशूल हाथ में लेकर, रक्तबीज को भस्म करे ॥
शुंभ निशुंभ पछाड़े माता, महिषासुर को पकड़ दरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करे ॥५॥
जब तुम दयारूप को धारो, पल में संकट दूर करे।
आदितवार आदि का राजत, अपने जन का कष्ट हरे ॥
सौम्यस्वभाव धरा मेरी माता, जन की अरज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करे ॥६॥
सिंहपीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साधु चर भेंट धरे ॥
ध्यान चरत ही श्री काली को, चार पदारथ हाथ परे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करे ॥७॥
ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे, शिवशंकर जी ध्यान धरें।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चँवर कुबेर डुलाय करे ॥
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली, जैकाली कल्याण करे ॥८॥

श्री गायत्री आराधना





राजेश दीक्षित

श्री गायत्री आराधना

[श्री गायत्री-रहस्य, पूजा-उपासना विधि, यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, आरती, चालीसा आदि समन्वित अत्युपयोगी पुस्तक]

●

राजेश दीक्षित



देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : 265403, 264191, 261030


प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६


लेखक
राजेश दीक्षित


मूल्य
स्वदेश में : डेढ़ रुपया
विदेश में : चार शिलिंग

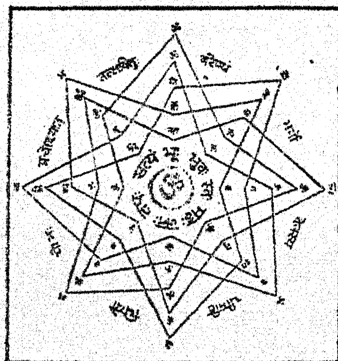

मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस,
सोनीपत (निकट दिल्ली) हरयाणा

प्रत्येक का मूल्य ६.००

१. गणेश उपासना
२. लक्ष्मी उपासना
३. राम उपासना
४. कृष्ण उपासना
५. हनुमान उपासना
६. दुर्गा उपासना
७. विष्णु उपासना
८. शिव उपासना
९. काली उपासना
१०. भैरव उपासना
११. गायत्री उपासना
१२. सरस्वती उपासना
१३. ओ३म् उपासना
१४. वैष्णो उपासना
१५. गंगा उपासना
१६. गौरापार्वतीउपासना
१७. अष्टदेव आराधना
१८. अष्टदेवी आराधना
१९. कबीर उपासना
२०. मातभवानी शक्ति
२१. गायत्री शक्ति
२२. योग शक्ति
२३. साधना शक्ति
२४. ओ३म शक्ति
२५. दुर्गा शक्ति
२६. देवी-देव की आरती
२७ बड़ा भक्ति सागर
२८ हनुमान जीवन-चरित्र
२९. प्राचीन ब्रह्मज्ञान भजन
३०. १२ महीने व्रत-त्यौहार
३१. पंचतन्त्र
३२. शिव लीलामृत
३३. सरल भागवत
३४. दृष्टान्त सागर
३५. दुर्गा भाषा

संक्षिप्त श्री गायत्री रहस्य

प्रत्येक जाति, सम्प्रदाय तथा धर्म में उपासना का कोई-न-कोई रूप प्रचलित पाया जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि उपासना के बिना कोई भी सम्प्रदाय आत्मोन्नति नहीं कर सकता, उपासना ही मनुष्य की आत्मा का मुख्य आहार है। आत्म सन्तोष दायिनी



श्री गायत्री पूजन यन्त्र

उपासनाओं में गायत्री-उपासना का शीर्ष स्थान है। वेदों में गायत्री शब्द का अर्थ इस प्रकार किया गया है—

"सा हैषा गयांस्तत्रे। प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे तद् गयांस्तत्रे तस्माद् गायत्री नाम।"

(शतपथ ब्राह्मण १४/८/१५/७)

अर्थात्—'गायत्री ने गयों (प्राणों) की रक्षा की थी। प्राण 'गय' कहे जाते हैं। गायत्री ने उन प्राणों (गयों) की रक्षा की थी, इसलिए इसका नाम 'गायत्री' पड़ा।'

पुराणादि स्मृति शास्त्रों में 'गायत्री' शब्द की एक अन्य निरुक्ति मिलती है—

"प्रतिग्रहान्नदोषाच्च पातकादुपपातकात् ।
गायत्री प्रोच्यते तस्माद् गायन्तं त्रायते यतः ॥"

अर्थात्—'यह गायन (जप) करने वाले द्विज का प्रतिग्रह दोष तथा अन्नदोष से एवं पातक तथा उपपातकों से त्राण करती है, इसलिए 'गायत्री' कही जाती है ।'

गायत्री, सावित्री, ब्रह्मगायत्री, वेद माता, गुरुमन्त्र ये सभी गायत्री के ही पर्य्याय हैं ।

गायत्री-मन्त्र का गायत्री-छन्द है, अतः इसे 'गायत्री-मन्त्र' कहा जाता है । सविता (सूर्य) से सम्बन्ध होने के कारण इसे 'सावित्री' कहते हैं । ब्रह्म (वेद) से सम्बन्ध रखने एवं ब्राह्मणों की उपास्या होने के कारण इसे 'ब्रह्मगायत्री' कहा जाता है । यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार के समय द्विज-बालक को गुरु द्वारा गायत्री-मन्त्र का ही उपदेश किया जाता है, अतः इसे 'गुरु-मन्त्र' की संज्ञा दी गई है । वेदों की जननी होने के कारण ही इसे 'वेदमाता' के नाम से सम्बोधित किया जाता है ।

गायत्री त्रि-शक्ति स्वरूपिणी है, अतःतीन काल की सन्ध्योपासना में गायत्री का तीन अलग-अलग रूपों में ध्यान किया जाता है । पूर्वाह्ण में 'गायत्री', मध्याह्ण में 'सावित्री' तथा सायाह्ण में 'सरस्वती' तथा तीनों कालों में 'संध्या' के नाम से इसे पुकारा जाता है । गायत्री, सावित्री और सरस्वती ये तीनों नाम गायत्री नाम के ही वाचक हैं ।

गायत्री की उपासना परमब्रह्म परमात्मा की उपासना है । गायत्री परब्रह्मस्वरूपा है । यह निर्वाण परमपद को देने वाली है । ब्रह्मतेजो-

मयी शक्ति है तथा परब्रह्म ही इसका अधिष्ठातृ देवता है। गायत्री को 'परादेवता' कहा गया है, अस्तु चित्स्वरूपा गायत्री साक्षात् ब्रह्म ही है।

गायत्री की उपासना से मनुष्य में सद्बुद्धि, सद्विचार तथा सद्धर्म का उदय होता है। गायत्री का उपासक श्रद्धा, भक्ति तथा ईश्वर-विश्वास से परिपूर्ण हो जाता है। वह जीवन पर्यन्त सर्वविधि सुखों का उपभोग करने के बाद अन्त में शाश्वत परमपद को प्राप्त होता है, अतः गायत्री की उपासना करना परम कर्तव्य है।

सामान्य पूजा-विधि

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर, मन, वचन एवं कर्म की शुद्धि सहित पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, शिखा में गांठ बांधें तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें। फिर इष्ट देवी की मूर्ति, चित्र अथवा प्रतीक को चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर, अपने अग्रभाग में स्थापित करें। इस पुस्तक के पांचवें पृष्ठ पर जिस यन्त्र को प्रकाशित किया गया है, उसे गेहूं के आटे, रोली, हल्दी तथा चावलों के द्वारा देवी की मूर्ति के सम्मुख चित्रित करें। यदि इस यन्त्र को स्वर्ण, रौप्य अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा लिया जाय तो उसे बारम्बार उपयोग में भी लाया जा सकता है। देवी-पूजन के साथ ही यन्त्र-पूजन भी करना चाहिये।

जल पूर्ण पात्र तथा पूजन-सामग्री को संकलित करके अपने आसन के समीप ही रख लें तथा इष्ट देवी की मूर्ति के समीप शुद्ध घृत का दीपक प्रज्ज्वलित कर, धूप बत्ती, अगर बत्ती आदि जला दें।

सर्व प्रथम 'स्वस्ति वाचन' का पाठ करें। फिर पवित्रीकरण, आच-

धन, हस्त-प्रक्षालन तथा भूत शुद्धि की क्रियाएं सम्पन्न कर, पहले विघ्न-विनाशन आदि पूज्य श्री गणेश जी का ध्यान करें, तदुपरान्त 'संकल्प-वाक्य' का उच्चारण करके नीचे लिखे अनुसार मन्त्रों द्वारा इष्ट देवी का ध्यान तथा यथाविधि पूजन करें।

पूजा की समाप्ति पर स्तोत्र, कवच, चालीसा आदि का पाठ एवं आरती, प्रदक्षिणा आदि कृत्य करने चाहिए।

स्वस्ति वाचन

"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाः विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥३॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रोदेवता दित्यादेवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ४ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथ्वीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्वं ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि। ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव। शान्तिः ॥ ५ ॥भवतु॥

उक्त 'स्वस्ति वाचन' को जहां-जहां ँ इस प्रकार का चिह्न है, वहां 'ग्वं' की भांति उच्चारण करना चाहिए । 'स्वस्ति वाचन' के बाद आगे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल से आचमन करें तथा अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़कें । तत्पश्चात् दोनों हाथों को धो लें । आचमन करते तथा जल छिड़कते समय **'ओ३म् केशवाय नमः स्वाहा । ओ३म् नारायणाय नमः स्वाहा । ओ३म् माधवाय नमः स्वाहा ।'** इन मन्त्रों का उच्चारण करते जाना चाहिए ।

पवित्रीकरण का मन्त्र

"ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार जल छिड़क कर आचमन करें तथा हाथ धो डालें ।

'पवित्रीकरण' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भूत शुद्धि' करें—

भूत शुद्धि का मंत्र

"ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता ।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥"

'भूत शुद्धि' के उपरान्त दाएं हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प तथा जल

लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए विघ्न विनाशन 'श्री गणेश जी का ध्यान' करें—

श्री गणेश ध्यान मंत्र

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छ्रुणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्न तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥"

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर हाथ के दूर्वा, अक्षत, पुष्प आदि को श्री गणेश जी के समीप स्थापित कर पुनः दाएं हाथ में तिल, कुश, जल, अक्षत तथा यज्ञोपवीत लेकर नीचे लिखे 'संकल्प वाक्य' का उच्चारण करें—

सङ्कल्प वाक्य

"हरिः ॐ तत्सत् । नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैव-

स्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे षष्टिसंवत्सराणांमध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये, चन्द्रे, भौमे, बुधे, वृहस्पतौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुणविशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मा आदि) ऽहं धर्मार्थकाममोक्षहेतवे श्रीगणपत्यादि श्री कृष्णचन्द्रस्य पूजनमहं करिष्ये।"

उक्त 'संकल्प वाक्य' में जहां-जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां क्रमशः विद्यमान संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिये। ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', 'वैश्य को गुप्तोऽहं' तथा शूद्र को 'दासोऽहं,' शब्द का उच्चारण करना चाहिये।

'संकल्प-वाक्य' के पश्चात् सर्व प्रथम नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने इष्ट देवी भगवती गायत्री जी का 'ध्यान' करना चाहिए।

ध्यान के मंत्र

"आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ १॥

चतुर्भुजां शशिकलां जटाजूट समन्विताम् ।
ऋक्सामयजुषां नाथां प्रफुल्ल कमलेक्षणाम् ।। २ ।।
श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता ।।
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ।। ३ ।।
रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां
रक्तां रक्तनवस्रजं मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमाम् ।
गायत्रीं कमलासनां करतलव्यानद्धकुण्डाम्बुजां
पद्माक्षीं च वरस्रजं च दधतीं हंसाधिरूढांभजे ।। ४ ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।। ५ ।।"

गायत्री-उपासना

गायत्री की उपासना के अनेक भेद हैं। उनमें गायत्री की जपात्मक, पाठात्मक तथा हवनात्मक उपासना विशेष प्रचलित है। गायत्रीमन्त्र का जप करना 'जपात्मक उपासना' है। गायत्री के स्तोत्र आदि का पाठ करना 'पाठात्मक उपासना' है तथा गायत्री-मन्त्र से हवन करना 'हवनात्मक उपासना' कही जाती है। इनमें गायत्री की 'जपात्मक उपासना' सर्व श्रेष्ठ कही गई है।

वर्तमान कुछ लोग भगवती गायत्री की मूर्ति बनाकर प्रतिमा-पूजन की विधि से गायत्री की उपासना भी करते हैं। ऐसे महानु-

भावों को भगवती गायत्री की प्रतिमा का पूजन अन्य देवियों की पूजन-विधि के समान आसन, पाद्य, अर्घ्य, स्नान, आचमन, वस्त्र, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, नीराजन, प्रार्थना द्वारा करना चाहिए। यहां हम ब्रह्म स्वामी शंकर तीर्थ जी महाराज द्वारा निर्धारित गायत्री-उपासना की एक विशिष्ट विधि का उल्लेख कर रहे हैं, जो इस प्रकार है—

एकान्त स्थान में पूर्वाभिमुख हो, आसन पर बैठ कर पहले आसन शुद्धि करे। आसनशुद्धि का मन्त्र इस प्रकार है—

"पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं
छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।
ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम ॥"

इस प्रकार कह कर कुशा से जल-प्रोक्षण करें। फिर पहले आचमन करें। आचमन के पश्चात् 'तत्त्वमुद्रा' (दायें हाथ के अंगुष्ठाग्र में अनामिकाग्र का संयोग करने से 'तत्त्वमुद्रा' होती है।) से 'अङ्गन्यास' करें। अङ्गन्यास इस प्रकार है—

ॐ हृदयाय नमः।

(यह कह कर हृदय का स्पर्श करें।)

ॐ भूः शिरसे स्वाहा।

(यह कह कर शिर का स्पर्श करें।)

ॐ भुवः शिखायैवषट्।

(यह कह कर शिखा का स्पर्श करें।)

ॐ स्वः कवचायहुम् ।

(यह कह कर बायें हाथ को दायें कंधे के ऊपर तथा फिर दायें हाथ को बायें कन्धे के ऊपर रखकर बायें हाथ की तत्त्वमुद्रा से दायें कंधे का स्पर्श तथा दायें हाथ की तत्त्वमुद्रा से बायें कंधे का स्पर्श करें ।)

ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् ।

(यह कह कर मध्यमा तथा तर्जनी से नेत्रों का स्पर्श करें ।)

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्रायफट् ।

(यह कह कर दायें हाथ को सिर के चारों ओर घुमाकर बायें हाथ की हथेली पर उसका आघात करें ।)

इसी प्रकार शरीर में निम्नलिखित मन्त्र पढ़ कर न्यास करें—

'ॐ' तत्पदं पातु मे पादौ जङ्घे मे 'सवितुः' पदम् ।
'वरेण्यं' कटिदेशं तु नाभिं 'भर्ग' स्तथैव च ॥
'देवस्य' मेतु हृदयं 'धीमही'ति गलं तथा ।
'धियो' मे पातु जिह्वायां 'यः' पदं पातु लोचने ॥
ललाटे 'नः' पदं पातु मूर्द्धां मे 'प्रचोदयात्' ।

इसके पश्चात् माता गायत्री के ऋषि-देवता आदि का स्मरण करके विनियोग करें—

"ॐकारस्य ब्रह्मऋषिरग्निर्देवता, गायत्रीच्छन्दो शुक्लो वर्णः गायत्रीजपे विनियोगः ।"

"महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिऋर्षिः, अग्नि वायु

सूर्या देवता:, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, गायत्रीजपे विनियोग: ।''

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र के अनुसार गायत्री का ध्यान करें—

''ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता ॥
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥''

इस प्रकार ध्यान करके गायत्री का आवाहन करें तथा कृताञ्जलि होकर निम्नानुसार कहे—

''तेजोऽसीति मन्त्रस्य देवा ऋषयो धाम देवता गायत्रीच्छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोग: ।''

''ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥''

इसके बाद गायत्री का उपस्थान करे तथा कृतांजलि होकर इस प्रकार कहे—

''तुरीयपदस्य विमलऋषि:, परमात्मा देवता, गायत्र्युपस्थाने विनियोग: ।''

''ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे । नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे ।''

इसके बाद—

"ॐ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥"

इस मन्त्र का जप करे 'वरेण्यं' का उच्चारण **'वरेणियम्'** इस प्रकार से करना चाहिए; क्योंकि कहा गया है—

"वरेण्यं विरलं चोक्त्वा जपकाले विशेषतः ।"

अर्थात् 'वरेण्यं' शब्द का विशेषकर जप के समय विरल उच्चारण करना चाहिए) ।

गायत्री मन्त्र का अर्थ समझकर जप करने से विशेष फल मिलता है तथा विशेष आनन्द प्राप्त होता है । अतः अर्थ जानना आवश्यक है । गायत्री मन्त्र की व्याख्या इस प्रकार है—

"(यः परमेश्वरः) ॐ (अ-उ-म्—सृष्टि—स्थिति-संहारार्थं ब्रह्मा-विष्णु-रुद्ररूपधारी) भूः (भू रूपः) भुवः (भुवः स्वरूपः) स्वः (स्वर्लोकरूपः) यः (परमेश्वरः) नः (अस्माकं सर्वेषां संसारिणाम्) धियः (बुद्धिः) प्रचोदयात् धर्मार्थ कामोक्षेषु प्रेरयति) सवितुः (अनन्तब्रह्माण्डानाँ भूतानाँ च प्रसवितुः) देवस्य (दीप्तिक्रीडायुक्तस्य परमेश्वरस्य) तत् (वेदादि निखिलसत्शास्त्र प्रसिद्धं स्वयं प्रकाशरूपं तापत्रयनाशनं जन्ममृत्युनिवारणं) वरेण्यं (वरणीयं तापत्रयपीडितैः जन्ममृत्युभीरुभिः तन्निरासाय उपासनीयं) भर्गः (सर्वदुःखानाँ सर्वपापानाँ सर्वसंसारस्य च भजनसमर्थं तेजः-स्वयं ज्योतिः परब्रह्मात्मकं तेजोमण्डलं) धीमहि (सोऽहमस्मी त्यनेन प्रकोरण चिन्तयामः) ।"

कज्जल का मन्त्र

"चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारिके ।
कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'काजल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सौभाग्य सूत्र' समर्पित करें—

सौभाग्य सूत्र का मन्त्र

"सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणि संयुते ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ॥"

'सौभाग्य सूत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'गन्ध द्रव्य' समर्पित करें—

गन्ध द्रव्य का मन्त्र

"चन्दनागुरु कर्पूर कुंकुमं रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपये ॥"

'गन्ध द्रव्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अक्षत' (चावल) समर्पित करें—

अक्षत का मन्त्र

"रञ्जिता कुंकुमौघेन अक्षताश्चापि शोभनाः ।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्नाभव वैष्णवी ॥"

'अक्षत' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्प' समर्पित करें।

पुष्प का मन्त्र

"मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च ।
जाती चम्पक पुष्पाणि गृहणेमानि शोभने ॥"

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पमाला' समर्पित करें—

पुष्पमाला का मंत्र

"सुरभिपुष्पनिचयैर्ग्रथितां शुभ मालिकाम् ।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'पुष्पमाला' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'धूप' समर्पित करें—

धूप का मन्त्र

"दशाङ्ग गुग्गुलं धूपं चन्दना गुरु संयुतम् ।
समर्पितं मयाभक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम् ॥"

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दीपक' प्रदर्शित करें—

दीपक का मन्त्र

"घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम् ।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥"

'दीपक' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नैवेद्य' समर्पित करें—

नैवेद्य का मन्त्र

"अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भि समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्यचलां कुरु ।।"

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमन' के लिए जल समर्पित करें—

आचमन का मन्त्र

"कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनमम्बिके ।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव वैष्णवी ।।"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अखण्ड ऋतु फल' समर्पित करें—

अखण्ड ऋतु फल का मन्त्र

"नारिकेलं च नारङ्गं कलिङ्गं मञ्चिरं तथा ।
उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम् ।।"

'अखण्ड ऋतु फल' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ताम्बूल' समर्पित करें—

ताम्बूल का मन्त्र

"एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः सुष्ठुवासिताम् ।
वीटिकां मुखवासार्थं अर्पयामि सुरेश्वरि ।।"

'ताम्बूल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दक्षिणा' समर्पित करें—

दक्षिणा का मन्त्र

"पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि ।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्।।"

'दक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नीराजन' (आरती) करें—

नीराजन का मंत्र

"नीराजनं सुमङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम् ।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि नमोऽस्तुते ।।"

'नीराजन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुये 'प्रदक्षिणा' करें—

प्रदक्षिणा का मन्त्र

"नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले ।।"

'प्रदक्षिणा' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दण्डवत्-प्रणाम' निवेदित करें—

प्रणाम का मंत्र

"नमः सर्वहितार्थायै जगदाधार हेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मयाकृतः ॥"

'प्रणाम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'क्षमा प्रार्थना' करें—

क्षमा-प्रार्थना के मंत्र

"दुर्गा शिवां शांतिकरीं ब्रह्माजी ब्रह्मणः प्रियाम् ।
सर्वलोक प्रणेत्रीं च प्रणमामि तु वैष्णवीं ॥
मंगलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम् ।
विश्वेश्वरीं विश्वमातां वैष्णवीं प्रणमाम्यहम् ॥
जयन्तीमंगलाकाली वैष्णवी च कपालिनी
दुर्गा रमा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥"

क्षमा प्रार्थना, स्तोत्र, चालीसा आरती आदि के पाठ के बाद सबसे अन्त में निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'विसर्जन' करें—

विसर्जन का मन्त्र

"इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रजस्थान मनुत्तमम् ॥"

श्री भगवती स्तोत्रम्

"जय भगवति देवि नमो वरदे,
जय पापविनाशिनि बहुफल दे ।
जय शुम्भ निशुम्भ कपाल धरे,
प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे ।। १ ।।
जय चन्द्र दिवाकर नेत्र धरे,
जय पावकभूषितवक्त्र वरे ।
जय भैरव देहनिलीन परे,
जय अन्धक दैत्य विशोष करे ।। २ ।।
जय महिषविमर्दिनि शूल करे,
जय लोक समस्तक पाप हरे ।
जय देवि पितामह विष्णुनुते,
जय भास्कर शक्र शिरोऽवनते ।। ३ ।।
जय षण्मुखसायुधईशनुते,
जय सागरगामिनि शम्भुनुते ।।
जय दुःख दरिद्र विनाश करे
जय पुत्र कलत्र विवृद्धि करे ।। ४ ।।
जय देवि समस्त शरीर धरे,
जय नाक विदर्शिनि दुःख हरे ।
जय व्याधि विनाशिनि मोक्ष करे,
जयवाञ्छित दायिनि सिद्धि करे ।।५।।

एतद् व्यास कृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः ।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा ।।"

।। इति श्री भगवती स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।।

श्रीवाराहपुराणोक्त वैष्णवी स्तोत्रम्

"नमो देवि महाभागे गम्भीरे श्रीमदर्शने ।
जयस्थे स्थिति सिद्धान्त त्रिनेत्रे विश्वतोमुखि ।। १ ।।
विद्येऽविद्ये जपे जाप्ये महिषाऽसुरमर्द्दिनि ।
सर्वगे सर्व देवेशि विश्वरूपिणि वैष्णवि ।। २ ।।
वीतशोके ध्रुवे देवि पद्मपत्रे शुभेक्षणे ।
शुद्ध सत्व व्रतस्थे च चण्डरूपे विभावरि ।। ३ ।।
ऋद्धिसिद्धि प्रदे देवि विद्येऽविद्येऽमृते शुभे ।
शांकरी वैष्णवी ब्राह्मी सर्वदेव नमस्कृते ।। ४ ।।
घण्टा हस्ते त्रिशूला स्त्री महामहिष मर्द्दिनि ।
उग्ररूपे विरूपाक्षि महापाये ऽमृतस्रवे ।। ५ ।।
सर्व सत्वहिते देवि सर्वसत्वमये ध्रुवे ।
विद्या पुराण शिल्पानां जननी भूत धारिणि ।। ६ ।।
सर्ववेदरहस्यानां सर्व सत्ववतां शुभे ।
त्वमेव शरणं देवि विद्येऽविद्येऽश्रियेऽम्बिके ।। ७ ।।
विरूपाक्षि तथाक्षान्ते क्षोभितान्तेर्जले ऽमले ।
नमोऽस्तुते महादेवि नमस्ते परमेश्वरी ।। ८ ।।

शरणं त्वां प्रपद्यन्ते ये देवि परमेश्वरी ।
न तेषां जायते किञ्चिद् अशभुं रण संकटे ॥ ६ ॥
यश्च व्याघ्र भये घोरे चौरराजभये तथा ।
स्तवनेन सदा देवि पठिष्यति यतात्मवान् ॥ १० ॥
निगडस्थोऽपि यो देवि त्वां स्मरिष्यति मानवः ।
सो ऽपि बंधैर्विनिर्मुक्त, ससुखं वसते सुधी ॥ ११ ॥
एवं स्तुता तदा देवि देवैः प्रणति पूर्वकम् ।
उवाच देवान् सुश्रोणी वृणुध्वं वरमुत्तमम् ॥ १२ ॥
देवि स्तोत्रमिदं येहि पठिष्यन्ति तवानघे ।
सर्व काम समापन्नान् कुरु देवि सनो वरः ॥ १३ ॥
त्वं वैष्णवीशक्तिरनन्त वीर्या
विश्वस्य वीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतु ॥ १४ ॥"

॥ इति श्री वैष्णवी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीदेव्यपराध क्षमापन स्तोत्रम्

"न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥

विधेर ज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ३ ॥
जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥
परित्यक्ता देवा विविधविधिसेवा कुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदर जननि कं यामि शरणम् ॥५॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीं
भवानि त्वत्पाणि ग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥ ७ ॥

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥ ८ ॥
नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥ ९ ॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भाव येथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥ १० ॥
जगदम्बविचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परावृतं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥ १२ ॥"

॥ इति श्री देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रम् ॥

श्री वैष्णो देवी चालीसा

॥ दोहा ॥

जय जग जननी अम्बिका, वैष्णो देवी मात ।
सिंह वाहिनी शारदा, महिमा जग विख्यात ॥

जय जय जय अम्बिका भवानी ।
वैष्णो देवी सब सुखदानी ।।
पर्वत वासिनि रूप मनोहर ।
निज भक्तन कहँ देहु अभयवर ।।
हरिहर ब्रह्मा तुमहिं मनावैं ।
इन्द्रादिक सब गुणगण गावैं ।।
नारद शारद करहिं प्रशंसा ।
देवी सकल तुम्हारी अंशा ।।
त्रेतायुग प्रगटीं तुम माता ।
राजकुमारी बनि सुखदाता ।।
कीन्ह तपस्या हरि उरलाई ।
बैठीं रहीं सिन्धु तट जाई ।।
सीताहरण समय रघुराई ।
पहुंचे तहां सिन्धु तट जाई ।।
सो तुम्हरी कुटिया मँह आये ।
भगति विलोकि परमहरसाये ।।
वर जांचन प्रभु बोले जबहीं ।
पति तुम होहु कहा यह तबहीं ।।
तब बोले श्री रघुकुल नायक ।
वचन सुधा सम अति सुखदायक ।।
रावण मारि लौटि पुनि आवहुँ ।
वेष विचित्र अनूप बनावहुँ ।।
तब तुम हमहिं लेहु पहिचानी ।
तौ अवश्य करिहौं पटरानी ।।
रावण मारि राम जब आये ।

वृद्ध ब्राह्मण रूप बनाये ।।
सो पुनि तव ढिग पहुंचे जाई ।
माया प्रेरि दीन्ह अधिकाई ।।
तब तुम प्रभु कहँ तनिक न चीना ।
बोले रघुपति वचन प्रवीना ।।
कलियुग होइ मोर अवतारा ।
धरमपापि हरिहौं भुविभारा ।।
तब तुम मोर शक्ति बनि आवहु ।
अब गिरिराज कन्दरा जावहु ।।
यह सुनि नाइ चलीं तुम शीसा ।
वास तुम्हार भयेउ गिरीसा ।।
मन्दिर तहा बन्यो मनभावन ।
परम सुहावन अतिशय पावन ।।
फहरत ध्वजा परम छवि छावहिं ।
दर्शन हेतु भक्तजन आवहिं ।।
नंगे पांव बादशा आवा ।
सो सोने का छत्र चढ़ावा ।।
धूप दीप नैवेद्य आरती ।
लडुअन भोग लगांइ भारती ।।
सिंह वाहिनी मातु भवानी ।
राजत तहां परम कल्यानी ।।
धानूभगत तोर गुण गाये ।
सो निज मनवांछित फल पाये ।।
भैरूनाथ उपद्रव कीन्हा ।

ताको उचित दण्ड तुम दीन्हा ।।
कोटि कोटि तुम असुर संहारे ।
दास रहे नित प्राण पियारे ।।
जय जग जननी वैष्णो माता ।
महिमा तोरि भुवन विख्याता ।।
ब्रह्मा वेद पढ़ें तव द्वारे ।
शंकर जय जय सदा पुकारे ।।
पिण्डी तीनि सुहावन सुन्दर ।
जलधारा जहँ बहत निरंतर ।।
नाम चरण गंगा कह जोई ।
तीनिताप नासनि अह सोई ।।
'जय माता दी' भक्त उचारहिं ।
तुम्हरो सुयश जगत विस्तारहिं ।।
जो जन जाहिं कामना लागी ।
तिन कहँ मातु करहु बड़भागी ।।
धर्म अर्थ अरु काम बताये ।
मुक्ति पदारथ नाम सुनाये ।।
चारों मिलहिं तुम्हारी दाया ।
ब्रह्मस्वरूपा हो तुम माया ।।
नाम तुम्हार लेत अघ नासहिं ।
अखिल भुवन महँ तेज प्रकासहिं ।।
जय माता गौरी कल्याणी ।
लक्ष्मी तुम्हीं तुम्हीं ब्रह्माणी ।।
तीनों देवी परम मनोहर ।
नाम वैष्णवी है अति सुन्दर ।।

दास जानि लीजै निज शरणा ।
अब मैं गहे तुम्हारे चरणा ॥
सब अपराध क्षमा करु माता ।
करुणामयि तुम अति सुखदाता ॥
यह चालीसा पढ़े जो कोई ।
तापर कृपा तुम्हारी होई ॥

॥ दोहा ॥

वैष्णो देवी अम्बिका, अभिमत फल दातार ।
तुम्हारी कृपा कटाक्ष को, गाहक सब संसार ॥

॥ इति श्री वैष्णोदेवी चालीसा सम्पूर्णम् ॥

आरती माता वैष्णोदेवी की

जय वैष्णवी माता, मैया, जय वैष्णवी माता ॥
द्वार तुम्हारे जो भी आता, बिन मांगे सब कुछ पा जाता ॥
तू चाहे जो कुछ भी करदे, तू चाहे तो जीवन दे दे ।
राजा रंक बने तेरे चेले, चाहे पल में जीवन ले ले ॥
मौत जिन्दगी हाथ में तेरे, मैया तू है लाटां वाली ।
निर्धन को धनवान बनादे, मैया तू है शेरां वाली ॥
पापी होय या होय पुजारी, राजा हो या रंक भिखारी ।
मैया तू है जोतां आली, भवसागर से तारनहारी ॥
तूने नाता जोड़ा सबसे, जिस जिस ने जब तुझे पुकारा ।
शुद्ध हृदय से जिसने ध्याया, दिया है तूने उसको सहारा ॥
मैं मूरख अज्ञान अनारी, तू जगदम्बे सबको प्यारी ।
मन इच्छा सिद्ध करने हारी, अब है ब्रजमोहन की बारी ॥

॥ बोल सांचे दरबार की जय ॥

आरती माता वैष्णो देवी की

जय वैष्णवी माता, मैया जय वैष्णवी माता ।
हाथ जोड़ तेरे आगे, आरती हूं मैं गाता ॥ १ ॥
शीश पै छत्र बिराजे, मूरती है प्यारी ।
गंग बहे चरणों में, ज्योत जगे न्यारी ॥ २ ॥
ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे, शंकर ध्यान धरें ।
अर्जुन चंवर डुलावत, नारद नृत्य करें ॥ ३ ॥
सुन्दर गुफा तुम्हारी, मन को अति भावे ।
बार बार देखन को, हे मां मन चाहे ॥ ४ ॥
भवन पै झण्डे झूले, घण्टा ध्वनि बाजे ।
ऊंचा पर्वत तेरा, हे मां प्रिय लागे ॥ ५ ॥
सात सुपारी ध्वजा नारियल, भेंट पुष्प मेवा ।
दास खड़े चरणों में, दर्शन दो दो देवा ॥ ६ ॥
जो जन निश्चय करके, द्वार तेरे आवे ।
पूरण इच्छा उसकी, हे मां ! हो जावे ॥ ७ ॥
इतनी स्तुति निश दिन, जो भी जन गावे ।
कहे ध्यानू सेवक, दरश अवश्य पावे ॥ ८ ॥

आरती श्री वैष्णो देवी की

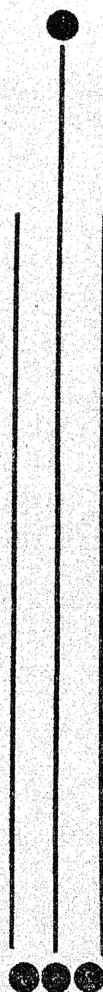
मैया जय लाटां वाली, मैया जय शेरां वाली ।
पार करो भक्तां नूं, पार करन वाली ॥ ॐ जय ॥
शरण तेरी जगदम्बे, जो चल के आवे ।
करो मनोरथ पूरा, खाली नहिं जावे ॥ ॐ जय ॥
दूध पूत धन दौलत, सबते मेहर करो ।
ख्याल रहो भक्तां ते, भूल चूक माफ करो ॥ ॐ जय ॥

एक बार जगदम्बे, शरण तेरी जो आवे ।
मुंह मांगिआं मुरादां, तुझसे मां पावे ।। ॐ जय ।।
मुझ सेवक की पूरी करो मात इच्छा ।
लैन आया दर तेरे दर्शन दी भिच्छा ।। ॐ जय ।।
पार करो भगता नूं, भार करो संगता नूं ।
जय जोतां वाली, मैया जय लाटां वाली ।। ॐ जय ।।

श्री वैष्णो देवी की आरती

सुन मेरी देवी पर्वत वासिन, कोई तेरा पार न पाया ।
जो कोई करै आरती तेरी, सो भवसागर दुख बिन साया ।।
साड़ी चोली अङ्ग बिराजे, केशर तिलक लगाया ।
सिंह चढ़ी असुरन को दारे, रूप देख सुख पाया ।।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले तब भेंट चढ़ाया ।
धूप दीप नैवेद्य आरती, लड्डवन भोग लगाया ।।
ब्रह्मा वेद पढ़ै तेरे द्वारे, शंकर ध्यान लगाया ।
नंगे पांव बादशा आया, सोने का छत्र चढ़ाया ।।
ऊँचे पर्वत भवन बिराजे, नीचे भवन बनाया ।
तेरी शोभा कही न जावे, रूप देख ललचाया ।।
सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग, तेरा राज सवाया ।
धानू भगत तेरा यश गावे, मनबांछित फल पाया ।।
जो दर्शन करने को आया, कोटि यज्ञ फल पाया ।
वैष्णोदेवी सबकी माता, तीन लोक जस छाया ।।
वैष्णोदेवी की आरती गावे, उसका दुख बिन साया ।
शरण पड़े हम माता तेरी, करो दास पर दाया ।।

श्री लक्ष्मी आराधना





राजेश दीक्षित

श्री लक्ष्मी आराधना

[श्री लक्ष्मी-चरित्र, पूजा-उपासना विधि, यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, आरती, चालीसा आदि समन्वित अत्युपयोगी पुस्तक]

●

राजेश दीक्षित



देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : 265403, 264191, 261030

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

लेखक
राजेश दीक्षित

मूल्य
स्वदेश में : डेढ़ रुपया
विदेश में : चार शिलिंग

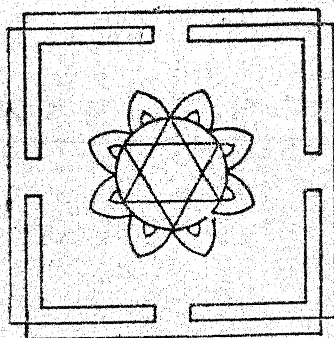
मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस,
सोनीपत (निकट दिल्ली) हरयाणा

प्रत्येक का मूल्य ६.००

१. गणेश उपासना
२. लक्ष्मी उपासना
३. राम उपासना
४. कृष्ण उपासना
५. हनुमान उपासना
६. दुर्गा उपापना
७. विष्णु उपासना
८. शिव उपासना
९. काली उपासना
१०. भैरव उपासना
११. गायत्री उपासना
१२. सरस्वती उपासना
१३. ओ३म् उपासना
१४. वैष्णो उपासना
१५. गगा उपासना
१६. गौरापार्वतीउपासना
१७. अष्टदेव आराधना
१८. अष्टदेवी आराधना
१९. कबीर उपासना
२०. मातभवानी शक्ति
२१. गायत्री शक्ति
२२. योग शक्ति
२३. सावना शक्ति
२४. ओ३म शक्ति
२५. दुर्गा शक्ति
२६. देवी-देव की आरती
२७ बड़ा भक्ति सागर
२८ हनुमान जीवन-चरित्र
२९ प्राचीन ब्रह्मज्ञान भजन
३०. १२ महीने व्रत-त्यौहार
३१. पंचतन्त्र
३२. शिव लीलामृत
३३. सरल भागवत
३४. दृष्टान्त सागर
३५. दुर्गा भाषा

संक्षिप्त श्री लक्ष्मी-चरित्र

एक समय देवताओं ने अमृत-प्राप्ति के लिए समुद्र-मंथन करने का विचार किया। समुद्र-मंथन के लिए वे अकेले ही सक्षम नहीं थे, अतः उन्होंने दैत्यों को भी इस कार्य को करने के लिए अपने साथ ले लिया। फलतः देवता और दैत्य दोनों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया।



श्री लक्ष्मी पूजन यन्त्र

समुद्र को मंथने के लिए मंदराचल पर्वत को मथानी तथा वासुकि नाग को रज्जु बनाया गया। सर्प के फण की ओर दैत्य रहे और पूंछ वाले भाग की ओर देवता। जब मंदराचल पर्वत समुद्र में नीचे की ओर धसकने लगा, उस समय भगवान् विष्णु ने कच्छप अवतार

लेकर, उस पर्वत को अपनी पीठ पर रख लिया। फलस्वरूप वह अपने स्थान पर स्थिर रहा, उसका नीचे की ओर धंसना रुक गया।

दीर्घकाल तक समुद्र का मंथन करते रहने के बाद उसमें से सर्व-प्रथम हलाहल नामक विष प्रकट हुआ। उस विष की तीव्रज्वाला से जब तीनों लोक हाहाकार करने लगे, उस समय शिवजी ने उस तीव्र विष को अपने कंठ में धारण कर लिया, जिसके फलस्वरूप उनका कंठ नीला पड़ गया और वे नील कंठ कहलाने लगे।

हलाहल विष के बाद समुद्र में से अनेक प्रकार के और भी रत्न प्रकट हुए। अमृत का प्राकट्य सबसे अन्त में हुआ। विष से प्रारंभ करके अमृत पर्यन्त कुल १४ रत्न समुद्र में से निकले। उन्हीं में एक रत्न के रूप में भगवती महालक्ष्मी भी प्रकट हुई थीं।

विभिन्न रत्नों को देवता तथा दैत्यों ने परस्पर बांट लिया था। लक्ष्मी जी को श्री विष्णु ने अपनी अर्द्धाङ्गिनी के रूप में स्वीकार किया। तभी से लक्ष्मी जी विष्णु-प्रिया अथवा विष्णु-पत्नी कही जाती हैं। समुद्र से उत्पन्न होने के कारण उनके नाम सिन्धुकन्या, सागरात्मजा आदि भी हैं।

लक्ष्मी जी का शरीर गौर वर्ण है। इनके चार भुजाएं हैं। ये किरीट-मुकुट तथा दिव्य वस्त्रालंकारों को धारण करती है। इन्हें धन-धान्य तथा समृद्धि की अधिष्ठातृ देवी माना जाता है।

लक्ष्मी जी का वाहन 'उलूक' पक्षी है। ये स्वभाव से परम चंचला हैं। कभी भी एक जगह स्थिर होकर नहीं रहती। परन्तु विष्णु-पत्नी होने के कारण जहां भगवान् श्री विष्णु की आराधना के साथ ही श्री लक्ष्मी जी की भी नियमित आराधना होती है, वहां ये स्थिर रूप से निवास करती हैं।

श्री लक्ष्मी जी का आसन कमल है, इसीलिए इन्हें 'कमला' या 'कमलासना' भी कहा जाता है। यथार्थ में तो ये परब्रह्म प्रभु की

आद्या शक्ति हैं। उस आद्या शक्ति ने ही समुद्र के गर्भ से लक्ष्मी रूप में अवतरित होकर श्री विष्णु को वामाङ्ग में स्थान लिया है। ये अपने पति भगवान् विष्णु की निरन्तर सेवा करती रहती हैं। यही कारण है कि जो लोग श्री विष्णु के भक्त हैं, उन्हें अनायास ही भगवती लक्ष्मी की कृपा भी प्राप्त हो जाती है।

कार्तिक कृष्णा अमावास्या को दीपावली की रात्रि में भगवती महालक्ष्मी का पूजन विशेष रूप से किया जाता है। कहा जाता है कि इस तिथि को भगवती लक्ष्मी विश्व भ्रमण पर निकलती हैं तथा जिस स्थान पर अपनी उपासना–आराधना होते हुए देखती हैं, वहीं अपना निवास बना लेती हैं।

भगवती महालक्ष्मी की उपासना-आराधना द्वारा दुःख-दारिद्र्य से मुक्ति पाकर यथेच्छित ऐश्वर्य प्राप्त किया जा सकता है।

सामान्य पूजा-विधि

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर, मन, वचन एवं कर्म की शुद्धि सहित पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, शिखा में गांठ बांधें तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें। फिर इष्ट देवी की मूर्ति, चित्र अथवा प्रतीक को चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर, अपने अग्रभाग में स्थापित करें। इस पुस्तक के पांचवें पृष्ठ पर जिस यन्त्र को प्रकाशित किया गया है, उसे गेहूं के आटे, रोली, हल्दी तथा चावलों के द्वारा देवी की मूर्ति के सम्मुख चित्रित करें। यदि इस यन्त्र को स्वर्ण, रौप्य अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा लिया जाय तो उसे बारम्बार उपयोग में भी लाया जा सकता है। देवी-पूजन के साथ ही यन्त्र-पूजन भी करना चाहिये।

जल पूर्ण पात्र तथा पूजन-सामग्री को संकलित करके अपने आसन के समीप ही रख लें तथा इष्ट देव की मूर्ति के समीप शुद्ध घृत का दीपक प्रज्ज्वलित कर, धूप बत्ती, अगर बत्ती आदि जला दें।

सर्व प्रथम 'स्वस्ति वाचन' का पाठ करें। फिर पवित्रीकरण, आचमन, हस्त-प्रक्षालन तथा भूत शुद्धि की क्रियाएं सम्पन्न कर, पहले विघ्न-विनाशन आदि पूज्य श्री गणेश जी का ध्यान करें, तदुपरान्त 'संकल्प-वाक्य' का उच्चारण करके नीचे लिखे अनुसार मन्त्रों द्वारा इष्ट देवता का ध्यान तथा यथाविधि पूजन करें।

पूजा की समाप्ति पर स्तोत्र, कवच, चालीसा आदि का पाठ एवं आरती, प्रदक्षिणा आदि कृत्य करने चाहिए।

स्वस्ति वाचन

"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाः विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोवृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥३॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रोदेवता दित्यादेवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ४ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथ्वीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व ँ शान्तिः शान्ति-

रेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि । ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरि-तानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव । शान्तिः ।। ५ ।।भवतु।।

उक्त 'स्वस्ति वाचन' को जहां-जहां ँ इस प्रकार का चिह्न है, वहां 'ग्वं' की भांति उच्चारण करना चाहिए । 'स्वस्ति वाचन' के बाद आगे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल से आचमन करें तथा अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़कें । तत्पश्चात् दोनों हाथों को धो लें । आचमन करते तथा जल छिड़कते समय 'ओ३म् केशवाय नमः स्वाहा । ओ३म् नारायणाय नमः स्वाहा । ओ३म् माधवाय नमः स्वाहा ।' इन मन्त्रों का उच्चारण करते जाना चाहिए ।

पवित्रीकरण का मन्त्र

" ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार जल छिड़क कर आचमन करें तथा हाथ धो डालें ।

'पवित्रीकरण' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भूत शद्धि' करें—

भूत शुद्धि का मंत्र

"ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता ।

ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।"

'भूत शुद्धि' के उपरान्त दाएं हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प तथा जल लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए विघ्न विनाशक 'श्री गणेश जी का ध्यान' करें—

श्री गणेश ध्यान मंत्र

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्न तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥"

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर हाथ के दूर्वा, अक्षत, पुष्प आदि को श्री गणेश जी के समीप स्थापित कर पुनः दाएं हाथ में तिल, कुश, जल, अक्षत तथा यज्ञोपवीत लेकर नीचे लिखे 'संकल्प वाक्य' का उच्चारण करें—

सङ्कल्प वाक्य

"हरिः ॐ तत्सत् । नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैव-

स्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे षष्टिसंवत्सराणांमध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये, चन्द्रे, भौमे, बुधे, बृहस्पतौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुणविशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मा आदि) ऽहं धर्मार्थकाममोक्षहेतवे श्रीगणपत्यादि श्री कृष्णचन्द्रस्य पूजनमहं करिष्ये।"

उक्त 'संकल्प वाक्य' में जहां-जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ क्रमशः विद्यमान संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिये। ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', 'वैश्य को गुप्तोऽहं' तथा शूद्र को 'दासोऽहं,' शब्द का उच्चारण करना चाहिये।

'संकल्प-वाक्य' के पश्चात् सर्व प्रथम नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने इष्ट देवी श्री लक्ष्मी जी का 'ध्यान' करना चाहिए।

ध्यान के मंत्र

"नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ १ ॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयंकरि ।
सर्वपाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। २ ।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। ३ ।।
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्मलक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।। ४ ।।
या श्रीः पद्मासनस्थाविपुलकटि तटी
पद्मपत्रापताक्षी ।
गम्भीरावर्त्तनाभितनुभरनमिता
शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।।
या लक्ष्मीर्दिव्यरूपैर्मणिगणखचितैः
स्थापितां हेमकुंभैः ।
सा नित्यं पद्महस्ता मम वसतुगृहे
सर्वमाङ्गल्य युक्ता ।। ५ ।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुंमऽइषाण सर्वलोकम ऽइषाण ।। लक्ष्म्यै नमः ।।"

आवाहन का मंत्र

"ॐ सर्वलोकस्य जननी पद्महस्तां सुलोचनाम् ।
सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाहयाम्यहम् ।।"

उक्त मन्त्र द्वारा भगवती लक्ष्मी का 'आवाहन' करने के पश्चात् उन्हें 'आसन' प्रदान करने के हेतु निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

आसन का मंत्र

"तप्तकाञ्चनवर्णाभां मुक्तामणि विराजितम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'आसन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पाद्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

पाद्य का मंत्र

"सर्वतीर्थ समुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम् ।
मयादत्तं गृहाणेदं भगवतिभक्त वत्सले ॥"

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'अर्घ्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

अर्घ्य का मंत्र

"अष्टगंध समायुक्तं स्वर्णपात्र प्रपूरितम् ।
अर्घ्यं गृहाणमद्दत्तं महालक्ष्यै नमोऽस्तुते ॥"

'अर्घ्यं' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमन' के लिए पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

आचमन का मंत्र

"सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्माविष्णुशिवादिभिः ।
स्तुता ददाम्याचमनं महालक्ष्मै मनोहरम् ।।"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'स्नानार्थ' जल का निक्षेप करें—

स्नान का मन्त्र

"पञ्चामृतसमायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभम् ।
गृहाण विश्व जननि स्नानार्थं भक्त वत्सले।।"

'स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए वस्त्रों का जोड़ा समर्पित करें—

वस्त्रयुग्म का मन्त्र

"दिव्याम्बरं नूतनं हि क्षौमंत्वति मनोहरम् ।
दीयमानं मता देवि गृहाण जगदम्बिके ।।"

'वस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'मधुपर्क' प्रदान करें—

मधुपर्क का मन्त्र

"कापिलं दधि कुन्देदुधवलं मधुसंयुतं ।
स्वर्णपात्रस्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण मे ।।"

'मधुपर्क' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आभूषण' समर्पित करें—

आभरण का मन्त्र

'रत्न कङ्कणवैदूर्य मुक्ताहारादिकानि च ।
सुप्रसन्नेनमनसादत्तानि स्वीकुरुष्वमे ॥"

'आभरण' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'चन्दन' समर्पित करें—

चन्दन का मंत्र

"श्रीखंडागरुकर्पूरमृगनाभि समन्वितम् ।
विलेपनं गृहाणत्वं नमोऽस्तुते भक्तवत्सले॥"

'चन्दन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'लाल चन्दन' समर्पित करें—

रक्त चन्दन का मंत्र

"रक्तचन्दनसम्मिश्रं पारिजातसमुद्भवम् ।
मयादत्तंगृहाणाशु चन्दनं गंधसंयुतम् ॥"

'रक्तचन्दन' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सिन्दूर' समर्पित करें—

सिन्दूर का मंत्र

"सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलकं प्रिये ।
भक्त्यादत्तंमया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'सिन्दूर' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'कुंकुम' समर्पित करें—

कुंकुम का मन्त्र

कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम् ।
अखंडकाम सौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'कुंकुम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सुगंधित तैल' समर्पित करें—

सुगन्धित तैल का मंत्र

"तैलानि च सुगंधीनिद्रव्याणि विविधानि च ।
मयादत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वरी ॥"

'तैल' के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्प' समर्पित करें—

पुष्प का मंत्र

"मन्दारपारिजातदीन्पाटलं केतकीं तथा ।
मेरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमोऽस्तुते ॥"

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दूर्वा' समर्पित करें—

दूर्वा का मंत्र

"विष्णवादि सर्वदेवानां प्रियां सर्व सुशोभनाम् ।
क्षीरसागरसम्भूतां दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा ॥"

'दूर्वा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'धूप' समर्पित करें—

धूप का मन्त्र

"वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽय प्रतिगृह्यताम् ॥"

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दीपक' प्रदर्शित करें—

दीपक का मन्त्र

"कर्पूरवर्त्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम् ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरी ॥"

'दीपक' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नैवेद्य' समर्पित करें ।

नैवेद्य का मन्त्र

"नैवेद्यं गृह्यतांदेवि भक्ष्यभोज्य समन्वितम् ।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मी देवि नमोऽस्तुते ॥"

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमनीय जल' प्रदान करें—

आचमनीय का मन्त्र

"शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितं।
आचम्यतां मम जलं प्रसीद त्वं महेश्वरि।।"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखिन मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ताम्बूल' समर्पित करें—

ताम्बूल का मन्त्र

"एलालवङ्ग कर्पूर नागपत्रादिभिर्युतम् ।
पूंगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'ताम्बूल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'फल' समर्पित करें—

फल का मन्त्र

"फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाः संतु मनोरथः ।।"

'फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र उच्चारण करते हुए 'दक्षिणा' समर्पित करें—

दक्षिणा का मन्त्र

"हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्य फलद मतः शन्ति प्रयच्छ मे।।"

'दक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "नीराजन' करें—

नीराजन का मन्त्र

"चतुर्दसर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि॥"

'नीराजन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'प्रदक्षिणा' करें—

प्रदक्षिणा का मन्त्र

"यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ।
तानि तानि विनश्यन्यि प्रदक्षिणां पदे पदे ॥"

'प्रदक्षिणा' के पश्चात हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पांजलि' समर्पित करें—

पुष्पांजलि का मन्त्र

"केतकीजाति कुसुमैर्मल्लिका मालतीभवैः ।
पुष्पाञ्जलिर्मयादत्तत्तावत्प्राप्यै नमोऽनुते ॥"

'पुष्पाँजलि' के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए 'नमस्कार' निवेदित करें—

नमस्कार का मन्त्र

"नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिःप्रिये ।
यागतिस्त्वप्रपन्नामां सामे भूयात्त्वदर्पनात् ॥"

॥ इति संक्षिप्त पूजन-विधि ॥

दीपावली पर विशेष पूजन

भारतवर्ष में दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन का विशेष महत्व माना जाता है । इस दिन व्यवसाइयों के यहां लक्ष्मी-पूजन का प्रमुख रूप से अयोजन किया जाता है तथा लक्ष्मी जी के साथ ही बही-खाता एवं कलम दावात का पूजन भी किया जाता है। बही-खाता, लेखनी-दावात, तिजोरी तथा तराजू का पूजन निम्नलिखित मंत्रों से करना चाहिए—

बहीखाता पूजन का मन्त्र

"याकुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या वीणावरदण्डमण्डित करा या श्वेतपद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवै सदा वदन्ति ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ॥
सरस्वति महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा ।
आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थ सिद्धये ॥"

लेखनी पूजन का मन्त्र

"लेखनी निर्मिता पूर्वं ब्रह्मणा परमेष्ठिना ।
लोकानां च हितार्थाय तस्मात्तां पूजयाम्यहम् ॥
लेखन्यै ते नमस्तेऽस्तु लाभकर्त्र्यै नमो नमः ॥
पुस्तके चार्चिता देवी, सर्वविद्यान्नदाभाव ।
मद्गृहेधनधान्यादि समृद्धि कुरु सर्वदा ॥"

तुला (तिजोरी) पूजन का मन्त्र

"त्वं तुले सर्व देवाना प्रमाणामिह कीर्तिता ।
अतस्त्वांपूजयिष्यामि धर्मार्थ सुख हेतवे ॥
पदार्थ मानसिद्ध्यर्थं ब्रह्मणा कल्पिता पुरा ।
तुला नामेति कथितां संख्या रूपाम् पास्महे ॥"

तिजोरी पूजन का मन्त्र

"धनदायनमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च ।
भवन्तु त्वत्प्रदानं मे धनधान्यादि सम्पदा ॥
कुबेराय नमस्तुभ्यं नानाभाण्डार संस्थिता ।
यत्र लक्ष्मीर्भवेद्देवं धनं चिनु नमोऽस्तुते ॥"

श्रीमहालक्ष्म्यष्टकम्

"नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्र गदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ १ ॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयंकरि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ २ ॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्ति प्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥
स्थूलसूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ६ ॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ७ ॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तुते ॥ ८ ॥
महालक्ष्याष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥९॥
एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ॥१०॥
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रु विनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥"

॥ इति श्री महालक्ष्यष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्री लक्ष्मी स्तोत्रम्

"क्षमस्व भगवत्यम्ब क्षमाशीले परात्परे ।
शुद्धसत्त्वस्वरूपे च कोपादिपरिवर्जिते ॥ १ ॥
उपमे सर्वसाध्वीनां देवीनां देवपूजिते ।
त्वया विना जगत्सर्वं मृततुल्यं च निष्फलम् ॥२॥
सर्वसंपत्स्वरूपा त्वं सर्वेषां सर्वरूपिणी ।
रासेश्वर्यधिदेवी त्वं त्वत्कलाः सर्वयोषितः ॥३॥

कैलासे पार्वती त्वं च क्षीरोदे सिन्धुकन्यका ।
स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीश्च मर्त्यलक्ष्मीश्च भूतले ॥४॥
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीर्देवदेवी सरस्वती ।
गंगा च तुलसी त्वं च सावित्री ब्रह्मलोकतः ॥५॥
कृष्णप्राणाधिदेवी त्वं गोलोकेराधिका स्वयम् ।
रासेरासेश्वरी त्वं च वृन्दावनवने ॥६॥
कृष्णप्रिया त्वं भाण्डीरे चन्द्रा चन्दनकानने ।
विरजा चम्पकवने शतशृङ्गे च सुन्दरी ॥७॥
पद्मावती पद्मवने मालती मालतीवने ।
कुन्ददन्ती कुन्दवने सुशीला केतकी वने ॥८॥
कदम्बमाला त्वं देवीकदम्बकाननेऽपि च ।
राजलक्ष्मी राजगेहे गृहलक्ष्मीर्गृहे गृहे ॥ ९ ॥
इत्युक्त्वा देवताः सर्वे मुनयो मानवस्तथा ।
रूरुदुर्नम्रवदनाः शुष्ककण्ठोष्ठ तालुकाः ॥ १० ॥
इति लक्ष्मीस्तवं पुण्यं सर्वदेवैः कृतं शुभम् ।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय स वै सर्वं लभेद्ध्रुवम् ॥११॥
अभार्यो लभते भार्यां विनीतां सुसुतां सतीम् ।
सुशीलां सुन्दरीं रम्यामतिसुप्रियवादिनीम् ॥१२॥
पुत्रपौत्रवतीं शुद्धां कुलजां कोमलां वराम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं वैष्णवं चिरजीविनम् ॥१३॥
परमैश्वर्ययुक्तं च विद्यावन्तं यशस्विनाम् ।
भ्रष्टराज्यो लभेद्राज्यं भ्रष्टश्रीर्लभतेश्रियम्॥१४॥

हतबन्धुर्लभेद्बन्धुं धनभ्रष्टोधनं लभेत् ।
कीर्तिहीनो लभेत्कीर्ति प्रतिष्ठां च लभेद्ध्रुवम्॥१५॥
सर्वमङ्गलदं स्तोत्रं शोकसन्ताप नाशनम् ।
हर्षानन्दकरं शश्वद्धर्ममोक्षसुहृत्पदम् ॥ १६ ॥"

॥ इति श्री लक्ष्मीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्री लक्ष्मी ध्यानम्

"हस्तद्वयेन कमले धारयन्ती स्वलीलया ।
हारनूपुर संयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये ॥ १ ॥
शंखचक्रगदाहस्ते शुभवर्णे सुवासिनि ।
मम देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धि प्रदायिनी ॥ २ ॥"

संक्षिप्त श्री लक्ष्मी हृदय स्तोत्रम्

"वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां
तेजोरूपा कनकवासनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम् ।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मंदधाना
माद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामांङ्क संस्थाम् ॥१॥
श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम् ।
सर्वकाम फलावाप्ति साधनैक सुखावहाम् ॥ २ ॥
स्मरामि नित्यं देवेशि त्वया प्रेरितमानसः ।
त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीम् ॥ ३ ॥

समस्तसम्पत्सुखदां महाश्रियं
समस्त सौभाग्यकरीं महाश्रियम् ।
समस्तकल्याणकरीं महाश्रियं
भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम् ॥ ४ ॥

विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं
विचित्रवाग्भूतिकरीं मनोहरम् ।
अनन्तसम्मोदसुख प्रदायिनीं
नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम् ॥ ५ ॥

समस्तभूतान्तर संस्थिता त्वं
समस्तभूतेश्वरि विश्वरूपे ।
तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु
त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ६ ॥

दारिद्रय दुःखौघतमोपहन्त्रि
त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ।
दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः
कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः ॥ ७ ॥

अम्ब प्रसीद करुणासुधयार्द्रदृष्टया
मां त्वत्कृपाद्रविणगेहमिमं कुरुष्व ।
आलोकय प्रणतहृद्गतशोकहन्त्रि
त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ८ ॥

शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै
कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै ।
क्षान्त्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै
धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्य समृद्धि दायै ॥९॥
शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखर संस्तुतायै
रत्यै नमोऽस्तु रजनीकर सोदरायै ।
भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागर तारकायै
मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै ॥ १० ॥
लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभ लक्षण लक्षितायै
सिद्धयै नमोऽस्तु शिवसिद्धसुपूजितायै ।
धृत्यै नमोऽस्त्वमित दुर्गतिभञ्जनायै
गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायिकायै ॥११॥
दैव्यै नमोऽस्तु दिविदेवगणार्चितायै
भूत्यै नमोऽस्तु भुवनार्तिविनाशनायै ।
दात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधर वल्लभायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै ॥१२॥
सुतीव्रदारिद्रयविदुःखहन्त्र्यै
नमोऽस्तु ते सर्वभयापहन्त्र्यै
श्री विष्णुवक्षःस्थलसंस्थितायै
नमो नमः सर्वविभूतिदायै ॥ १३ ॥
जयतु जयतु लक्ष्मीर्लक्षणालङ्कृताङ्गी
जयतु जयतु पद्मा पद्म पद्माभिवन्द्या

जयतु जयतु विद्या विष्णुवामाङ्कसंस्था
जयतु जयतु सम्यक्सर्वसम्पत्करी श्रीः ॥१४॥
जयतु जयतु देवो देवसंघाऽभिपूज्या
जयतु जयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा
जयतु जयतु नित्या निर्मलं ज्ञानवेद्या
जयतु जयतु सत्या सर्वभूतान्तरस्था ॥१५॥
जयतु जयतु रम्या रत्नगर्भान्तरस्था
जयतु जयतु शुद्धा शुद्धजाम्बूनदाभा ।
जयतु जयतु कान्ता कान्तिमद्भासिताङ्गी
जयतु जयतु शान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये ॥१६॥
यस्याः कलाद्याः कमलोद्भवाद्या
रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्चदेवाः ।
जीवन्ति सर्वे अपि शक्तयस्ते
प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषुस्ते ॥ १७ ॥
लिलेख निटिले विधिर्मम लिपि विसृज्यान्तरं
त्वयाविलिखित व्यमेतदिति तत्फलप्राप्तये ।
तदन्तरफल स्फुटं कमलवासिनी श्रीरमां ॥ १८ ॥
समर्पय समुद्रिकां सकलभाग्यसंसूचिकाम् ।
कलया ते यथा देवी जवन्ति सचराचराः ।
तथा संपत्करे लक्ष्मीः सर्वदा सम्प्रसीद मे ॥१९॥
यथा विष्णुध्रुवे नित्यं स्वकलां संन्यवेशयत् ।
तथैव स्वकलां लक्ष्मीर्मयि सम्यक्समर्पय ॥ २० ॥

सर्वसौख्य प्रदे देवि भक्तानामभयप्रदे ।
अचलां कुरु यत्नेन कलांमद्धिनिवेशिताम् ॥ २१ ॥
मुदाऽऽस्तांमद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला
सदा वैकुण्ठश्रीविसतु कला मे नयनयोः ।
वसेत् सत्येलोके मम वचसि लक्ष्मीवर कला
श्रियः श्वेत द्वीपे निवसतु कला मे स्वकरयोः ।
तावन्नित्यं ममाङ्गेषु क्षीराब्धौ श्रीकलावसेत् ।
सूर्याचन्द्रमसों यावद्यावल्लक्ष्मीपतिः श्रिया ॥२३॥
सर्वमङ्गल सम्पूर्णा सर्वैश्वर्यसमन्विता ।
आद्यादि श्रीमहालक्ष्मीत्स्वकला मयितिष्ठतु ॥२४॥
अज्ञान तिमरं हन्तुं शुद्ध ज्ञान प्रकाशिका ।
सर्वैश्वर्यप्रदा मेऽस्तु त्वत्कला मयि तिष्ठतु ॥२५॥"

श्री लक्ष्मी चालीसा

॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करहु हृदय में वास ।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु जन की आस ॥

॥ चौपाई ॥

सिन्धु सुता मैं सुमिरौं तोही ।
ज्ञान बुद्धि विद्या देउ मोही ॥
तुम समान नहि कोउ उपकारी ।
सब विधि पुरवहु आस हमारी॥

जै जै जगत जननि जगदम्बा ।
तुम्ही हो सबकी अवलम्बा ॥
तुम माता घट घट की वासिनि ।
भक्तन कहँ सब भांति सुवासिनि ॥
विनवहुं नित्य तुमहिं महारानी ।
कृपा करहु जग जननि भवानी ॥
केहि विधि अस्तुति करहुं तुम्हारी ।
सुधि लीजै अपराध बिसारी ॥
कृपा दृष्टि चितवहु मम ओरी ।
जगत जननि विनती सुनु मोरी ॥
ज्ञान बुद्धि सुख को तुम दाता ।
संकट हरहु हमारे माता ॥
क्षीर सिन्धु जब सुरन्ह मथायो ।
चौदह रत्न अनूपम पायो ॥
तुम उन रत्नन मँह सुखरासी ।
बनीं विष्णु की अतिप्रिय दासी ॥
जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा ।
रूप बदलि तुम सेवा कीन्हा ॥
जब श्री विष्णु राम तनुधारा ।
लीन्हेउ अवध पुरी अवतारा ॥
तब तुम प्रगटि जनकपुर माहीं ।
सेवा कीन्ह हृदय पुलकाहीं ॥

अपनायो तोहि अन्तर्यामी ।
विश्वविदित त्रिभुवन के स्वामी ।।
तुम सम प्रवल शक्ति नहिं आनी ।
कहँ लगि महिमा कहहुं बखानी ।।
मन क्रम वचन करै सेवकाई ।
मनवांछित फल सो नर पाई ।।
तजि छल कपट और चतुराई ।
पूजहि विविध भांति मन लाई ।।
और हाल मैं कहहुं बुझाई ।
जो यह पाठ करै चित लाई ।।
ता कहँ कष्ट कबहुं नहिं होई ।
मन इच्छित फल पावै सोई ।।
त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणि ।
त्रिविधि ताप भव बंधन हारिणि ।।
जो चालीसा पढ़हि पढ़ावै ।
सदा प्रेमयुत सुनहि सुनावै ।।
ताकहँ कोउ न रोग सतावै ।
पुत्र आदि धन सम्पति पावै ।।
दुखी दरिद्री सब गुण हीना ।
अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना ।।
विप्र बुलाइ कै पाठ करावै ।
शंका तनिक न उरमें लावै ।।
पाठ करावै दिन चालीसा ।
तापर कृपा करहि सुरईशा ।।

सुख सम्पति सो बहु विधि पावै ।
कोई त्रुटि नहिं ता कहँ आवै ॥
बारह मास करै जो पूजा ।
ता सम धन्य और नहिं दूजा ॥
प्रतिदिन पाठ करहि मन लाई ।
सो जग पावहि मान बड़ाई ॥
और कवन विधि कहहुं बताई ।
लेहु परीक्षा ध्यान लगाई ॥
करि विश्वास करै व्रत नेमा ।
होइ सिद्ध उपजै उर प्रेमा ॥
तुम्हरो तेज प्रबल जगमांहीं ।
तुम सम अति दयालु कोऊ नाहीं ॥
मो अनाथ की सुधि अब लीजै ।
संकट काटि भक्ति वर दीजै ॥
भूल चूक करु क्षमा हमारी ।
दरशन दीजं दशा निहारी ॥
बिनु दरशन व्याकुल अतिभारी ।
तुमहिं अछत मैं होंहुं दुखारी ॥
नहिं मोहि ज्ञान बुद्धि है तन में ।
सब जानत तुम अपने मन में ॥
रूप चतुर्भुज कीजिय धारण ।
कष्ट मोर सब करहु निवारण ॥
केहि प्रकार मैं करहुँ बड़ाई ।
ज्ञान बुद्धि दीजै अधिकाई ॥
जय जय जय जय लक्ष्मी माता ।
तुम्हरी दया भुवन विख्याता ॥

दीन जानि सब दुःख निवारहु ।
मो पर मातु कृपा विस्तारहु ॥
कमलासना उलूक वाहिनी ।
मो कहँ माता रहहु दाहिनी ॥
॥ दोहा ॥
त्राहि त्राहि दुःख हारिणी, हरहु बेगिसब त्रास ।
जय जननी जगदम्बिका, करहु शत्रु को नास ॥
॥ इति श्री लक्ष्मी चालीसा सम्पूर्णम् ॥

श्री लक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया, जय लक्ष्मी माता ।
तुम को निशि दिन सेवत, हर विष्णु धाता ॥ ॐ ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता ।
सूर्य, चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ॥ ॐ ॥
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पति दाता ।
जो कोई तुमको ध्याता, रिधि सिधि धन पाता ॥ ॐ ॥
तुम पाताल निवासिनि, तुमही शुभदाता ।
कर्म प्रभाव प्रकासिनि, भवनिधि की त्राता ॥ ॐ ॥
जिस घर तुम रहती तहँ, सब सद्गुण आता ।
सब संभव हो जाता, मन नहिं घबराता ॥ ॐ ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो राता ।
खान पान का वैभव, सब तुम से आता ॥ ॐ ॥
शुभ गुणमन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिनु, कोई नहिं पाता ॥ ॐ ॥
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ॐ ॥

श्री गौरा पार्वती आराधना



राजेश दीक्षित

श्री गौरा पार्वती आराधना

[श्री गौरा पार्वती-चरित्र, पूजा-उपासना विधि, यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, आरती, चालीसा आदि समन्वित अत्युपयोगी पुस्तक]

●

राजेश दीक्षित



देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : 265403, 261030, 264191

•
प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

•
लेखक
राजेश दीक्षित

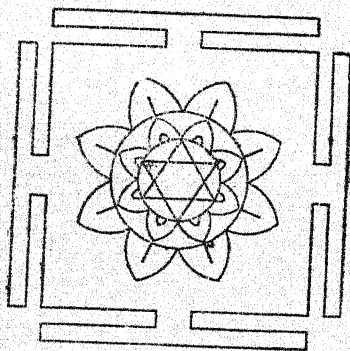
•
मूल्य
स्वदेश में : डेढ़ रुपया
विदेश में : चार शिलिंग

•
मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस
इण्डस्ट्रीयल इस्टेट,
सोनीपत (हरयाणा) भारत

संक्षिप्त श्री गौरा पार्वती-चरित्र

देवाधिदेव महादेव भगवान् शिवशङ्कर की अर्द्धाङ्गिनी भगवती पार्वती देवी अपने भक्तों की समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली हैं।

इन महिमामयी देवी ने पहले दक्ष प्रजा पति की पुत्री के रूप में 'सती' नाम से जन्म ग्रहण किया था। प्रजापति दक्ष ने 'सती' का



श्री पार्वती पूजन यन्त्र

विवाह शिवजी के साथ कर दिया। परन्तु एक बार दक्ष प्रजापति शिवजी से रुष्ट हो गये, अतः उन्होंने अपने द्वारा आयोजित यज्ञ में शिवजी को न तो सम्मिलित होने का ही निमन्त्रण दिया और न उनका यज्ञ-भाग ही निकाला।

सती उस समय बिना निमंत्रण के ही अपने पिता के घर जा पहुंचीं थीं। जब वहां पर उन्होंने यह देखा कि उनके पति का अपमान

किया गया है, तो उन्होंने यज्ञ कुण्ड में कूदकर अपने प्राण त्याग दिये। शिवजी को जब यह समाचार मिला तो उन्होंने अपने मुख्य गण वीरभद्र को दक्ष-यज्ञ विध्वंस करने के लिए भेज दिया। वीरभद्र ने जाकर दक्ष के यज्ञ को नष्ट भ्रष्ट कर दिया तथा उसका सिर भी काट गिराया। बाद में देवताओं की प्रार्थना पर शिवजी ने कृपा करके दक्ष के धड़ पर बकरे का धड़ लगा कर उसे पुनः जीवित कर दिया तथा दक्ष ने भी अपने अपराध के लिए शिवजी से बारम्बार क्षमा याचना की।

उन्हीं दक्ष-पुत्री सती ने फिर पर्वत राज हिमालय की पत्नी मैना के गर्भ से 'पार्वती' के रूप में जन्म लिया। बड़ी होने पर उन्होंने सप्तर्षियों का उपदेश मान कर शिवजी की तपस्या की तथा शिवजी द्वारा वर देने के लिए प्रकट होने पर उनसे स्वयं को पत्नी के रूप में ग्रहण करने की प्रार्थना की। फलतः पार्वती जी के साथ शिवजी का दूसरा विवाह हुआ।

भगवती पार्वती के शरीर का वर्ण गौर है। वे शुभ्र वस्त्रों को धारण करती हैं तथा अपने पति भगवान् शिव शङ्कर के साथ कैलाश पर्वत पर ही निवास करती है।

भगवती पार्वती ने ही दुर्गा, चण्डी, काली, अम्बिका आदि विविध रूपों में अवतरित होकर दैत्यों तथा दुष्टों का संहार किया है तथा देवताओं और अपने भक्तों की रक्षा की है। भगवती पार्वती आद्या शक्ति हैं। भगवान् शङ्कर पुरुष पुरातन हैं और वे उनकी परा प्रकृति है। क्वारी कन्याओं द्वारा मनवाञ्छित पति की प्राप्ति के लिए भगवती पार्वती की पूजा-उपासना करने की प्रथा हमारे देश में प्राचीन काल से चली आ रही है। मिथिला नरेश महाराजा जनक की पुत्री सीता जी भी कौमार्य्यावस्था में भगवती पार्वती की उपासना करती

थीं, जिसके फलस्वरूप उन्हें श्री रामचन्द्र जैसे मनोभिलाषित पति की प्राप्ति हुई। भगवती पार्वती स्त्रियों के सुख-सौभाग्य की वृद्धि करने वाली प्रसिद्ध हैं। राजस्थान में गणगौर के रूप में इन्हीं देवी की उपासना का विशेष प्रचलन है।

भगवती पार्वती गजानन गणेश तथा स्वामिकार्तिकेय की माता है। जो लोग पार्वती जी का स्मरण, ध्यान, जप, पूजना, उपासना, आराधना आदि करते हैं, महामाया भगवती को कृपा से उनकी सभी कामनाएं पूर्ण होती है। शिवपुराण तथा अन्यपुराणों में भगवती पार्वती के लीला-चरित्रों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

सामान्य-पूजा-विधि

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर, मन, वचन एवं कर्म की शुद्धि सहित पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, शिखा में गांठ बांधें तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें। फिर इष्ट देवी की मूर्ति, चित्र अथवा प्रतीक को चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर अपने अग्रभाग में स्थापित करें। इस पुस्तक के पांचवें पृष्ठ पर जिस यंत्र को प्रकाशित किया गया है उसे गेहूं के आटे, रोली, हल्दी अथवा चावलों द्वारा देव मूर्ति के सम्मुख चित्रित करें। यदि इस यन्त्र को स्वर्ण, रौप्य अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा लिया जाय तो उसे बारम्बार उपयोग में भी लाया जा सकता है। देव-पूजन के साथ ही यन्त्र-पूजन भी करना चाहिए।

जल पूर्ण पात्र तथा पूजन सामग्री को संकलित कर अपने आसन के समीप ही रख लें तथा इष्टदेवी की मूर्ति के समीप शुद्ध घृत का दीपक प्रज्ज्वलित कर, धूप बत्ती, अगर बत्ती आदि जला दें।

सर्वप्रथम 'स्वस्ति वाचन' का पाठ करें। फिर पवित्रीकरण, आच-

मन, हस्त प्रक्षालन तथा भूत-शुद्धि की क्रियाएं सम्पन्न कर पहले विघ्न-विनाशन आदि पूज्य श्री गणेश जी का ध्यान करें तदुपरान्त 'संकल्प-वाक्य' का उच्चारण करते हुए नीचे लिखे मन्त्रों द्वारा इष्ट देवी का ध्यान तथा यथा-विधि पूजन करें।

पूजा की समाप्ति पर स्तोत्र, कवच, चालीसा आदि का पाठ एवं आरती, प्रदक्षिणा आदि कृत्य करने चाहिये।

स्वस्ति-वाचन

"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाःविश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥१॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयःस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥३॥ ॐअग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रो देवता दित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥४॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष्ँ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः वनस्पतयःशान्तिरेवशान्तिःसामाशान्तिरेधि। ॐविश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ शान्तिः ॥५॥ भवतु ॥"

उक्त 'स्वस्ति वाचन' में जहाँ-जहां ँ इस प्रकार का चिह्न है, वहाँ 'ग्वं' की भांति उच्चारण करना चाहिये । 'स्वस्ति वाचन' के बाद नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जलसे आचमन करें। तथा अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़कें, तत्पश्चात् दोनों हाथों को धो लें। आचमन करते तथा जल छिड़कते समय "ओ३म् केशवाय नमः स्वाहा। ओ३म् नारायणाय नमः स्वाहा। ओ३म् माधवाय नमः स्वाहा।" इन मन्त्रों का उच्चारण करते जाना चाहिये।

पवित्रीकरण का मन्त्र

"ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार जल छिड़ककर आचमन करें तथा हाथ धो डालें।

'पवित्रीकरण' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भूत-शुद्धि' करें ।

भूत-शुद्धि का मन्त्र

"ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥"

'भूत-शुद्धि' के उपरान्त दायें हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प तथा जल लेकर अग्रलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए विघ्न-विनाशन 'श्री गणेश जी का ध्यान' करें—

श्री गणेश ध्यान मन्त्र

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नतस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥"

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर, हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प आदि को श्रीगणेश जी के समीप स्थापित कर, पुनः दायें हाथ में तिल, कुश, जल तथा यज्ञोपवीत लेकर नीचे लिखे 'संकल्प वाक्य' का उच्चारण करें ।

संकल्प वाक्य

"हरिः ॐ तत्सत् । नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे षष्टिसंवत्सराणां मध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने,

'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' वासरे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये चन्द्रे भौमे बुधे बृहस्पतौ शुक्रे शनौ राहौ केतौ एवं गुण विशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोऽत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मादि) ऽहं धर्मार्थ काम मोक्ष हेतवे श्रीगणपति पूजन महं करिष्ये ।"

उक्त संकल्प वाक्य में जहां-जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां क्रमशः विद्यमान, संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिये । ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', वैश्य को 'गुप्तोऽहं' तथा शुद्र को 'दासोऽहं' शब्द का उच्चारण करना चाहिये ।

'संकल्प-वाक्य' के पश्चात् सर्व प्रथम नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपनी इष्ट देवी श्री पार्वतीजी का 'ध्यान' करना चाहिए—

ध्यान के मन्त्र

"वृषभेन्द्रगति वन्दे चन्द्र चूड़ार्द्धहारिणीम् ।
करुणार्द्रदृशन्देवीमन्नपूर्णां गिरीन्द्रजाम् ॥ १ ॥
नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिलघोरपवनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।

आलेपाचवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी ।
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी ॥ २ ॥
त्वं देवि वेदजननी प्रणवस्वरूपा
गायत्र्यसि त्वमसि वै द्विजकामधेनुः ।
त्वं व्याहृतित्रयमिहाऽखिलकर्म्मसिद्ध्यै
स्वाहा स्वधाऽसि सुमनः पितृतृप्ति हेतुः ॥ ३ ॥
त्वमेव विश्वधारिणी त्वमेव विश्वकारिणी
त्वमेव सर्वहारिणी न गम्यसेऽगितात्मभिः ।
दिवौकसा हिते रता करोषि दैत्य नाशनं
शताक्षिरक्तदंतिके नमोऽस्तु ते महेश्वरी ॥ ४ ॥
न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वंत्वमेका भवानि ॥ ५ ॥"

आवाहन का मन्त्र

"आगच्छ वरदे देवि शम्भु अर्द्धाङ्गवासिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये ॥"

उक्त मन्त्र द्वारा भगवती पार्वती का 'आवाहन' करने के पश्चात् उन्हें 'आसन' प्रदान करने के हेतु अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

आसन का मन्त्र

"अनेक रत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'आसन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पाद्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

पाद्य का मन्त्र

"गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाऽऽहृतम् ।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अर्घ्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

अर्घ्य का मन्त्र

"गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया ।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा ।।"

'अर्घ्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमन' के हेतु जल समर्पित करें—

आचमन का मन्त्र

"आचम्यतां त्वया देवि भक्तिं मेह्यचलां कुरु ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ।।"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'स्नान' के हेतु जल का निक्षेप करें—

स्नानीय जल का मन्त्र

"जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम् ।
स्नापयामि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादिफलप्रदाम् ॥"

'स्नानीय-जल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पंचामृत-स्नान' करायें—

पञ्चामृत-स्नान का मन्त्र

"पयोदधि घृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम् ।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे ॥"

'पंचामृत-स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'शुद्धोदक-स्नान' करायें—

शुद्धोदक स्नान का मन्त्र

"परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये ।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमाश ते ॥"

'शुद्धोदक स्नान' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'वस्त्र' समर्पित करें—

वस्त्र का मन्त्र

"वस्त्रं च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम् ।
मया निवेदतं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥"

'वस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'उपवस्त्र' समर्पित करें—

उपवस्त्र का मंत्र

"यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा ।
तस्यै ते परमेशायै कल्पयामुत्तरीयकम् ॥"

'उपवस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'मधुपर्क' समर्पित करें—

मधुपर्क का मन्त्र

"दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम् ।
मधु पर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोमने ॥"

'मधुपर्क' के पश्चात् निम्नखिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'गन्ध' समर्पित करें—

गन्ध का मन्त्र

"परमानन्द सौभाग्य परिपूर्ण दिगन्तरे ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि ॥"

'गन्ध' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'कुंकुम' समर्पित करें—

कुंकुम का मन्त्र

"कुंकुमंकान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुंकुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥"

'कुंकम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आभूषण' समर्पित करें—

आभूषण का मंत्र

"स्वभाव सुन्दराङ्गार्थं नानाशक्त्याश्रिते शिवे ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥"

'आभूषण' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सिन्दूर' समर्पित करें—

सिन्दूर का मन्त्र

"सिन्दूरमरुणाभासं जयाकुसुमसंनिभम् ।
पूजितासि मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥"

'सिन्दूर' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'काजल' समर्पित करें—

कज्जल का मन्त्र

"चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारके ।
कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'काजल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सौभाग्य सूत्र' समर्पित करें—

सौभाग्य सूत्र का मन्त्र

"सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणि संयुते ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा ॥"

'सौभाग्य सूत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'गन्ध द्रव्य' समर्पित करें—

गन्ध द्रव्य का मन्त्र

"चन्दनागुरु कर्पूर कुंकुमं रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपये ॥"

'गन्ध द्रव्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अक्षत' (चावल) समर्पित करें—

अक्षत का मन्त्र

"रञ्जिताः कुंकुमौघेन अक्षताश्चापि शोभनाः ।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्नाभव पार्वती ॥"

'अक्षत' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्प' समर्पित करें।

पुष्प का मन्त्र

"मन्दारपारिजातादिपाटलीकेतकानि च ।
जाती चम्पक पुष्पाणि गृहणेमानि शोभने ॥"

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पमाला' समर्पित करें—

पुष्पमाला का मंत्र

"सुरभिपुष्पनिचयैर्ग्रथितां शुभ मालिकाम् ।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'पुष्पमाला' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'बिल्वपत्र' समर्पित करें—

बिल्वपत्र का मंत्र

"अमृतोद्भव श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा ।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥"

'बिल्वपत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'धूप' समर्पित करें—

धूप का मन्त्र

"दशाङ्ग गुग्गुलं धूपं चन्दना गुरुसंयुतम् ।
समर्पितं मयाभक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम् ॥"

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दीपक' प्रदर्शित करें—

दीपक का मन्त्र

"घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम् ।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा ॥"

'दीपक' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नैवेद्य' समर्पित करें—

नैवेद्य का मन्त्र

"अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भि समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मे ह्यचलां कुरु ॥"

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ऋतु फल' समर्पित करें—

ऋतु फल का मंत्र

"द्राक्षाखर्जूरकदलीपनसाम्रकपित्थकम् ।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥"

'ऋतु फल' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमन' के लिए जल समर्पित करें—

आचमन का मन्त्र

"कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनमम्बिके ।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव शाङ्करी ।।"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अखण्ड ऋतु फल' समर्पित करें—

अखण्ड ऋतु फल का मन्त्र

"नारिकेलं च नारङ्गं कलिङ्गं मञ्चिरं तथा ।
उर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम् ।।"

'अखण्ड ऋतु फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ताम्बूल' समर्पित करें—

ताम्बूल का मन्त्र

"एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः सुष्ठुवासिताम् ।
वीटिकां मुखवासार्थं मर्पयामि सुरेश्वरि ।।"

'ताम्बूल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दक्षिणा' समर्पित करें—

दक्षिणा का मन्त्र

"पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि ।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्।।"

'दक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "नीराजन' आरती करें—

नीराजन का मंत्र

"नीराजनं सुमङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम् ।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि नमोऽस्तुते ॥"

'नीराजन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुये "प्रदक्षिणा' करें—

प्रदक्षिणा का मन्त्र

"नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले ॥"

'प्रदक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दण्डवत्-प्रणाम' निवेदित करें—

प्रणाम का मंत्र

"नमः सर्वहितार्थायै जगदाधार हेतवे ।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मयाकृतः ॥"

'प्रणाम' के पश्चात् आरती, स्तोत्र आदि का पाठ करें। अन्त में निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'विसर्जन' करें—

विसर्जन का मन्त्र

"इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रजस्थान मनुत्तमम् ॥"

॥ इति संक्षिप्त पूजन-विधि ॥

श्री पार्वती प्रातः स्मरण स्तोत्रम्

"चाञ्चल्यारुणलोचनाञ्चित कृपां
चन्द्रार्क चूडामणिं
चारुस्मेरमुखां चराचरजगत्
संरक्षणीं सत्पदाम् ।
चञ्चच्चम्पकनासिकाग्रविलस
न्मुक्तामणीरञ्जितां
श्री शैलस्थलवासिनीं भगवतीं
श्रीमातरं भावये ॥ १ ॥
कस्तूरीतिलकाञ्चितेन्दु विलस
त्प्रोद्भासिभालस्थलीं
कर्पूरद्रवमिश्रचूर्णखदिरा-
मोदोल्लसद्वीटिकाम् ।
लोलापाङ्गतरङ्गितैरधि कृपा-
सारैर्नतानन्दिनी
श्रीशैलस्थलवासिनीं भगवतीं
श्रीमातरं भावये ॥ २ ॥"

॥ इति श्री देव्याः प्रातः स्मरण स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीमङ्गला गौरी स्तोत्रम्

"देवि त्वदीयचरणाम्बुरेणुगौरीं
भालस्थलीं वहति यः प्रणतिप्रवीणः ।

जन्मान्तरेऽपि रजनीकरचारुलेखा
तां गौरयत्यतितरां किल तस्य पुंसः ॥ १ ॥

श्री मङ्गले सकल मङ्गल जन्मभूमे
श्री मङ्गले सकलकल्मषतूलवह्ने ।
श्री मङ्गले सकलदानवदर्पहन्त्रि
श्री मङ्गलेऽखिलमिदं परिपाहि विश्वम् ॥ २ ॥

विश्वेश्वरि त्वमसि विश्वजनस्य कर्त्री
त्वं पालयित्र्यसि तथा प्रलयेऽपि हन्त्री ।
त्वन्नाम कीर्त्तन समुल्लसदच्छपुण्या
स्रोतस्विनी हरति पातककूलवृक्षान् ॥३॥

मातर्भवानि भवती भवतीव्रदुःख
संसारहारिणि शरण्यमिहास्ति नान्या ।
धन्यास्त एव भुवनेषु त एव मान्या
येषु स्फुरेत्तव शुभः करुणा कटाक्षः ॥ ४ ॥

येत्वां स्मरन्ति सततं सहजप्रकाशां
काशीपुरीस्थितिमतीं नतमोक्ष लक्ष्मीम् ।
तान्संस्मरेत्स्मरहरो धृतशुद्धबुद्धीन्
निर्वाणरक्षणविचक्षणपात्रभूतान् ॥ ५ ॥

मातस्तवांघ्रियुगलं विमलं हृदिस्थं
यस्याऽस्ति तस्य भुवनं सकलं करस्थम् ।

यो नाम ते जपति मङ्गलगौरि नित्यं
सिद्ध्यष्टकं न परिमुञ्चति तस्य गेहम् ॥६॥
त्वं देवि वेदजननी प्रणवस्वरूपा
गायत्र्यसि त्वमसि वै द्विजकामधेनुः ।
त्वं व्याहृतित्रयमिहा ऽखिल कर्म्मसिद्ध्यै
स्वाहा स्वधा ऽसि सुमनः पितृतृप्ति हेतुः ॥७॥
गौरी त्वमेव शशिमौलिनि वेधसि त्वं
सावित्र्यसि त्वमसि चक्रिणि चारुलक्ष्मीः ।
काश्यां त्वमस्यमलरूपिणि मोक्षलक्ष्मी
स्त्वं मे शरण्यमिह मङ्गलगौरि मातः ॥८॥
स्तुत्वेति तां स्मरहरार्द्धशरीर शोभां
श्री मङ्गलाष्टकमहास्तवनेन भानुः ।
देवीं च देवमसकृत्परितः प्रणम्य
तूष्णीं बभूवसविता शिवयोः पुरस्तात् ॥९॥"

॥ इति श्री मङ्गलागौरी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीभगवत्याष्टकम्

"नमोस्तु ते सरस्वती त्रिशूल चक्रधारिणी
सितांबरावृत्ते शुभे मृगेन्द्रपीठसंस्थिते ।
सुवर्ण बंधुराधरे सुझल्लरी शिरोरुहे
सुवर्णपद्मभूषिते नमोऽस्तुते महेश्वरी ॥ १ ॥

पितामहादिभिर्नुते स्वकांतिलुप्तचन्द्रभे
सुरत्नमालयावृते भवाब्धिकष्टहारिणि ।
तमालहस्तमंडिते तमालभालशोभिते
गिरामगोचरे इत्थे नमोऽस्तुते महेश्वरी ॥२॥
स्वभक्तवत्सले ऽनघे सदा ऽपवर्गभोगदे
दरिद्र दुःखहारिणी त्रिलोकशंकरीश्वरी ।
भवानी भीम अम्बिके प्रचण्ड तेज उज्ज्वले
भुजाकलापमंडिते नमोऽस्तुते महेश्वरि ॥ ३ ॥
प्रपन्नभीतिनाशिके प्रसूनमाल्यकंधरे
धियस्तमो निवारिके विशुद्ध बुद्धि कारिके ।
सुरार्चितांघ्रि पंकजे प्रचंड विक्रमेक्षरे
विशाल पद्मलोचने नमोऽस्तु ते महेश्वरि ॥४॥
हृतस्त्वया स दैत्यधूम्रलोचनो यदारणे
तदाप्रसून वृष्टयास्त्रविष्टये सुरैः कृताः ।
निरीक्ष्य तत्र ते प्रभामलज्जत प्रभाकर-
स्त्वये दयाकरे ध्रुवे नमोऽस्तुते महेश्वरि ॥५॥
ननाद केशरी यदा चचाल मेदिनी तदा
जगाम दैत्यनायकः स्वसेनयाद्रुतंभिया ।
सकोपकं पदच्छदे सचंडमुंडघातिके
मृगेन्द्रनादनादिते नमोऽस्तु ते महेश्वरी ॥६॥

कुचंवर्नाचितालके सितोष्णवारणाधरे
सवर्वरानने वरे निशुम्भ शुम्भमर्दिके ।
प्रसीद चण्डिके अजे समस्तदोषघातिके
शुभामति प्रदे चले नमोऽस्तु ते महेश्वरी ॥७॥
त्वमेव विश्वधारिणी त्वमेव विश्वकारिणी
त्वमेव सर्वहारिणी न गम्यसे ऽगितात्मभिः ।
दिवौकसा हितेरता करोषि दैत्यनाशनं
शताक्षिरक्तदंतिके नमोऽस्तु ते महेश्वरी ॥८॥
पठंति ये समाहिता इमं स्तवंसदा नारा
अनण्यभक्ति संयुता अहर्मुखेनुवासरम्
भवंति ते तु पंडिताः सुपुत्र धान्य संयुताः
कलत्र भूति संयुता व्रजंति चामृतंसुखम् ॥९॥"
॥ इति श्रीभगवत्याष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्री भवान्यष्टकम्

"न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ १ ॥
भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपातः प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।

कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहम्

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ २ ॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं

न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।

न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ३ ॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं

न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।

न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ४ ॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः

कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।

कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ५ ॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं

दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।

न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ६ ॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे

जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये

अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेकाभवानि ॥ ७ ॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहम्
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥८॥"

॥ इति श्रीभवान्यष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्री पार्वती चालीसा

॥ दोहा ॥

जगदम्बा जगजननि, पार्वती सुखदानि ।
करेहु कृपा जगदीश्वरी, निज सेवक अनुमानि ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय मातु ईश्वरीरूपा ।
हिमगिरिसुता स्वरूप अनूपा ॥
जय शिव की अर्द्धाङ्ग निवासिनि ।
अघहारिणि जय, ज्योति प्रकासिनि ॥
आदिशक्ति तुमही हो माया ।
सेवक हैं तुम्हार सुरराया ॥
तुम दुर्गा चण्डिका भवानी ।
शर्वाणी तुमी तुम अहहु मृडानी ॥
अम्बा जगन्मातु जगजननी ।
कल्याणी तुम अगजग भरणी ॥
जन्मीं प्रथमदक्ष गृह जाई ।
सतीनाम अति सुन्दर पाई ॥

भयेउ शंभु की तुम अर्द्धांगिनि ।
आपुनतेज भुवन विस्तारिनि ॥
दक्ष कीन्ह अतिशय अभिमाना ।
कीन्ह सदाशिव को अपमाना ॥
शिवशंकर कहँ नहीं बुलावा ।
यहि विधि दक्ष सुयज्ञ रचावा ॥
तब तुम पहुँचि पिता घर जाई ।
यज्ञानल महँ देह नसाई ॥
कोपे महारुद्र तब भारी ।
पठये गण अतिशय बलधारी ॥
वीरभद्र मखमण्डप आये ।
सकल सुरन्ह कहँ मारिभगाये ॥
दक्षप्रजापति कर सिर काटा ।
यज्ञ कीन्ह सब बारहबाटा ॥
सब अभिमान दूरि जब गयेऊ ।
दक्ष शंभु शरणागत भयेऊ ॥
प्रकटे आशुतोष तेहि काला ।
अभयदान पुनि दीन्हकृपाला ॥
जीवनदान दक्ष कहँ दीन्हा ।
यहि विधि चरित अनूपम कीन्हा ॥
सती हिमाचल घर पुनि जाई ।
प्रगटीं गिरिजा नाम सुहाई ॥

पार्वती जग जाँह बखानी ।
सो पुनि तप करि भईं भवानी॥
गिरिजा संग ब्याह शिव कीन्हा ।
निज अर्द्धाङ्ग सुआसन दीन्हा ॥
यहि विधि चरित अनेक अपारा ।
कीन्हे जगत सुयश विस्तारा ॥
भूतेश्वरी नाम तव पावन ।
कोटि कोटि अघ ओघ नसावन ॥
दुर्गा चण्डी काली तारा ।
बगलामुखी चरित्र अपारा ॥
यह सब तुम्हरे रूप सुहावन ।
एक एक तें अतिशय पावन ॥
असुर संहारि देव सब तारे ।
जीव जगत के किये सुखारे ॥
पूजहिं तुमहिं देव दिन राती ।
पावहिं मनइच्छा सब भांती ॥
कन्या पूजन करहि जो कोई ।
मनवांछित पति पावै सोई ॥
पूजन कीन्हो जनक दुलारी ।
रामचन्द्र पाये सुखकारी ॥
देवि तुम्हार रूप मनभावन ।
परम सुहावन अतिशयपावन ॥
दो भुज चार अष्ट भुज धारी ।
दशभुज अष्टादश भुज भारी ॥

विविधरूप धरि किये चरित्रा ।
सकल एक ते एक विचित्रा ।।
शिव संग बास करहु कैलासा ।
अखिल भुवन महँ तेज प्रकासा ।।
नन्दी भृंगी भूत प्रेत गण ।
चरणरेणु पावहि अतिपावन ।।
सब पर कृपा करहु तुम माता ।
अखिल भुवन तव यश विख्याता ।।
तुम्हरी कृपा पाइ फल चारी ।
होंहि जगत के जीव सुखारी ।
पुत्र षडानन और गजानन ।
सेवा करहिं परम मनभावन ।।
सनकादिक ब्रह्मादि अहीशा ।
सेवक अहहिं तुम्हारे ईशा ।।
महाशक्ति तुम अति कल्याणी ।
तुम लक्ष्मी तुम ही ब्रह्माणी ।।
मातु शरण महँ मो कहँ लीजै ।
सब अपराध बिसारि पसीजै ।।
मैं बालक तुम जग की त्राता ।
आशिष देहु सदा तुम माता ।।
जो यह पाठ करै चालीसा ।
तापर कृपा करहिं गौरीशा ।।

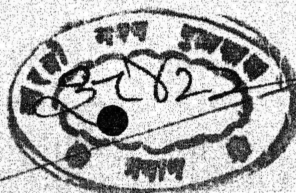
।। दोहा ।।

जय गिरिजा जयईश्वरी, जय जय जय जगदम्ब ।
चरण शरणमँह दास है, देहु मातु अवलम्ब ।।

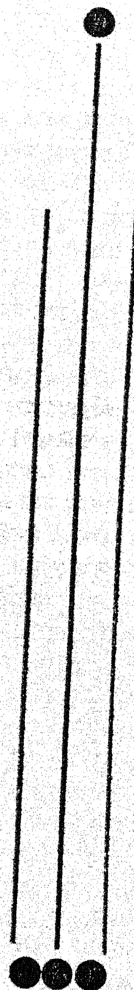
।। इति श्री पार्वती चालीसा सम्पूर्णम् ।।

श्री पार्वती जी की आरतो

जय पार्वती माता, जय पार्वती माता ।
ब्रह्म सनातन देवी, शुभफल की दाता ।। जय ।।
अरि कुल पद्म विनासिनि, जय सेवक त्राता ।
जगजीवन जगदम्बा, हरिहरगुण गाता ।। जय ।।
सिंह को वाहन साजे, कुण्डल है साथा ।
देववधू जहँ गावत, नृत्य करत ताथा ।। जय ।।
सतयुग रूपशील अति सुन्दर नाम सती कहलाता ।
हेमांचल घर जन्मीं, सखियन संगराता ।। जय ।।
शुम्भ निशुम्भ बिदारे, हेमांचल स्थाता ।
सहसभुजा तन धरिके,चक्र लियो हाथा ।। जय ।।
सृष्टिरूप तुही है जननी, शिव संग रंगराता ।
नन्दी भृंगी बीन बजाता, सारा मदमाता ।।जय।।
देवन अरज करत हम, चित्त चरण लाता ।
गावत दे दे ताली, मन में रंगमाता ।। जय ।।
श्रीप्रताप आरती मैया की, जो कोई गाता ।
सदा सुखी नित रहता, सुख सम्पति पाता ।।जय।।



श्री सरस्वती आराधना





राजेश दीक्षित

श्री सरस्वती आराधना

[श्री सरस्वती-चरित्र, पूजा-उपासना विधि, यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, आरती, चालीसा आदि समन्वित अत्युपयोगी पुस्तक]

राजेश दीक्षित



देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : 265403, 264191, 261030

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

लेखक
राजेश दीक्षित

मूल्य
स्वदेश में : डेढ़ रुपया
विदेश में : चार शिलिंग

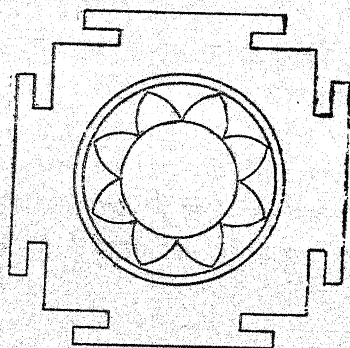
मुद्रक
टेक्निकल प्रिंटिंग प्रेस,
सोनीपत (निकट दिल्ली) हरयाणा

प्रत्येक का मूल्य ६.००

१. गणेश उपासना
२. लक्ष्मी उपासना
३. राम उपासना
४. कृष्ण उपासना
५. हनुमान उपासना
६. दुर्गा उपापना
७. विष्णु उपासना
८. शिव उपासना
९. काली उपासना
१०. भैरव उपासना
११. गायत्री उपासना
१२. सरस्वती उपासना
१३. ओ३म् उपासना
१४. वैष्णो उपासना
१५. गगा उपासना
१६. गौरापार्वतीउपासना
१७. अष्टदेव आराधना
१८. अष्टदेवी आराधना
१९. कबीर उपासना
२०. मातभवानी शक्ति
२१. गायत्री शक्ति
२२. योग शक्ति
२३. साधना शक्ति
२४. ओ३म शक्ति
२५. दुर्गा शक्ति
२६. देवी-देव की आरती
२७. बड़ा भक्ति सागर
२८. हनुमान जीवन-चरित्र
२९. प्राचीन ब्रह्मज्ञान भजन
३०. १२ महीने व्रत-त्यौहार
३१. पंचतन्त्र
३२. शिव लीलामृत
३३. सरल भागवत
३४. दृष्टान्त सागर
३५. दुर्गा भाषा

संक्षिप्त श्री सरस्वती-चरित्र

भगवती सरस्वती प्रजापिता ब्रह्मा की पुत्री हैं। ये विद्या एवं कला की अधिष्ठातृ देवी हैं। इनके शरीर का वर्ण गौर है, इनके चार भुजाएं हैं, जिनमें ये क्रमशः वीणा, दण्ड, माला तथा अभय मुद्रा



श्री सरस्वती पूजन यन्त्र

धारण किये रहती हैं। इनका आसन श्वेत पद्म है तथा वाहन हंस है। ये श्वेत वस्त्रों को धारण करती हैं।

भगवती सरस्ती की आराधना से विद्या एवं बुद्धि की प्राप्ति सहजता से हो जाती है, अतः विद्यार्थियों के लिए महामाया सरस्वती से बढ़ कर आराध्य और कोई नहीं है।

कहा जाता है कि कवि-कुल-गुरु कालिदास प्रारंभ में एक अपढ़ तथा मूर्ख व्यक्ति थे। विद्योत्तमा नामक एक राजकुमारी ने अपनी

विद्वता के घमण्ड में भरकर यह प्रतिज्ञा कर रक्खी थी कि जो व्यक्ति उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा, उसी के साथ वह अपना विवाह करेगी।

राजकुमारी विद्योत्तमा के रूप, लावण्य, सौन्दर्य एवं विद्या-बुद्धि की प्रशंसा सुन कर अनेक विद्वान् विवाह करने की इच्छा लेकर शास्-त्रार्थ के लिए उसके पास गये, परन्तु राजकुमारी ने अपने वाणी-विलास द्वारा उन सब को पराजित कर दिया। फलतः एक बार कुछ दुष्ट ब्राह्मणों ने अपने मनमें यह विचार किया कि इस घमण्डिन राज-कुमारी को दण्ड देने के लिए इसका विवाह किसी बज्र मूर्ख व्यक्ति के साथ करा देना चाहिए, ताकि यह जीवन भर पछताती रहे। यह निश्चय करके वे लोग किसी मूर्ख व्यक्ति की तलाश में निकले। एक स्थान पर उन्होंने यह देखाकि एक व्यक्ति वृक्ष की जिस डाली पर बैठा है, कुल्हाड़ी द्वारा उसी को काट रहा है। उसे इतना भी ज्ञान नहीं है कि जब डाली कट कर नीचे गिरेगी, तब उसका भी प्राणान्त हो जायगा। अस्तु, उस व्यक्ति को महामूर्ख समझ कर उन्होंने उसे आग्रह करके वृक्ष से नीचे उतारा, तत्पश्चात् वे उसे राजकुमारी के के साथ विवाह कराने का लालच देकर तथा अच्छे २ वस्त्र पहना कर राज सभा में ले गये। उन्होंने उसे पहले से ही यह भी समझा दिया था कि तुम राजकुमारी के किसी प्रश्न का उत्तर बोल कर मत देना, कभी चाहो तो कोई संकेत भले ही कर देना। हम लोग स्वयं तुम्हारे संकेत की शाब्दिक व्याख्या कर दिया करेंगे। पण्डितों के इस छल-प्रपंच में पड़कर विद्वान राजकुमारी शास्त्रार्थ के समय उस मूर्ख-राज के समक्ष पराजित घोषित कर दी गई, फलतः उस बेचारी को उस मूर्ख की पत्नी बनने के लिए ही विवश होना पड़ा।

विवाहोपरान्त जब उसे यह ज्ञात हुआ कि पण्डितों ने उसके साथ धोखा किया है तब उससे मूर्ख पति को अपने घर से निकाल दिया। परन्तु उस मूर्ख व्यक्ति के मन में पत्नी का यह व्यवहार चुभ गया और

उसने विद्या-प्राप्ति के लिए भगवती सरस्वती की आराधना की, फल-स्वरूप कुछ ही समय बाद वह महापण्डित एवं परम विद्वान कवि-कुल गुरु कालिदास के रूप में विश्व प्रसिद्ध हुआ।

भगवती सरस्वती की उपासना-आराधना का ऐसा ही सुफल प्राप्त होता है। वसन्त पञ्चमी के दिन महामाया सरस्वती की पूजा विशेष रूप से की जाती है। सरस्वती के उपासक सहज में ही विद्वान बन जाते हैं।

सामान्य पूजा-विधि

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर, मन, वचन एवं कर्म की शुद्धि सहित पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, शिखा में गांठ बांधें तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें। फिर इष्ट देवी की मूर्ति, चित्र अथवा प्रतीक को चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर, अपने अग्रभाग में स्थापित करें। इस पुस्तक के पांचवें पृष्ठ पर जिस यन्त्र को प्रकाशित किया गया है, उसे गेहूं के आटे, रोली, हल्दी तथा चावलों के द्वारा देवी की मूर्ति के सम्मुख चित्रित करें। यदि इस यन्त्र को स्वर्ण, रौप्य अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा लिया जाय तो उसे बारम्बार उपयोग में भी लाया जा सकता है। देवी-पूजन के साथ ही यन्त्र-पूजन भी करना चाहिये।

जल पूर्ण पात्र तथा पूजन-सामग्री को संकलित करके अपने आसन के समीप ही रख लें तथा इष्ट देवी की मूर्ति के समीप शुद्ध घृत का दीपक प्रज्ज्वलित कर, धूप बत्ती, अगर बत्ती आदि जला दें।

सर्व प्रथम 'स्वस्ति वाचन' का पाठ करें। फिर पवित्रीकरण, आच-

मन, हस्त-प्रक्षालन तथा भूत शुद्धि की क्रियाएं सम्पन्न कर, पहले विघ्न-विनाशन आदि पूज्य श्री गणेश जी का ध्यान करें, तदुपरान्त 'संकल्प-वाक्य' का उच्चारण करके नीचे लिखे अनुसार मन्त्रों द्वारा इष्ट देवी का ध्यान तथा यथाविधि पूजन करें।

पूजा की समाप्ति पर स्तोत्र, कवच, चालीसा आदि का पाठ एवं आरती, प्रदक्षिणा आदि कृत्य करने चाहिए।

स्वस्ति वाचन

"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाः विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोवृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥३॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रोदेवता दित्यादेवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ४ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथ्वीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि। ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव। शान्तिः ॥ ५ ॥भवतु॥

उक्त 'स्वस्ति वाचन' को जहां-जहां ँ इस प्रकार का चिह्न है, वहां 'ग्वं' की भांति उच्चारण करना चाहिए । 'स्वस्ति वाचन' के बाद आगे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल से आचमन करें तथा अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़कें । तत्पश्चात् दोनों हाथों को धो लें । आचमन करते तथा जल छिड़कते समय **'ओ३म् केशवाय नमः स्वाहा । ओ३म् नारायणाय नमः स्वाहा । ओ३म् माधवाय नमः स्वाहा ।'** इन मन्त्रों का उच्चारण करते जाना चाहिए ।

पवित्रीकरण का मन्त्र

" ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार जल छिड़क कर आचमन करें तथा हाथ धो डालें ।

'पवित्रीकरण' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भूत शुद्धि' करें—

भूत शुद्धि का मंत्र

"ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता ।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।"

'भूत शुद्धि' के उपरान्त दाएं हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प तथा जल

लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए विघ्न विनाशन 'श्री गणेश जी का ध्यान' करें—

श्री गणेश ध्यान मंत्र

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगजकर्णक: ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक: ।।
धूम्रकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन: ।
द्वादशै तानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि ।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्न तस्य न जायते ।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ।।"

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर हाथ के दूर्वा, अक्षत, पुष्प आदि को श्री गणेश जी के समीप स्थापित कर पुन: दाएं हाथ में तिल, कुश, जल, अक्षत तथा यज्ञोपवीत लेकर नीचे लिखे 'संकल्प वाक्य' का उच्चारण करें—

सङ्कल्प वाक्य

"हरि: ॐ तत्सत् । नम: परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्‌भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैव-

स्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे षष्टिसंवत्सराणांमध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये, चन्द्रे, भौमे, बुधे, वृहस्पतौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुणविशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मा आदि) ऽहं धर्मार्थकाममोक्षहेतवे श्रीगणपत्यादि श्री कृष्णचन्द्रस्य पूजनमहं करिष्ये।"

उक्त 'संकल्प वाक्य' में जहां-जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां क्रमशः विद्यमान संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिये। ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', 'वैश्य को गुप्तोऽहं' तथा शूद्र को 'दासोऽहं,' शब्द का उच्चारण करना चाहिये।

'संकल्प-वाक्य' के पश्चात् सर्व प्रथम नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने इष्ट देवी श्री सरस्वती जी का 'ध्यान' करना चाहिए।

ध्यान के मंत्र

"या कुन्देन्दु तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।

या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥१॥
आशासु राशीभवदङ्गवल्ली
भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम् ।
मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासन सुन्दरि त्वाम् ॥२॥
शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥३॥
वीणाधरे विपुलमङ्गलदानशीले
भक्तार्तिनाशिनि विरञ्चिहरीशवन्द्ये ।
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥ ४ ॥
सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने ।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तुते ॥५॥"

आवाहन का मंत्र

"सर्वलोकस्य जननी वीणा पुस्तक धारिणी ।
सर्वदेवमयीमीशा देव्यामावाहयाम्यहम् ॥"

इस मन्त्र द्वारा 'भगवती सरस्वती' का आवाहन कर, निम्न-लिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आसन' प्रदान करें—

आसन का मंत्र

"कुन्देन्दीवरवर्णाभं मुक्तामणि विराजितम् ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'आसन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पाद्य' के निमित्त जल छोड़ें—

पाद्य का मंत्र

"गङ्गादितीर्थ सम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतं ।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमो ऽस्तुते ॥"

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'अर्घ्य' के निमित्त जल छोड़ें—

अर्घ्य का मंत्र

"अष्टगंध समायुक्तं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।
अर्घ्यं गृहाणमद्दत्तं शारदायै नमोऽस्तुते ॥"

'अर्घ्य' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमन' के निमित्त जल छोड़ें—

आचमन का मंत्र

"सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्माविष्णुदिभिःस्तुते ।
ददाम्याचमनं तस्यै सरस्वत्यै मनोहरम् ।।"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'स्नान' जल के लिए जल छोड़ें—

स्नान का मन्त्र

"मन्दाकिन्याः समानीतैहेमाम्भोरुहवासितैः ।
स्नानं कुरुष्व देवेशि सललैश्च सुगन्धिभिः ।।"

'स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "पञ्चामृत स्नान' करायें—

पञ्चामृत स्नान का मन्त्र

"पञ्चामृतसमायुक्तं जाह्नवी सलिलं शुभम् ।
गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले ।।"

'पञ्चामृत स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'शुद्ध जल' से स्नान करायें—

शुद्धोदक स्नान का मन्त्र

"तोयं तव महादेवि कर्पूरागरुवासितम् ।
तीर्थेभ्यं सुसमानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'शुद्धोदक स्नान' के निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'वस्त्र' समर्पित करें—

वस्त्र का मन्त्र

"दिव्याम्बरं नूतनंहि क्षोमंत्वति मनोहरम् ।
दीयमानं मयादेवि गृहाण जगदम्बिके ॥"

'वस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'उपवस्त्र' समर्पित करें—

उपवस्त्र का मन्त्र

"कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नाना रत्नैः समन्वितम् ।
गृहाण त्वं मयाद्दत्तं मङ्गले जगदीश्वरि ॥"

'उपवस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'मधुपर्क' समर्पित करें—

मधुपर्क का मन्त्र

"कापिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतं ।
स्वर्णपात्रस्थितं चापि मधुपर्कं गृहाण मे॥"

'मधुपर्क' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आभूषण' समर्पित करें—

आभूषण का मन्त्र

"स्वभाव सुन्दराङ्गार्थैं नानाशक्त्याश्रिते शुभे ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥"

'आभूषण' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'गन्ध' समर्पित करें—

गंध का मंत्र

"श्रीखण्डागरुकर्पूर मृगनाभि समन्वितम् ।
विलेपनं महादेवि तुभ्यदास्यामि भक्तितः ।।"

'गन्ध' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'श्वेत चन्दन' समर्पित करें—

श्वेत चन्दन का मन्त्र

"श्वेतचन्दन संमिश्र पारिजात समुद्भवम् ।
मयादत्तं गृहाणाशु चन्दनं गंधसंयुतम् ।।"

'श्वेतचन्दन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सिन्दूर' समर्पित करें—

सिन्दूर का मंत्र

"सिन्दूरं रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलक प्रिये ।
भक्त्यादत्तं मयादेवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'सिन्दूर' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'कुंकुम' समर्पित करें—

कुंकुम का मन्त्र

कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम् ।
अखंडकाम सौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'कुंकुम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए अक्षत (चावल) समर्पित करें—

अक्षत का मन्त्र

"अक्षतान्निर्मलां शुद्धान् मुक्तामणि समन्विताम् ।
गृहाणाशुमहादेवि देहि मे निर्मलांधियम् ॥"

'अक्षत' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्प' समर्पित करें—

पुष्प का मंत्र

"मन्दारपारिजाताद्याः पाटलौ केतकीतथा ।
मरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमोनमः ॥"

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पमाला' समर्पित करें—

पुष्पमाला का मन्त्र

"पद्मशंखजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाणत्वं सुरेश्वरि॥"

'पुष्पमाला' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दूर्वा' समर्पित करें—

दूर्वा का मंत्र

"विष्ण्वादि सर्वदेवानां प्रियां सर्व सुशोभनाम् ।
क्षीरसागरसम्भूतां दूर्वां स्वीकुरु सर्वदा ॥"

'दूर्वा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अबीर-गुलाल' समर्पित करें—

अबीर गुलाल का मन्त्र

"अबीरं च गुलालं च चोबा चन्दनमेव च ।
अबीरेणार्चिता देवी ह्यतः शान्ति प्रयच्छ च ॥"

'अबीर-गुलाल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सुगंधित तेल' (इत्र आदि) समर्पित करें—

सुगंधित तेल का मन्त्र

"स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि दयानिधे ।
सर्वलोकस्य जननी ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥"

'सुगंधित-तेल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते 'धूप' समर्पित करें—

धूप का मन्त्र

"वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यः गन्धउत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दीपक' प्रदर्शित करें—

दीपक का मन्त्र

"साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निनायोचितं मया ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'दीपक' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नैवेद्य' सर्मापित करें।

नैवेद्य का मन्त्र

"नैवेद्यं गृह्यतांदेवि भक्ष्यभोज्य समन्वितम् ।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं सरस्वत्यैः नमोऽस्तुते ॥"

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ऋतु फल' प्रदान करें—

ऋतु फल का मंत्र

"फलेन फलितं सर्वत्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥"

'ऋतु फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमनीय जल' प्रदान करें—

आचमनीय का मन्त्र

"शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितं ।
आचम्यता मिदं देवी प्रसीद त्वां सुरेश्वरि ॥"

'आचमनीय' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अखण्ड ऋतु फल' समर्पित करें—

अखण्ड ऋतुफल का मन्त्र

"इदं फलं मयाऽनीतं सरसं च निवेदितम् ।
ग्रहाण परमेशानि प्रसीद प्रणमाम्यहम् ॥"

'अखण्ड ऋतु फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ताम्बूल' समर्पित करें—

ताम्बूल का मन्त्र

"एलालवङ्ग कर्पूर नागपत्रादिभिर्युतम् ।
पूंगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'ताम्बूल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दक्षिणा' समर्पित करें—

दक्षिणा का मन्त्र

"हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्य फलद मतः शान्ति प्रयच्छ मे।।"

'दक्षिणा' के पश्चात् पुष्प हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'पुष्पांजलि' समर्पित करें—

पुष्पांजलि का मन्त्र

"शारदाशारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।।
सरस्वती महादेवि ज्ञानमार्ग प्रदर्शिनि ।
ज्ञानवन्तं कुरुष्वैव मा विलम्बेन सर्वतः ।।"

'पुष्पांजलि' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'प्रदक्षिणा' करनी चाहिए। प्रदक्षिणा पुष्पांजलि से पहले भी की जा सकती है।

प्रदक्षिणा का मन्त्र

"नमस्ते देवि देवेशि नमस्तेईप्सितप्रदे ।
नमस्ते जगतांधात्रि नमस्ते भक्तवत्सले ॥"

'प्रदक्षिणा' के पश्चात् स्तोत्र, आरती आदि का पाठ करना चाहिए। सबके अन्त में, निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवी का 'विसर्जन' करना चाहिए—

विसर्जन का मंत्र

"इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्थानमनुत्तमम् ॥"

॥ इति संक्षिप्त पूजा-विधि ॥

श्री सरस्वती स्तोत्रम्

"या कुन्देन्दुतुषार हारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता ।
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना॥
या ब्रह्माच्युतशङ्कर प्रभृतिभिर्देवैः सदावन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥१॥
आशासु राशीभवदङ्गवल्ली
भासैवदासीकृतदुग्धसिन्धुम् ।
मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासनसुन्दरि त्वाम् ॥ २ ॥

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे ।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ॥ ३ ॥

सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृ देवताम् ।
देवत्वं प्रतिपद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः ॥ ४ ॥

पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती ।
प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या ॥ ५ ॥

शुक्लां ब्रह्म विचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिक मालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥६॥

वीणाधरे विपुलमङ्गलदानशीले
भक्तार्तिनाशिनि विरञ्चिहरीशवन्द्ये ।
कीर्तिप्रदेऽखिल मनोरथदे महार्हे
विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम् ॥७॥

श्वेताब्जपूर्णविमलासनसंस्थिते हे
श्वेताम्बरावृतमनोहरमञ्जुगात्रे ।
उद्यन्मनोज्ञसितपङ्कजमञ्जुलास्ये
विद्याप्रदायिनी सरस्वति नौमि नित्यम्॥८॥

मातस्त्वदीयपदपङ्कजभक्तियुक्ता
ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय ।

ये निर्जरत्वमिह यान्ति कलेवरेण
भूवह्निवायुगगनाम्बुविनिर्मितेन ॥ ९ ॥

मोहान्धकार भरिते हृदये मदीये
मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे ।
स्वीयाखिलावयवनिर्मलसुप्रभाभिः
शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम् ॥१०॥

ब्रह्माजगत् सृजति पालयतीन्दिरेशः
शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः ।
न स्यात्कृपा यदि तव प्रकट प्रभावे
न स्युः कथञ्चिदपि ते निजकार्यदक्षाः॥११॥

लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिर्गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः ।
एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मां सरस्वति ॥ १२ ॥

सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः ।
वेदवेदान्तवेदाङ्गविद्यास्थानेभ्य एव च ॥ १३ ॥

सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने ।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तुते ॥ १४ ॥

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥ १५ ॥"

॥ इति श्री सरस्वती स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्री सरस्वती स्तोत्रम्

"श्री गणेशायनमः। ॐ अस्य श्री सरस्वतीस्तोत्र मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री सरस्वती देवता। धर्मार्थ काममोक्षार्थे जपे विनियोगः।

आरूढाश्वेतहंसे भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं
वामे हस्ते च दिव्याम्बर कनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्या।
सा वीणां वादयन्ती स्वकरकटजपैः शास्त्रविज्ञान शब्दैः
क्रीडन्ती दिव्यरूपा कर कमल धरा भारती सुप्रसन्ना॥१॥
श्वेतपद्मासना देवी श्वेतगन्धानुलेपना।
अर्चिता मुनिभिः सर्वैर्ऋषिभिः स्तूयते सदा।
एवं ध्यात्वा सदा देवीं वांछितं लभते नरः॥ २॥
शुक्लां ब्रह्म विचारसार परमा
माद्यांजगद् व्यापिनी।
वीणापुस्तक धारिणीमभयदां
जाड्यान्धकारापहाम्॥
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं
पद्मासने संस्थितां।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं
बुद्धिप्रदां शारदाम्॥ ३॥
या कुन्देन्दु तुषारहारधवला
या शुभ्रवस्त्रावृता।

या वीणावरदण्ड मंडितकरा
या श्वेतपद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभि
र्देवैः सदा वंदिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती
निश्शेष जाड्यापहा ॥ ४ ॥
ह्रीं ह्रीं हृद्यैकबीजे शशिरुचि कमले
कल्पविस्पष्टशोभे ।
भव्ये भव्यानुकूले कुमतिवनदवे
विश्ववंद्यांघ्रिपद्मे ॥
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणतजनमनो
मोद संपादयित्री ।
प्रोत्फुल्लज्ञानकूटे हरिनिजदयिते
देवि संसार सारे ॥ ५ ॥
ऐं ऐं ऐं दृष्टमन्त्रे कमलभवमुखा-
म्भोजभूते स्वरूपे ।
रूपारूप प्रकाशे सकलगुणमये
निर्गुणे निर्विकारे ॥
न स्थूले नैव सूक्ष्मे ऽप्यविदितविभवे
नापि विज्ञान तत्त्वे ।

विश्वे विश्वांतरात्मे सुरवर नमिते
निष्कले नत्यशुद्धे ॥ ६ ॥
ह्रीं ह्रीं ह्रीं जाप्यतुष्टे हिमरुचि मुकुटे
वल्लकीव्यग्रहस्ते ।
मातर्मातर्नमस्ते दहदह जडता
देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् ॥
विद्ये वेदांत वेद्ये परिणतपठिते
मोक्षदे मुक्तिमार्गे ।
मार्गातीतस्वरूपे भवमम वरदा
शारदे शुभ्रहारे ॥ ७ ॥
धीं धीं धीं धारणाख्ये धृतिमतिनतिभि
र्नामभिः कीर्तनीये ।
नित्ये ऽनित्ये निमित्ते मुनिगणनमिते
नूतने वै पुराणे ।
पुण्ये पुण्ये प्रवाहे हरिहर नमिते
नित्यशुद्धे सुवर्णे
मातर्मात्रार्धतत्त्वे मतिमति मतिदे
माधवप्रीति मोदे ॥ ८ ॥
ह्रूं ह्रूं ह्रूं स्वस्वरूपे दह दह दुरितं
पुस्तकं व्यग्रहस्ते ।
संतुष्टाकारचित्तेस्मितमुखिसुभगे
जृम्भिणि स्तम्भविद्ये ।

मोहे मुग्ध प्रवाहे कुरु मम विमति
ध्वान्तविध्वंसमीडे ।
गीगौंर्वाग्भारतित्वं कविवर रसना
सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये ॥ ९ ॥
स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम खलु रसनां
नो कदाचित्त्यजेथा ।
मामे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न चमनो
देवि मे यातु पापम् ॥
मा मे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि विषये
ऽप्यस्तु मे नाकुलत्वं
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धी-
र्मास्तु कुण्ठा कदापि ॥ १० ॥
इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि
स्तौति यो भक्तिनम्रो ।
वाणीं वाचस्पतेण्य विदित विभवो
वाक्पटुर्मृष्टकण्ठः ॥
सः स्यादिष्टार्थ लाभैः सुतमिव सततं
पातितं सा च देवी ।
सौभाग्यं यस्य लोके प्रभवति कविता
विघ्नमस्तं प्रयाति ॥ ११ ॥
निर्विघ्नं तस्यविद्या प्रभवति सततं
चाश्रुतग्रंथबोधः

कीर्तिस्त्रैलोक्यमध्येनिवसति वदने
शारदा तस्य साक्षात् ।
दीर्घायुर्लोकपूज्यः सकल गुणनिधिः
संततं राजमान्यो
वाग्देव्याः संप्रसादात्त्रिजगतविजयी
जायते सत्सभासु ॥ १२ ॥

ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यां निरामिषः ।
सारस्वतो जनं पाठात्सकृदिष्टार्थं लाभवान् ॥ १३ ॥

पक्षद्वये त्रयोदश्यामेकविंशति संख्यया ।
अविच्छिन्नः पठेद्धीमान्ध्यात्वादेवी सरस्वतीम् ॥१४॥

सर्वपाप विनिर्मुक्तः सुभगो लोक विश्रुतः ।
वांछितं फलमाप्नोति लोकेऽस्मिन्नात्र संशय ॥ १५ ॥

ब्रह्मणेति स्वयं प्रोक्तः सरस्वत्याः स्तवं शुभं ।
प्रयत्नेन पठेन्नित्यं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १६ ॥"

॥ इति श्री सरस्वती स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्री सरस्वती चालीसा

॥ दोहा ॥

जय जय मातु सरस्वती, बुधि विद्या की खानि ।
हंसवाहिनी अम्बिके, जय जय वीणापाणि ॥

॥ चौपाई ॥

जय श्री सकल बुद्धि बल रासी ।
जय सर्वज्ञा जय अविनासी ॥

जय जय जय वीणा करधारिणि ।
हंसवाहिनी जय मृदु हासिनि ॥
रूप चतुर्भुज तुम्हरो माता ।
तीनि लोक महँ तुम विख्याता ॥
बाल्मीकि रह अत्याचारी ।
तुम्हरी कृपा भये कविभारी ॥
कालिदास भे अतिविख्याता ॥
तुम्हरी दया अहै सब माता ॥
तुलसी सूर आदि विद्वाना ।
तुम्हरो सुयश सदैव बखाना ॥
शरदइन्दु सम वदन तुम्हारो ।
रूप चतुर्भुज अतिशय प्यारो ॥
कोटि सूर्य सम तन द्युति पावन ।
राजहंस तुम्हरो शुचि वाहन ॥
कानन कुण्डल लोल सुहावहिं ।
उरमणिमाल अनूप दिखावहिं ।
वीणापुस्तक अभय धारिणी ।
जगन्मातु तुम जग विहारिणी ॥
ब्रह्मासुता अखण्ड अनूपा ।
तुम्हरे गुण गावत सुरभूपा ॥
हरिहर करहिं तुम्हरो वन्दन ।
वरुण कुबेर करहिं अभिनन्दन ॥
मधु कैटभ की मति हरि लीन्हीं ।
पल महँ बधकरि तुम गति दीन्हीं ॥

तुमही रूप पार्वती धारेउ ।
दुर्गा रूप असुर संहारेउ ॥
काली रूप अनूप बनावा ।
रक्तबीज कहँ धरणि गिरावा ॥
आदि शक्ति तुम प्रगट भवानी ।
चराचर स्वामिनि कल्याणी ॥
तुम्हरो नाम जपै जो कोई ।
विद्या बुद्धि पाव जन सोई ॥
तुम साहित्य सरोवर वासिनि ।
ललित कला संगीत प्रकासिनि ॥
चारु कल्पनाशीला माया ।
करहु सदा सेवक पर दाया ॥
सरस्वती पूजन जो करहीं ।
निश्चय ते भवसागर तरहीं ॥
विद्या बुद्धि मिलहि सुखदानी ।
जय जय जय शारदा भवानी ॥
तुम्हरी कृपा मिटहि सब पीरा ।
सेवक होंहि तुम्हारे धीरा ।
तुम जननी ब्रह्माण्ड निवासिनी ।
सत रज तम गुण तीनि प्रकासिनि ॥
जगदम्बा तुम अगजग भरणी ।
बुद्धि विधातृ सुमंगल करणी ॥
दुःख दरिद्र सब जाहि नसाई ।
तुम्हरी कृपा न कछु कहि जाई ॥

परम पुनीत जगत आधारा ।

मातु अहै शुचि ज्ञान तुम्हारा ॥

सनकादिक नित गुण गण गावहिं ।

नारद मुनि तव सुयश सुनावहिं ॥

जा पर कृपा तुम्हारी होई ।

ता पर कृपा करहिं सब कोई ॥

शुभ्रवसन कर राजत कंगन ।

कटि किंकणी मधुर नूपुर स्वन ॥

आदिशक्ति तुम परम सयानी ।

महिमा वेद पुराण बखानी ॥

जगमंगल कर्त्री दुःख हर्त्री ।

सृष्टिस्वरूपा पालन कर्त्री ॥

तुम माया तुम प्रकृति सनातन ।

आदि सृष्टि तुम अतिशय पावन ॥

देवदनुज आरती उतारहिं ।

जय जय जयजय मातु उचारहिं ॥

तुम्हरी कृपा मिलहि शुचि ज्ञाना ।

होइ सकल बिधि अति कल्याना ॥

मैं सेवक तुमही हो माता ।

सुयश तुम्हार भुवन विख्याता ॥

सब अपराध क्षमा करि दीजै ।

मातु शरण मो कहँ तुम लीजै ॥

जो जन सेवा करहिं तुम्हारी ।

तिन कहँ कतहुं नाहिं दुःख भारी ॥

जो यह पाठ करै चालीसा ।

तापर कृपा करहिं जगदीसा ॥

॥ दोहा ॥

जय शारद जय सरस्वती, जय माता जगदम्ब ॥
दीन जानि कीजै कृपा, देहु दया अवलम्ब ॥

॥ इति श्री सरस्वती चालीसा सम्पूर्णम् ॥

श्री सरस्वती जी की आरती

जय सरस्वती माता, जय सरस्वती माता ।
विद्या बुद्धि प्रदायक, तुम हो सुखदाता ॥ जय० ॥
कुन्द इन्द्र सम शोभा तन की ज्योति झरे ।
जो सेवक बनि आये, सब भंडार भरे ॥ जय० ॥
बीणा दण्ड कमण्डलु माला कर सोहै ।
हंसवाहिनी देवी, त्रिभुवन मन मोहै ॥ जय० ॥
श्वेत स्वरूपा सुन्दरि, श्वेत वस्त्र धारी ।
श्वेत पद्म पर बैठीं, सबको सुखकारी ॥ जय० ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, इन्द्र आदि देवा ।
सनकादिक औ नारद, सदा करैं सेवा ॥ जय० ॥
तव प्रताप सौं माता, मूढ़ भये ज्ञानी ।
निज दासन पर करतीं, करुणा कल्याणी ॥ जय० ॥
त्रिभुवन यश बिस्तार्यो, गुण गावें देवा ।
सुरनर मुनि सब निशिदिन, करैं विविध सेवा॥जय०॥
मां शारद की आरती, जो कोई नर गावे ।
परम ज्ञान सो पावे, जग यश फैलावे ॥ जय० ॥

श्री गायत्री आराधना





राजेश दीक्षित

श्री गायत्री आराधना

[श्री गायत्री-रहस्य, पूजा-उपासना विधि, यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, आरती, चालीसा आदि समन्वित अत्युपयोगी पुस्तक]



राजेश दीक्षित



देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : 265403, 264191, 261030


प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६


लेखक
राजेश दीक्षित


मूल्य
स्वदेश में : डेढ़ रुपया
विदेश में : चार शिलिंग

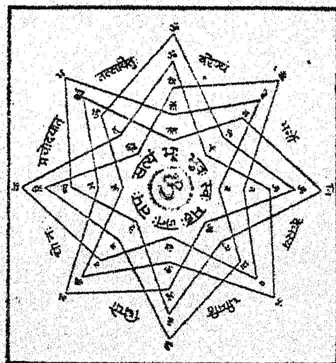

मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस,
सोनीपत (निकट दिल्ली) हरयाणा

प्रत्येक का मूल्य ६.००

१. गणेश उपासना
२. लक्ष्मी उपासना
३. राम उपासना
४. कृष्ण उपासना
५. हनुमान उपासना
६. दुर्गा उपासना
७. विष्णु उपासना
८. शिव उपासना
९. काली उपासना
१०. भैरव उपासना
११. गायत्री उपासना
१२. सरस्वती उपासना
१३. ओ३म् उपासना
१४. वैष्णो उपासना
१५. गंगा उपासना
१६. गौरीपार्वतीउपासना
१७. अष्टदेव आराधना
१८. अष्टदेवी आराधना
१९. कबीर उपासना
२०. मातभवानी शक्ति
२१. गायत्री शक्ति
२२. योग शक्ति
२३. साधना शक्ति
२४. ओ३म शक्ति
२५. दुर्गा शक्ति
२६. देवी-देव की आरती
२७ बड़ा भक्ति सागर
२८ हनुमान जीवन-चरित्र
२९. प्राचीन ब्रह्मज्ञान भजन
३०. १२ महीने व्रत-त्यौहार
३१. पंचतन्त्र
३२. शिव लीलामृत
३३. सरल भागवत
३४. दृष्टान्त सागर
३५. दुर्गा भाषा

संक्षिप्त श्री गायत्री रहस्य

प्रत्येक जाति, सम्प्रदाय तथा धर्म में उपासना का कोई-न-कोई रूप प्रचलित पाया जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि उपासना के बिना कोई भी सम्प्रदाय आत्मोन्नति नहीं कर सकता, उपासना ही मनुष्य की आत्मा का मुख्य आहार है। आत्म सन्तोष दायिनी



श्री गायत्री पूजन यन्त्र .

उपासनाओं में गायत्री-उपासना का शीर्ष स्थान है। वेदों में गायत्री शब्द का अर्थ इस प्रकार किया गया है—

"सा हैषा गयांस्तत्रे। प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे तद् गयांस्तत्रे तस्माद् गायत्री नाम।"

(शतपथ ब्राह्मण १४/८/१५/७)

अर्थात्—'गायत्री ने गयों (प्राणों) की रक्षा की थी। प्राण 'गय' कहे जाते हैं। गायत्री ने उन प्राणों (गयों) की रक्षा की थी, इसलिए इसका नाम 'गायत्री' पड़ा।'

पुराणादि स्मृति शास्त्रों में 'गायत्री' शब्द की एक अन्य निरुक्ति मिलती है—

"प्रतिग्रहान्नदोषाच्च पातकादुपपातकात् ।
गायत्री प्रोच्यते तस्माद् गायन्तं त्रायते यतः ॥"

अर्थात्—'यह गायन (जप) करने वाले द्विज का प्रतिग्रह दोष तथा अन्नदोष से एवं पातक तथा उपपातकों से त्राण करती है, इसलिए 'गायत्री' कही जाती है।'

गायत्री, सावित्री, ब्रह्मगायत्री, वेद माता, गुरुमन्त्र ये सभी गायत्री के ही पर्य्याय हैं।

गायत्री-मन्त्र का गायत्री-छन्द है, अतः इसे 'गायत्री-मन्त्र' कहा जाता है। सविता (सूर्य) से सम्बन्ध होने के कारण इसे 'सावित्री' कहते हैं। ब्रह्म (वेद) से सम्बन्ध रखने एवं ब्राह्मणों की उपास्या होने के कारण इसे 'ब्रह्मगायत्री' कहा जाता है। यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार के समय द्विज-बालक को गुरु द्वारा गायत्री-मन्त्र का ही उपदेश किया जाता है, अतः इसे 'गुरु-मन्त्र' की संज्ञा दी गई है। वेदों की जननी होने के कारण ही इसे 'वेदमाता' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

गायत्री त्रि-शक्ति स्वरूपिणी है, अतःतीन काल की सन्ध्योपासना में गायत्री का तीन अलग-अलग रूपों में ध्यान किया जाता है। पूर्वाह्न में 'गायत्री', मध्याह्न में 'सावित्री' तथा सायाह्न में 'सरस्वती' तथा तीनों कालों में 'संध्या' के नाम से इसे पुकारा जाता है। गायत्री, सावित्री और सरस्वती ये तीनों नाम गायत्री नाम के ही वाचक हैं।

गायत्री की उपासना परमब्रह्म परमात्मा की उपासना है। गायत्री परब्रह्मस्वरूपा है। यह निर्वाण परमपद को देने वाली है। ब्रह्मतेजो-

मयी शक्ति है तथा परब्रह्म ही इसका अधिष्ठातृ देवता है। गायत्री को 'परादेवता' कहा गया है, अस्तु चित्स्वरूपा गायत्री साक्षात् ब्रह्म ही है।

गायत्री की उपासना से मनुष्य में सद्बुद्धि, सद्विचार तथा सद्धर्म का उदय होता है। गायत्री का उपासक श्रद्धा, भक्ति तथा ईश्वर-विश्वास से परिपूर्ण हो जाता है। वह जीवन पर्यन्त सर्वविधि सुखों का उपभोग करने के बाद अन्त में शाश्वत परमपद को प्राप्त होता है, अतः गायत्री की उपासना करना परम कर्तव्य है।

सामान्य पूजा-विधि

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर, मन, वचन एवं कर्म की शुद्धि सहित पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, शिखा में गांठ बांधें तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें। फिर इष्ट देवी की मूर्ति, चित्र अथवा प्रतीक को चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर, अपने अग्रभाग में स्थापित करें। इस पुस्तक के पांचवें पृष्ठ पर जिस यन्त्र को प्रकाशित किया गया है, उसे गेहूं के आटे, रोली, हल्दी तथा चावलों के द्वारा देवी की मूर्ति के सम्मुख चित्रित करें। यदि इस यन्त्र को स्वर्ण, रौप्य अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा लिया जाय तो उसे बारम्बार उपयोग में भी लाया जा सकता है। देवी-पूजन के साथ ही यन्त्र-पूजन भी करना चाहिये।

जल पूर्ण पात्र तथा पूजन-सामग्री को संकलित करके अपने आसन के समीप ही रख लें तथा इष्ट देवी की मूर्ति के समीप शुद्ध घृत का दीपक प्रज्ज्वलित कर, धूप बत्ती, अगर बत्ती आदि जला दें।

सर्व प्रथम 'स्वस्ति वाचन' का पाठ करें। फिर पवित्रीकरण, आच०

मन, हस्त-प्रक्षालन तथा भूत शुद्धि की क्रियाएं सम्पन्न कर, पहले विघ्न-विनाशन आदि पूज्य श्री गणेश जी का ध्यान करें, तदुपरान्त 'संकल्प-वाक्य' का उच्चारण करके नीचे लिखे अनुसार मन्त्रों द्वारा इष्ट देवी का ध्यान तथा यथाविधि पूजन करें।

पूजा की समाप्ति पर स्तोत्र, कवच, चालीसा आदि का पाठ एवं आरती, प्रदक्षिणा आदि कृत्य करने चाहिए।

स्वस्ति वाचन

"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाः विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोवृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥३॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रोदेवता दित्यादेवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ४ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथ्वीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि। ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव। शान्तिः ॥ ५ ॥भवतु॥

उक्त 'स्वस्ति वाचन' को जहां-जहां ँ इस प्रकार का चिह्न है, वहां 'ग्वं' की भांति उच्चारण करना चाहिए । 'स्वस्ति वाचन' के बाद आगे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल से आचमन करें तथा अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़कें । तत्पश्चात् दोनों हाथों को धो लें । आचमन करते तथा जल छिड़कते समय **'ओ३म् केशवाय नम: स्वाहा । ओ३म् नारायणाय नम: स्वाहा । ओ३म् माधवाय नम: स्वाहा ।'** इन मन्त्रों का उच्चारण करते जाना चाहिए ।

पवित्रीकरण का मन्त्र

" ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार जल छिड़क कर आचमन करें तथा हाथ धो डालें ।

'पवित्रीकरण' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भूत शद्धि' करें—

भूत शुद्धि का मंत्र

"ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता ।

ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।"

'भूत शुद्धि' के उपरान्त दाएं हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प तथा जल

लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए विघ्न विनाशन 'श्री गणेश जी का ध्यान' करें—

श्री गणेश ध्यान मंत्र

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्न तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥"

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर हाथ के दूर्वा, अक्षत, पुष्प आदि को श्री गणेश जी के समीप स्थापित कर पुनः दाएं हाथ में तिल, कुश, जल, अक्षत तथा यज्ञोपवीत लेकर नीचे लिखे 'संकल्प वाक्य' का उच्चारण करें—

सङ्कल्प वाक्य

"हरिः ॐ तत्सत् । नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैव-

स्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे षष्टिसंवत्सराणांमध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये, चन्द्रे, भौमे, बुधे, बृहस्पतौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुणविशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मा आदि) ऽहं धर्मार्थकाममोक्षहेतवे श्रीगणपत्यादि श्री कृष्णचन्द्रस्य पूजनमहं करिष्ये।''

उक्त 'संकल्प वाक्य' में जहां-जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहीं क्रमशः विद्यमान संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिये। ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', 'वैश्य को गुप्तोऽहं' तथा शूद्र को 'दासोऽहं,' शब्द का उच्चारण करना चाहिये।

'संकल्प-वाक्य' के पश्चात् सर्व प्रथम नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने इष्ट देवी भगवती गायत्री जी का 'ध्यान' करना चाहिए।

ध्यान के मंत्र

"आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ १॥

चतुर्भुजां शशिकलां जटाजूट समन्विताम् ।
ऋक्सामयजुषां नाथां प्रफुल्ल कमलेक्षणाम् ।। २ ।।
श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता ।।
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ।। ३ ।।
रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां
रक्तां रक्तनवस्रजं मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमाम् ।
गायत्रीं कमलासनां करतलव्यानद्धकुण्डाम्बुजां
पद्माक्षीं च वरस्रजं च दधतीं हंसाधिरूढांभजे ।। ४ ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।। ५ ।।"

गायत्री-उपासना

गायत्री की उपासना के अनेक भेद हैं। उनमें गायत्री की जपात्मक, पाठात्मक तथा हवनात्मक उपासना विशेष प्रचलित है। गायत्रीमन्त्र का जप करना 'जपात्मक उपासना' है। गायत्री के स्तोत्र आदि का पाठ करना 'पाठात्मक उपासना' है तथा गायत्री-मन्त्र से हवन करना 'हवनात्मक उपासना' कही जाती है। इनमें गायत्री की 'जपात्मक उपासना' सर्व श्रेष्ठ कही गई है।

वर्तमान कुछ लोग भगवती गायत्री की मूर्ति बनाकर प्रतिमा-पूजन की विधि से गायत्री की उपासना भी करते हैं। ऐसे महानु-

भावों को भगवती गायत्री की प्रतिमा का पूजन अन्य देवियों की पूजन-विधि के समान आसन, पाद्य, अर्घ्य, स्नान, आचमन, वस्त्र, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, नीराजन, प्रार्थना द्वारा करना चाहिए। यहां हम ब्रह्म स्वामी शंकर तीर्थ जी महाराज द्वारा निर्धारित गायत्री-उपासना की एक विशिष्ट विधि का उल्लेख कर रहे हैं, जो इस प्रकार है—

एकान्त स्थान में पूर्वाभिमुख हो, आसन पर बैठ कर पहले आसन शुद्धि करे। आसनशुद्धि का मन्त्र इस प्रकार है—

"पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं
छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः।
ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम ॥"

इस प्रकार कह कर कुशा से जल-प्रोक्षण करें। फिर पहले आचमन करें। आचमन के पश्चात् 'तत्त्वमुद्रा' (दायें हाथ के अंगुष्ठाग्र में अनामिकाग्र का संयोग करने से 'तत्त्वमुद्रा' होती है।) से 'अङ्गन्यास' करें। अङ्गन्यास इस प्रकार है—

ॐ हृदयाय नमः।

(यह कह कर हृदय का स्पर्श करें।)

ॐ भूः शिरसे स्वाहा।

(यह कह कर शिर का स्पर्श करें।)

ॐ भुवः शिखायैवषट्।

(यह कह कर शिखा का स्पर्श करें।)

ॐ स्वः कवचायहुम् ।

(यह कह कर बायें हाथ को दायें कंधे के ऊपर तथा फिर दायें हाथ को बायें कन्धे के ऊपर रखकर बायें हाथ की तत्त्वमुद्रा से दायें कंधे का स्पर्श तथा दायें हाथ की तत्त्वमुद्रा से बायें कंधे का स्पर्श करें।)

ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट् ।

(यह कह कर मध्यमा तथा तर्जनी से नेत्रों का स्पर्श करें।)

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्रायफट् ।

(यह कह कर दायें हाथ को सिर के चारों ओर घुमाकर बायें हाथ की हथेली पर उसका आघात करें।)

इसी प्रकार शरीर में निम्नलिखित मन्त्र पढ़ कर न्यास करें—

'ॐ' तत्पदं पातु मे पादौ जङ्घे मे 'सवितुः' पदम् ।
'वरेण्यं' कटिदेशं तु नाभिं 'भर्ग' स्तथैव च ॥
'देवस्य' मेतु हृदयं 'धीमही'ति गलं तथा।
'धियो' मे पातु जिह्वायां 'यः' पदं पातु लोचने ॥
ललाटे 'नः' पदं पातु मूर्द्धां मे 'प्रचोदयात्' ।

इसके पश्चात् माता गायत्री के ऋषि-देवता आदि का स्मरण करके विनियोग करें—

"ॐकारस्य ब्रह्मऋषिरग्निर्देवता, गायत्रीच्छन्दो शुक्लो वर्णः गायत्रीजपे विनियोगः ।"

"महाव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिः, अग्नि वायु

सूर्या देवताः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, गायत्रीजपे विनियोगः ।"

इसके पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र के अनुसार गायत्री का ध्यान करें—

"ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा ।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता ॥
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा ।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा ॥"

इस प्रकार ध्यान करके गायत्री का आवाहन करें तथा कृताञ्जलि होकर निम्नानुसार कहे—

'तेजोऽसीति मन्त्रस्य देवा ऋषयो धाम देवता गायत्री-च्छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः ।"

"ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ॥"

इसके बाद गायत्री का उपस्थान करे तथा कृतांजलि होकर इस प्रकार कहे—

"तुरीयपदस्य विमलऋषिः, परमात्मा देवता, गायत्र्यु-पस्थाने विनियोगः ।"

"ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे । नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे ।"

इसके बाद—

"ॐ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥"

इस मन्त्र का जप करे 'वरेण्यं' का उच्चारण 'वरेणियम्' इस प्रकार से करना चाहिए; क्योंकि कहा गया है—

"वरेण्यं विरलं चोक्त्वा जपकाले विशेषतः ।"

अर्थात् 'वरेण्यं' शब्द का विशेषकर जप के समय विरल उच्चारण करना चाहिए) ।

गायत्री मन्त्र का अर्थ समझकर जप करने से विशेष फल मिलता है तथा विशेष आनन्द प्राप्त होता है । अतः अर्थ जानना आवश्यक है । गायत्री मन्त्र की व्याख्या इस प्रकार है—

"(यः परमेश्वरः) ॐ (अ-उ-म्—सृष्टि–स्थिति-संहारार्थ ब्रह्मा-विष्णु-रुद्ररूपधारी) भूः (भू रूपः) भुवः (भुवः स्वरूपः) स्वः (स्वर्लोकरूपः) यः (परमेश्वरः) नः (अस्माकं सर्वेषां संसारिणाम्) धियः (बुद्धिः) प्रचोदयात् धर्मार्थ कामोक्षेषु प्रेरयति) सवितुः (अनन्तब्रह्माण्डानाँ भूतानाँ च प्रसवितुः) देवस्य (दीप्तिक्रीडायुक्तस्य परमेश्वरस्य) तत् (वेदादि निखिलसत्शास्त्र प्रसिद्धं स्वयं प्रकाशरूपं तापत्रयनाशनं जन्ममृत्युनिवारणं) वरेण्यं (वरणीयं तापत्रयपीडितैः जन्ममृत्युभीरुभिः तन्निरासाय उपासनीयं) भर्गः (सर्वदुःखानाँ सर्वपापानाँ सर्वसंसारस्य च भजनसमर्थं तेजः-स्वयं ज्योतिः परब्रह्मात्मकं तेजोमण्डलं) धीमहि (सोऽहमस्मी त्यनेन प्रकोरण चिन्तयामः) ।"

अर्थात्—"जो परमेश्वर जगत् की सृष्टि, पालन और प्रलय के लिए ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र रूप धारण करते हैं, जो पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा स्वर्गरूप से विराज रहे हैं अर्थात् त्रिभुवन के यावत् पदार्थ ही जिनकी मूर्ति है, जो हम संसारियों की बुद्धि को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष विषयों में लगाते हैं, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड और अनन्त कोटि प्राणियों के स्रष्टा, स्वयं प्रकाश, जगन्निर्माणादि रूप क्रीड़ा-शील हैं, उन परमेश्वर के, वेदादि सम्पूर्ण सत्-शास्त्रों में सुप्रसिद्ध नित्य प्रकाश स्वरूप, आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक—इन त्रिविध तापों का नाश करने वाले, जन्म-मृत्यु रूप संसार सागर से पार लगाने वाले तथा दुःख पीड़ित संसारी जीवों से संसारी पार जाने के निमित्त उपासना करने योग्य, सारे दुःख, सारे पाप और सारे जन्म मृत्यु के चक्करों से छुड़ाने वाले, स्वयं ज्योति, परब्रह्म रूप तेज का हम अभेदात्मक बुद्धि से ध्यान करते हैं।"

गायत्री-मन्त्र का जप करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

१—गायत्री के एक पाद का अलग-अलग उच्चारण मन-ही-मन करके जप करना चाहिए। पादच्छेद करके उच्चारण की हुई गायत्री ब्रह्महत्या को भी दूर करती है तथा पादच्छेद के बिना उच्चारण करने से ब्रह्महत्या प्रदायिनी होती है।

२—गायत्री का जप मन-ही-मन करना चाहिए, जिह्वा और होठ न हिलायें, सिर तथा ग्रीवा को भी न चलायें अर्थात् स्थिर रखें। दांतों को न दिखायें अर्थात् होठों को बन्द रखकर मन्त्र जपना चाहिए।

३—दायें हाथ को वस्त्र से ढंक कर जप करना चाहिए, इसलिए गोमुखी का व्यवहार किया जा सकता है।

४—जप करते समय सिर पर वस्त्र तथा हाथ नहीं रखना चाहिए। जप के समय हांफने से हानि, ऊंघने से दुःख, बोलने से रोग, माला गिरने से नाश तथा माला का सूत टूटने से मृत्यु (परिणाम स्वरूप) होती है। अतः सावधान होकर माला से जप करना चाहिए तथा जप करते समय माला में तर्जनी का स्पर्श नहीं होने देना चाहिए तथा सुमेरू का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। दुबारा फेरते समय सुमेरू के पास से माला को फिर घुमा देना चाहिए।

५—जप के समय वार्तालाप नहीं करना चाहिए तथा आलस्य जंभाई, छींक, थूकना, अपवित्र अंगों का स्पर्श करना भी निषिद्ध है। कुछ अपवित्रता हो जाने पर आचमन तथा अङ्गन्यास करके तब माला फेरनी चाहिए। जप करते समय यदि लघुशङ्का आदि का वेग हो तो उससे निवृत्त होकर, फिर पवित्र होकर आचमनादि पूर्वक जप का प्रारम्भ करना चाहिए। इस प्रकार अनुष्ठान करने से अभीष्ट सिद्धि होती है।

शास्त्र में कहा है—"गायत्री मन्त्र का दस बार जप करने से दिवासचिक्कृत लघुपाप, सौ बार जप करने से सर्वपाप, सहस्र बार जप करने से महापातक तथा लक्षबार जप करने से सप्त जन्मर्जित पाप नष्ट हो जाते हैं। कोटि बार जप करने से सम्पूर्ण इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। काम्य-अनुष्ठान में बाद में दशांश हवन करना चाहिए।

अनुष्ठान के अंग में अंगन्यास के बाद 'गायत्री शाप विमोचन' तथा 'गायत्री हृदय' का पाठ तथा गायत्री-उपस्थान के अनन्तर मुद्रा-प्रदर्शन एवं गायत्री कवच का पाठ करना चाहिए। कहीं-कहीं गायत्री-तर्पण का विधान भी कहा गया है।

जप के पश्चात् विसर्जन करना चाहिए। विसर्जन का मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ उत्तरे शिखरे देवि भूम्यां पर्वत वासिनि ।
ब्राह्मणैः समनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम् ॥"

'गायत्री-उपासना' के सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए हमारी' 'वृहद् गायत्री उपासना' पुस्तक का अध्ययन करें।

श्री गायत्री स्तोत्रम्

॥ श्री नारद उवाच ॥

"भक्तानुकम्पिन्सर्वज्ञ हृदयं पापनाशनम् ।
गायत्र्याः कथितं तस्माद्गायत्र्याः स्तोत्रमीरय ॥१॥"

॥ श्री नारायण उवाच ॥

"आदिशक्ते जगन्मातर्भक्तानुग्रहकारिणि ।
सर्वत्र व्यापिकेऽनन्ते श्रीसन्ध्ये ते नमोऽस्तुते ॥ २ ॥
त्वमेव सन्ध्या गायत्री सावित्री च सरस्वती ।
ब्रह्माणी वैष्णवी रौद्री रक्तश्वेता सितेतरा ॥ ३ ॥
प्रातर्बाला च मध्याह्ने यौवनस्था भवेत्पुनः ।
वृद्धा सायं भगवती चिन्त्यते मुनिभिः सह ॥ ४ ॥
हंसस्था गरुडारूढा तथा वृषभवाहिनी ।
ऋग्वेदाध्यायिनी भूमौ दृश्यते या तपस्विभिः ॥ ५ ॥
यजुर्वेदं पठन्ती च अन्तरिक्षे विराजते ।
या सामगामि सर्वेषु भ्राम्यमाणा तथा भुवि ॥ ६ ॥
रुद्रलोकगता त्वं हि विष्णुलोकनिवासिनी ।
त्वमेव ब्रह्मणो लोके मर्त्यानुग्रहकारिणी ॥ ७ ॥

सप्तर्षिप्रीतिजननी माया बहुवरप्रदा ।
शिवयोः करनेत्रोत्था ह्यश्रुस्वेद समुद्भवा ॥ ८ ॥
आनन्दजननी दुर्गा दशधा परिपठ्यते ।
वरेण्या वरदा चैव वरिष्ठा वरवर्णिनी ॥ ९ ॥
गरिष्ठा च वराही च वरारोहा च सप्तमी ।
नीलगंगा तथा सन्ध्या सर्वदा भोगमोक्षदा ॥ १० ॥
भागीरथी मर्त्यलोके पाताले भोगवत्यपि ।
त्रैलोक्यवाहिनी देवी स्थानत्रयनिवासिनी ॥ ११ ॥
भूर्लोकस्था त्वमेवासि धरित्री लोकधारिणी ।
भुवो लोके वायु शक्तिः स्वर्लोके तेजसां निधिः॥१२॥
महर्लोके महासिद्धिर्जनलोकेऽजनेत्यपि ।
तपस्विनी तपोलोके सत्यलोके तु सत्यवाक् ॥ १३ ॥
कमला विष्णुलोके च गायत्री ब्रह्मलोकगा ।
रुद्रलोके स्थिता गौरी हरार्धाङ्गनिवासिनी ॥ १४ ॥
अहमो महतश्चैव प्रकृतिस्त्वं हि गीयसे ।
साम्यावस्थात्मिका त्वं हि शबलब्रह्मरूपिणी ॥ १५ ॥
ततः परा पराशक्तिः परमा त्वं हि गीयसे ।
इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्रिशक्तिदा॥१६॥
गंगा च यमुना चैव विपाशा च सरस्वती ।
सरयू देविका सिन्धुर्नर्मदैरावती तथा ॥ १७ ॥
गोदावरी शतद्रुश्च कावेरी देवलोकगा ।
कौशिकी चन्द्रभागा च वितस्ता च सरस्वती ॥ १८ ॥

गण्डकी तापिनी तोया गोमती वेत्रवत्यपि ।
इडा च पिंगला चैव सुषुम्ना च तृतीय का ॥ १९ ॥
गान्धारी हस्तजिह्वा च पूषा ऽपूषा तथैव च ।
अलम्बुषाः कुहूश्चैव शङ्खिनी प्राणवाहिनी ॥ २० ॥
नाडी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्राक्तनैर्बुधैः ।
हृत्पद्मस्था प्राणशक्तिः कण्ठस्था स्वप्ननायिका॥२१॥
तालुस्था त्वं सदाधारा विन्दुस्था विन्दुमालिनी ।
मूले तु कुण्डलीशक्तिर्व्यापिनी केशमूलगा ॥ २२ ॥
शिखामध्यसना त्वं हि शिखाग्र तु मनोन्मनी ।
किमन्यद्बहुनोक्तेन यत्किञ्चिज्जगतीतले ॥ २३ ॥
तत्सर्वं त्वं महादेवि श्रिये सन्ध्ये नमोऽस्तुते ।
इतीदं कीर्तिदं स्तोत्रं सन्ध्यायां बहुपुण्यदम् ॥ २४ ॥
महापाप प्रशमनं महासिद्धिविधायकम् ।
य इदं कीर्तिदं स्तोत्रं संन्ध्याकाले समाहितः ॥ २५ ॥
अपुत्रः प्राप्नुयात्पुत्रं धनार्थी धनमाप्नुयात् ।
सर्वतीर्थतपोदानयज्ञ योगफलं लभेत् ॥ २६ ॥
भोगान्भुक्त्वा चिरं कालमन्ते मोक्षमवाप्नुयात् ।
तपस्विभिः कृतं स्तोत्रं स्नानकाले तु यः पठेत् ॥२७॥
यत्र कुत्र जले मग्नः सन्ध्यामज्जनजं फलम् ।
लभते नात्र संदेहः सत्यं सत्यं तु नारद ॥ २८ ॥

श्रृणुयाद्योऽपि तद्भक्त्या स तु पापात्प्रमुच्यते ।
पीयूषसदृशं वाक्यं सन्ध्योक्तं नारदेरितम् ॥ २६ ॥

॥ इति श्री गायत्री स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

मुक्ताविद्रुम हेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्वार्थवर्णात्मिकाम् ।
गायत्रीं वरदाभयांकुशकशंशूलं कपालं गुणं ।
शंखं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्ती भजे ॥

श्री गायत्री बीजसंयुतम्

श्री गायत्री रामायणम्

॥ श्री सीतरामचन्द्राभ्यां नमः ॥

"ॐ तपः स्वाध्याय निरतं तपस्वी वाग्विदां वरम् ।
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनि पुङ्गवम् ॥ १ ॥
सहत्वा राक्षसान् सर्वान् यज्ञघ्नान् रघुनन्दनः ।
ऋषिभिर्पूजितस्तत्र यथेन्द्रो विजये पुरा ॥ २ ॥
विश्वमित्रस्तु धर्मात्मा श्रुत्वा जनकभाषिताम् ।
वत्सराम ! धनुः पश्य इति राघवमब्रवीत् ॥ ३ ॥
तुष्टावास्य तदा वंशं प्रविश्य स विशाम्पतेः ।
शयनीयं नरेन्द्रस्य तदासाद्य व्यतिष्ठत ॥ ४ ॥
वनवासं हि संख्याय वासांस्याभरणानि च ।
भर्तारमनुगच्छन्त्यै सीतायै श्वशुरो ददौ ॥ ५ ॥

राजा सत्यं च धर्मश्च राजा कुलवतां कुलम् ।
राजा माता पिता चैव राजा हित करो नृणाम्॥ ६॥

निरीक्ष्य स मुहूर्तं तु ददर्श भरतो गुरुम् ।
जटजे राममासीनं जटामण्डलधारीणम् ॥ ७ ॥

यदि बुद्धिः कृता द्रष्टुमगस्त्यं तं महामुनिम् ।
अद्यैव गमने बुद्धिं रोचयस्व महायशः ॥ ८ ॥

भरतस्याऽऽर्यपुत्रस्य श्वश्रूणां मम च प्रभो ।
मृगरूपमिदं व्यक्तं विस्मयं जनयिष्यति ॥ ९ ॥

गच्छशीघ्रमितो राम सुग्रीवं तं महाबलम् ।
वयस्यं तं कुरु क्षिप्रमितो गत्वाऽद्य राघव ॥ १० ॥

देशकालौ भजस्वाऽद्य क्षममाणः प्रियाऽप्रिये ।
सुखदुःखसहः काले सुग्रीववशगो भव ॥ ११ ॥

वन्द्यास्ते तु तपः सिद्धास्तपसा वीतकल्मषाः ।
प्रष्टव्या चाऽपि सीतायाः प्रवृत्तिर्विनयान्वितैः ॥ १२॥

स निर्जित्य पुरीं श्रेष्ठां लङ्कां तां कामरूपिणीम ।
विक्रमेण महातेजा हनूमान कपिसत्तमः ॥ १३ ॥

धन्या देवाः सगन्धर्वाः सिद्धाश्च परमर्षयः ।
मम पश्यन्ति ये नाथं राम राजीवलोचनम् ॥ १४ ॥

मङ्गलाभिमुखी तस्य सा तदासीन्महाकपेः ।
उपतस्थे विशालाक्षी प्रयता हव्यवाहनम् ॥ १५ ॥

हितं महार्थं मृदुहेतु संहितम्
व्यतीत कालायति सम्प्रति क्षमम् ।
विशम्य तद्वाक्यमुपस्थित ज्वरः
प्रसङ्गवानुत्तरमेतदब्रवीत् ॥ १६ ॥

धर्मात्मा रक्षसां श्रेष्ठः सम्प्राप्तोऽयं विभीषणः ।
लङ्कैश्वर्यं ध्रुवं श्रीमानयं प्राप्नोत्य कण्टकम् ॥ १७॥

यो वज्रपाताशच सन्निपातात्
न चुक्षुभे नाऽपि चचाल राजा ।
स रामबाणाभिहतो भृशार्तः
चचाल चापं च मुमोच वीरः ॥ १८ ॥

यस्य विक्रममासाद्य राक्षसा निधनं गताः ।
तं मन्ये राघवं वीरं नारायणमनामयम् ॥ १९ ॥

न ते तद्दृशिरे रामं दहन्तमरिवाहिनीम् ।
मोहिता परमास्त्रेण गान्धर्वेण महात्मना ॥ २० ॥

प्रणम्य देवताभ्यश्च ब्राह्मणेभ्यश्च मैथिली ।
बद्धाञ्जलिपुटाचेदं उवाचऽग्नि समीपतः ॥ २१ ॥

चालनात् पर्वतस्यैव गणादेवस्य कम्पिताः ।
चचाल पार्वती चाऽपि तदाश्लिष्टामहेश्वरम् ॥२२॥

दाराः पुत्राः पुरं राष्ट्रं भोगाच्छादनभोजनम् ।
सर्वमेवाविभक्तं नौ भविष्यति हरीश्वर ॥ २३ ॥

यामेव रात्रिं शत्रुघ्नः पर्णशाला मुपाविशत् ।
तामेव रात्रिं सीताऽपि प्रसूता दारकद्वयम् ॥ २४ ॥
इदं रामायणं कृत्स्नं गायत्री बीज संयुतम् ।
सकृत् पठनमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ २५ ॥"
॥ इति श्री गायत्री रामायणं सम्पूर्णम् ॥

श्री गायत्री स्तुति मन्त्र

"चतुर्भुजां शशिकलां जटाजूट समन्विताम् ।
ऋक्सामयजुषां नाथां प्रफुलल्लकमलेक्षणाम् ॥ १ ॥
पञ्चाशाद्वर्णग्रथितां मालाद्योतितहृत्स्थलाम् ।
अनेक रत्न निर्माण कण्ठदेश विराजिताम् ॥ २ ॥
दिव्यगन्धप्रलिप्ताङ्गी शुक्लवस्त्रपरिष्कृताम् ।
शुक्लपद्मासनासीनां शुक्लस्त्रोत्तरीयणीम् ॥
ब्रह्मादिदेवता वृन्दैः संस्तुतां नित्यनूतनाम् ॥ ३ ॥
आयातु वरदे देवि अक्षरे ब्रह्मवादिनी ।
गायत्रिच्छन्दसां माता ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥
सर्वमङ्गलमांगल्येशिवे सर्वार्थं साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्रय दुःखभयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ ६ ॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ ७ ॥
कालिकां तु कलातीतां कल्याणहृदयां शिवाम् ।
कल्याणजननीं नित्यं कल्याणी पूजयाम्यहम् ॥ ८ ॥
गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया ।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ ९ ॥
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता ।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥१०॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधासिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती ।
मांगल्येषु प्रपूज्याश्च सप्तैता दिव्यमातरः ॥ ११ ॥
यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं

रत्नप्रभं तीव्रमनादि रूपम् ।

दारिद्रय दुःखंक्षयकारणं च

पुनातु मां तत्सुवितुर्वरेण्यम् ॥ १२ ॥"

श्री गायत्री चालीसा

॥ दोहा ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं रूपिणी, जय जय ज्योति अखंड ।
गायत्री जय जयति जय, महिमा परम प्रचंड ॥

॥ चौपाई ॥

भू र्भुवः स्वः युत तुम जननी ।

महाओघ कलि कल्मष दहनी ॥

चौबिस अक्षर रूप तुम्हारा ।
त्रिभुवन सुयश जासु विस्तारा ॥
शाश्वत सतोगुणी सतरूपा ।
महिमा अहहि तुम्हार अनूपा ॥
हंसारूढ़ सितम्बर धारिणि ।
स्वर्ण कान्ति शुचि गगन विहारिणी ॥
अहै चतुर्भुज रूप सुहावन ।
दर्शन करत होत मन पावन ॥
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला ।
धारण कीन्हेउ नयन विशाला ॥
शुभ्रवर्ण तुम देवि सयानी ।
सन्तत रहहु परम कल्याणी ॥
ध्यान धरत पुलकित हिय होई ।
यश वरनै केहि विधि कहँ कोई ॥
तीनि रूप धरि त्रिभुवन माता ।
विचरण करहु सदा सुखदाता ॥
नाम अनेक असंख्य तुम्हारे ।
वेद पुराण 'नेति' कहि हारे ॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।
अहै तुम्हारी ज्योति निराली ॥
शुम सनकादि शेष गुण गावहिं ।
नारद शारद ध्यान लगावहिं ॥

ब्रह्माणी तुम गौरी सीता ।
कीन्हेउ चरित अनेक पुनीता ।।
वेदमातृ तुम अलख अरूपा ।
सेवत तोहिं सदा सुरभूपा ।।
सृष्टि बीज अम्बिका भवानी ।
कालरात्रि तुम ही कल्याणी ।।
महिमा अपरम्पर बताई ।
सुरनर मुनि कोउ पार न पाई ।।
जय जय जय त्रिपदा भय नासिनि ।
जय बिज्ञान विवेक प्रकासिनि ।।
जानत तुमहिं तुमहिं हुइ जाई ।
यहै तुम्हार शक्ति अधिकाई ।।
ब्रह्म विचार देहु तुम जननी ।
ब्रह्म समान करहु दुख हरनी ।।
सकल सृष्टि की प्राण बिधाता ।
पालक पोषक नाशक त्राता ।।
तुम कहं भजहि सदा चितलाई ।
सो नर मुक्ति पदारथ पाई ।।

ग्रह नक्षत्र आदि बहुतेरे ।
सो गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥
तुम्हरी कृपा पाइ विधि हरिहर ।
जगतपूजा भे परम मनोहर ॥
जय जय जय अम्बिका भवानी ।
तुम सम और कोउ नहिं दानी ॥
तुम्हरो जाप करत दुख भाजहिं ।
ध्यान धरत सब सम्पति साजहिं ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि की दाता ।
तुम समर्थ गायत्री माता ॥
जो जन शरण तुम्हारी आवैं ।
सो सब मनवांछित फल पावैं ॥
करहिं त्रिसन्ध्य जाप जो माई ।
तिनकहँ पातक जाहिं बिलाई ॥
जगत जननि तुम हो कल्याणी ।
इन्द्राणी लक्ष्मी शर्वाणी ॥
आदि शक्ति अग जग की माता ।
निज भक्तन कहँ अति सुखदाता ॥

तुम्हरी कृपा मिटहिं दुख भारा ।
तुम्हरो चरित अनूप अपारा ॥
सुख सम्पति तिन के घर आवैं ।
जो नर तुम्हरो ध्यान लगावैं ॥
करुणामयि तुम होउ कृपाला ।
काटहु सदा मोर भ्रमजाला ॥
जय जय गायत्री महारानी ।
कीजिय कृपा मोहि जनजानी ॥
सब अपराध क्षमा करि दीजैं ।
बालक जानि शरण निज लीजैं ॥
बल बुधि विद्या देहु सुहावन ।
करहु अपावन कहँ तुम पावन ॥
जो यह पाठ करहिं चालीसा ।
तिन पै कृपा करहिं जगदीसा ॥
जो जन ध्यान तुम्हारे लावैं ।
सो नित चारि पदारथ पावैं ॥
जय जय जय अम्बिके तुम्हारी ।
जय गायत्री भ्रम रुज हारी ॥

॥ दोहा ॥

गायत्री की कृपा सों, सब कटि जांइ क्लेश ।
भक्त वत्सल्या मातु को, धरिये ध्यान हमेश ॥

॥ इति श्री गायत्री चालीसा सम्पूर्णम् ॥

श्री गायत्री जी की आरती

जय गायत्री माता, जय गायत्री माता ।
तुम को निशिदिन ध्यावें, हरिहर औ धाता ॥जय०॥

आदि शक्ति तुम जननी, जग पालन कर्त्री ।
दुःख शोक भयनाशिनि, क्लेश कलह हर्त्री ॥जय०॥

ब्रह्मरूपिणी माता, जय धातृ अम्बे ।
भव भयहारिणि देवी, तुम हो जगदम्बे ॥ जय० ॥

तुम गंगा, तुम गीता, तुम ही सावित्री ।
सविता शक्ति स्वरूपा, माता गायत्री ॥ जय० ॥

स्वाहा स्वधा तुम्ही हो, तुम ही रुद्राणी ।
तुम विद्या तुम वाणी, कमला कल्याणी ॥ जय० ॥

शुद्ध बुद्धि की दाता, तुम जन की त्राता ।
तुष्टि पुष्टि तुम हो मां, ऋद्धि सिद्धि दाता ॥जय०॥

तुम राधा, तुम सीता, तुम हो इन्द्राणी ।
परमा प्रकृति तुम्हीं हो, माता ब्रह्माणी ॥ जय० ॥

गायत्री की आरती, जो कोई नर गावे ।
पारिपदारथ पावे, भव भय मिटि जावे ॥ जय० ॥

श्री गंगा आराधना



राजेश दीक्षित

ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकें

आयु-निर्णय	१२.००
आपका भविष्य	१५.००
सच्चा फालनामा	१२.००
बृहदवकहडाचक्र	४.५०
शकुन ज्योतिष शास्त्र	१२.००
मुहूर्त ज्योतिष शास्त्र	१२.००
स्वर ज्योतिष शास्त्र	१२.००
रमल ज्योतिष शास्त्र	१२.००
प्रश्न ज्योतिष शास्त्र	१२.००
स्वप्न ज्योतिष शास्त्र	१२.००
बृहद् अङ्क ज्योतिर्विज्ञान	८.२५
भृगु संहिता फलित प्रकाश	५१.००
भृगु रमल प्रश्नमार्तण्ड	१२.००
रत्न, अंगूठी और आपका भाग्य	१५.००
चिन्ताहरण अभिनव प्रश्नोत्तरी	८.२५
ताश के पत्तों में आपका जीवन	४.५०
बृहद्विशाल हस्त सामुद्रिक विज्ञान	१०१.००
भारतीय ज्योतिष,अङ्कविद्याहस्तरेखायें व लाटरी	८.२५
सरल ज्योतिष शास्त्र	८.२५
कैरल ज्योतिष शास्त्र	१२.००
सरल सुगम ज्योतिष	१२.००
ज्योतिष विज्ञान	८.२५

श्री गंगा आराधना

[श्री गंगा-चरित्र, पूजा-उपासना विधि, यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, आरती, चालीसा आदि समन्वित अत्युपयोगी पुस्तक]

●

राजेश दीक्षित



देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
फोन : 265403, 264191, 261030



प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६



लेखक
राजेश दीक्षित





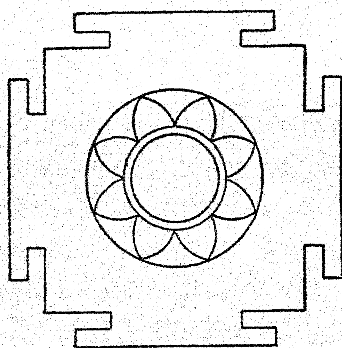
मूल्य
स्वदेश में : डेढ़ रुपया
विदेश में : चार शिलिंग



मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस,
सोनीपत (निकट दिल्ली) हरयाणा

संक्षिप्त श्री गंगा-चरित्र

पूर्व काल में महाराज सगर ने अश्वमेध यज्ञ किये थे। जब वे सौवां अश्वमेध यज्ञ करने लगे, उस समय देवराज इन्द्र को यह चिन्ता हुई कि यदि महाराजा सगर का सौवां अश्वमेध यज्ञ भी सम्पन्न हो गया तो वे इन्द्रासन पर अधिकार प्राप्त कर लेंगे, अस्तु उस यज्ञ को पूरा न होने देने के लिए इन्द्र ने यज्ञ के घोड़े को चुरा लिया और उसे एक ऐसे गुप्त स्थान में ले जाकर बांध दिया, जिस के समीप ही कपिल मुनि दीर्घ कालीन तपस्या में समाधिस्थ थे।



श्री गंगा पूजन यन्त्र

यज्ञ के घोड़े की तलाश में महाराज सगर के साठ हजार पुत्रों ने पृथ्वी का चप्पा-चप्पा खोज मारा। उन्होंने पृथ्वी को इतना गहरा खोदा कि उसके चारों ओर समुद्र लहराने लगा। उन्हीं के कारण समुद्र को 'सागर' भी कहा जाता है। अन्त में, वे लोग उस स्थान पर भी जा पहुंचे जहां उनका घोड़ा बंधा हुआ था।

घोड़े को देख कर वे आनन्दित हो गये साथ ही उन्होंने यह भी समझा कि यह ढोंगी मुनि ही घोड़े को चुराकर ले आया है और अब यहां आंखें बन्द किये तपस्या करने का स्वांग रच रहा है। अस्तु, वे लोग कपिल मुनि को मार डालने के उद्देश्य से चीखते-चिल्लाते आगे बढ़ने लगे। उस शोर गुल के कारण कपिल मुनि की तपस्या भंग हो गई। जैसे ही उन्होने आंखें खोली और उनकी दृष्टि महाराज सगर के साठहजार पुत्रों पर पड़ी वैसे ही वे सब राजकुमार मुनि की क्रोधाग्नि में पड़ कर भस्म हो गये। समय पर उनकी अंत्येष्टि भी यथा विधि नहीं हो पाई। फलतः उनकी मुक्ति भी नहीं हुई।

महाराज सगर की अगली पीढ़ी में कई लोगों ने उनकी मुक्ति के उद्देश्य से गंगाजी को पृथ्वी पर लाने के लिए प्रयत्न किये, परन्तु उन में कोई भी कृतकार्य नहीं हो सका। अन्त में राजा भगीरथ ने अपने पुरखाओं की मुक्ति के लिए गंगा जी को पृथ्वी पर लाने का दृढ़ निश्चय किया और इसी उद्देश्य से उन्होंने ब्रह्माजी की घोर तपस्या की।

भगवान् विष्णु के जिस चरणोदक को ब्रह्मा जी ने अपने कमण्डलु में भर रखा था, उसी को 'गंगा नाम से त्रिलोकी में प्रसिद्धि प्राप्त थी। भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने उन्हें दर्शन देने के बाद यह सलाह दी कि वे शिवजी को इसके लिए तय्यार करलें कि जिस समय मैं अपने कमण्डल से गंगा को पृथ्वी पर छोड़ूं, उस समय वे उसे अपनी जटाओं में धारण करलें,अन्यथा यदि उन्हें सीधे ही पृथ्वी पर छोड़ दिया जायगा, तो उनके वेग को सहन न कर पाने के कारण पृथ्वी भी पाताल में चली जायगी।

ब्रह्मा जी की सलाह मान कर भगीरथ ने शिवजी को प्रसन्न करने के लिए पुनः तप करना आरंभ किया अन्ततः शिवजी के प्रसन्न हो जाने पर गंगा का पृथ्वी पर अवतरण हुआ। ब्रह्मा ने अपने कमण्डलु

से जिस धारा को छोड़ा उसे कैलाशवासी शिव ने पहले अपनी जटाओं में धारण किया, तत्पश्चात् वह धारा पृथ्वी पर बहती हुई उस स्थान पर जा पहुंची। जहां महाराज सगर के साठ हजार पुत्रों की मृत्यु हुई थी। उन सबको अपने जल-स्पर्श से मुक्त करती हुई गंगा जी समुद्र में जा मिलीं। विभिन्न पुराण में गंगा जी की उत्पत्ति सबंधी कथा का विस्तृत वर्णन पाया जाता है।

भगवती गंगा स्नान, दर्शन, ध्यान तथा उपासना से प्रसन्न होकर अपने भक्तों के सभी पापों का क्षय करने वाली प्रसिद्ध हैं।

सामान्य पूजा-विधि

सर्व प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर, मन, वचन एवं कर्म की शुद्धि सहित पवित्र आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ, शिखा में गांठ बांधें तथा नवीन यज्ञोपवीत धारण करें। फिर इष्ट देवी की मूर्ति, चित्र अथवा प्रतीक को चौकी के ऊपर नवीन वस्त्र बिछाकर, अपने अग्रभाग में स्थापित करें। इस पुस्तक के पांचवें पृष्ठ पर जिस यन्त्र को प्रकाशित किया गया है, उसे गेहूं के आटे, रोली, हल्दी तथा चावलों के द्वारा देवी की मूर्ति के सम्मुख चित्रित करें। यदि इस यन्त्र को स्वर्ण, रौप्य अथवा ताम्र पत्र पर खुदवा लिया जाय तो उसे बारम्बार उपयोग में भी लाया जा सकता है। देवी-पूजन के साथ ही यन्त्र-पूजन भी करना चाहिये।

जल पूर्ण पात्र तथा पूजन-सामग्री को संकलित करके अपने आसन के समीप ही रख लें तथा इष्ट देवी की मूर्ति के समीप शुद्ध घृत का दीपक प्रज्ज्वलित कर, धूप बत्ती, अगर बत्ती आदि जला दें।

सर्व प्रथम 'स्वस्ति वाचन' का पाठ करें। फिर पवित्रीकरण, आच-

मन, हस्त-प्रक्षालन तथा भूत शुद्धि की क्रियाएं सम्पन्न कर, पहले विघ्न-विनाशन आदि पूज्य श्री गणेश जी का ध्यान करें, तदुपरान्त 'संकल्प-वाक्य' का उच्चारण करके नीचे लिखे अनुसार मन्त्रों द्वारा इष्ट देवी का ध्यान तथा यथाविधि पूजन करें।

पूजा की समाप्ति पर स्तोत्र, कवच, चालीसा आदि का पाठ एवं आरती, प्रदक्षिणा आदि कृत्य करने चाहिए।

स्वस्ति वाचन

"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाः विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोवृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥३॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रोदेवता दित्यादेवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ४ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथ्वीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि। ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव। शान्तिः ॥ ५ ॥भवतु॥

उक्त 'स्वस्ति वाचन' को जहां-जहां ँ इस प्रकार का चिह्न है, वहां 'ग्वं' की भांति उच्चारण करना चाहिए । 'स्वस्ति वाचन' के बाद आगे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल से आचमन करें तथा अपने मस्तक पर तीन बार जल छिड़कें । तत्पश्चात् दोनों हाथों को धो लें । आचमन करते तथा जल छिड़कते समय 'ओ३म् केशवाय नमः स्वाहा । ओ३म् नारायणाय नमः स्वाहा । ओ३म् माधवाय नमः स्वाहा ।' इन मन्त्रों का उच्चारण करते जाना चाहिए ।

पवित्रीकरण का मन्त्र

" ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार जल छिड़क कर आचमन करें तथा हाथ धो डालें ।

'पवित्रीकरण' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भूत शद्धि' करें—

भूत शुद्धि का मंत्र

"ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता ।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।"

'भूत शुद्धि' के उपरान्त दाए हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प तथा जल

लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए विघ्न विनाशन 'श्री गणेश जी का ध्यान' करें—

श्री गणेश ध्यान मंत्र

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतु गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशै तानि नामानि यः पठेच्छ्रुणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्न तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वं विघ्नोपशान्तये ॥"

उक्त मन्त्रों का उच्चारण कर हाथ के दूर्वा, अक्षत, पुष्प आदि को श्री गणेश जी के समीप स्थापित कर पुनः दाएं हाथ में तिल, कुश, जल, अक्षत तथा यज्ञोपवीत लेकर नीचे लिखे 'संकल्प वाक्य' का उच्चारण करें—

सङ्कल्प वाक्य

"हरिः ॐ तत्सत् । नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्‌भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैव-

स्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे षष्टिसंवत्सराणांमध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये, चन्द्रे, भौमे, बुधे, वृहस्पतौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुणविशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मा आदि) ऽहं धर्मार्थकाममोक्षहेतवे श्रीगणपत्यादि श्री कृष्णचन्द्रस्य पूजनमहं करिष्ये।"

उक्त 'संकल्प वाक्य' में जहां-जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां क्रमशः विद्यमान संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिये। ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', 'वैश्य को गुप्तोऽहं' तथा शूद्र को 'दासोऽहं,' शब्द का उच्चारण करना चाहिये।

'संकल्प-वाक्य' के पश्चात् सर्व प्रथम नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने इष्ट देवी श्री भगवती गङ्गा जी का 'ध्यान' करना चाहिए।

ध्यान के मंत्र

"अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो
मंदनमथनमौलेर्मालती पुष्पमाला।

जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपित कलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ॥ १ ॥
एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलता
च्छन्नं सूर्यकर प्रतापरहितं शंखेन्दुकुन्दोज्ज्वलम्
गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूत्तुङ्गस्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम्॥२॥
पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि ।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ॥ ३ ॥
गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम् ।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥ ४ ॥
भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं
विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि ।
सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानसङ्गे
तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद ॥ ५ ॥"

आवाहन का मंत्र

"सर्वलोकस्य जननी देवी मकरवाहिनी ।
आवाहयामित्वं गङ्गे नमस्ते शंकरप्रिये॥"

इस मन्त्र द्वारा 'भगवती गङ्गा' का आवाहन कर, निम्न-लिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आसन' प्रदान करें—

आसन का मंत्र

"भागीरथी महामाये त्रैलोक्येषु सुपूजिते ।
अमलं कमलं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'आसन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पाद्य' के निमित्त जल छिड़कें—

पाद्य का मंत्र

"सर्वाणितीर्थं सम्भूतं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाशु नमोऽस्तुते ॥"

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'अर्घ्यं' के निमित्त जल छिड़कें—

अर्घ्य का मंत्र

"अष्टगंध समायुक्तं गन्धपुष्पादिभिर्युतम् ।
अर्घ्यं गृहाणमद्दत्तं शारदायै नमोऽस्तुते ॥"

'अर्घ्यं' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमन' के निमित्त जल छोड़ें—

आचमन का मंत्र

"सर्वलोकस्य या शक्तिर्ब्रह्माविष्णुदिभिःस्तुते ।
ददाम्याचमनं तस्यै प्रसीद मे तु जाह्नवी ॥"

'आचमन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'स्नान' जल के लिए जल समर्पित करें—

स्नान का मन्त्र

"सर्वतीर्थाणि आनीपात् हेमाम्भोरुहवासितैः ।
स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः ॥"

'स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "पञ्चामृत स्नान' करायें—

पञ्चामृत स्नान का मन्त्र

"पञ्चामृतसमायुक्तं तीर्थानां सलिलं शुभम् ।
गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले ॥"

'पञ्चामृत स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'शुद्धोदक स्नान' करायें—

शुद्धोदक स्नान का मन्त्र

"तोयं तव महादेवि कर्पूरागरुवासितम् ।
तीर्थेभ्यं सुसमानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'शुद्धोदक स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'वस्त्र' समर्पित करें—

वस्त्र का मन्त्र

"दिव्याम्बरं नूतनंहि क्षोमंत्वति मनोहरम् ।
दीयमानं मयादेवि गृहाण जगदम्बिके ॥"

'वस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'उपवस्त्र' समर्पित करें—

उपवस्त्र का मन्त्र

"कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नाना रत्नैः समन्वितम् ।
गृहाण त्वं मयाद्दत्तं मङ्गले जगदीश्वरि ॥"

'उपवस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'मधुपर्क' समर्पित करें—

मधुपर्क का मन्त्र

"कापिलं दधि कुन्देन्दुधवलं मधुसंयुतम् ।
स्वर्णपात्रस्थितं चापि मधुपर्कं गृहाण भोः॥"

'मधुपर्क' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आभूषण' समर्पित करें—

आभूषण का मन्त्र

"स्वभाव सुन्दराङ्गायै नानादेवाश्रये शुभे ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते ॥"

'आभूषण' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'गन्ध' समर्पित करें—

गंध का मंत्र

"श्रीखण्डागरुकर्पूरं मृगनाभि समन्वितम् ।
विलेपनं महादेवि तुभ्यदास्यामि भक्तितः ।।"

'गन्ध' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सिन्दूर' समर्पित करें—

सिन्दूर का मंत्र

"सिन्दूर रक्तवर्णं च सिन्दूरतिलक प्रिये ।
भक्त्यादत्तं मयादेवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'सिन्दूर' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'कुंकुम' समर्पित करें—

कुंकुम का मन्त्र

"कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणम् ।
अखंडकाम सौभाग्यं कुंकुमं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'कुंकुम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अक्षत' समर्पित करें—

अक्षत का मन्त्र

"अक्षतान्निर्मलां शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान् ।
गृहाणाशुमहादेवि देहि मे निर्मलाधियम् ।।"

'अक्षत' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्प' समर्पित करें—

पुष्प का मंत्र

"मन्दारपारिजाताद्याः पाटलौ केतकीतथा ।
मरुवामोगरं चैव गृहाणाशु नमोनमः ॥"

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पमाला' समर्पित करें—

पुष्पमाला का मन्त्र

"पद्मशंखजपापुष्पैः शतपत्रैर्विचित्रताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाणत्वं सुरेश्वरि॥"

'पुष्पमाला' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'सुगंधित तेल' समर्पित करें—

सुगंधित तेल का मन्त्र

"स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि दयानिधे ।
सर्वलोकस्य जननी ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥"

'सुगंधित-तेल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'धूप' समर्पित करें—

धूप का मन्त्र

"वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यः गन्धउत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दीपक' प्रदर्शित करें—

दीपक का मन्त्र

"साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निनायोचितं मया ।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि ॥"

'दीपक' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नैवेद्य' समर्पित करें ।

नैवेद्य का मन्त्र

"नैवेद्यं गृह्यतांदेवि भक्ष्यभोज्य समन्वितम् ।
षड्रसैरन्वितं दिव्यं भागीरथी नमोऽस्तुते ॥"

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ऋतु फल' प्रदान करें—

ऋतु फल का मंत्र

"फलेन फलितं सर्वत्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तस्मात् फलप्रदानेन पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ॥"

'ऋतु फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमनीय जल' प्रदान करें—

आचमनीय का मन्त्र

"शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितं ।
आचम्यता मिदं देवी प्रसीद त्वां सुरेश्वरि ॥"

'आचमनीय' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "अखण्ड ऋतु फल' समर्पित करें—

अखण्ड ऋतुफल का मन्त्र

"इदं फलं मयाऽनीतं सरसं च निवेदितम् ।
ग्रहाण परमेशानि प्रसीद प्रणमाम्यहम् ।।"

'अखण्ड ऋतु फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ताम्बूल' समर्पित करें—

ताम्बूल का मन्त्र

"एलालवङ्ग कर्पूर नागपत्रादिभिर्युतम् ।
पूंगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'ताम्बूल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "दक्षिणा' समर्पित करें—

दक्षिणा का मन्त्र

"हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्य फलद मतः शान्ति प्रयच्छ मे।।"

'दक्षिणा' के पश्चात् पुष्प हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'प्रार्थना' करें—

प्रार्थना का मंत्र

"पापाङ्कुशा महादेवि वांछितार्थ प्रदायिनि ।
निष्पापं कुरुमे देवि मावलम्बेन सर्वतः ।।"

प्रार्थना के पश्चात् गंगाजी की आरती, प्रदक्षिणा, गंगालहरी तथा अन्य स्तोत्र आदि का पाठ आदि कृत्य करने चाहिए । स्तोत्र आदि आगे दिये गए हैं ।

यह संक्षिप्त पूजा-विधि श्री गंगा देवी की मूर्ति की है । यदि गंगा जी की प्रत्यक्ष जलधारा का पूजन करना हो तो उसके लिए भी गंध, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य आदि समर्पित करते समय इस पूजा-विधि में प्रयुक्त मन्त्रों का पाठ किया जा सकता है । गंगाजी की जलधारा में दूध चढ़ाने तथा दीपक प्रवाहित करने का विशेष फल कहा गया है।

॥ इति संक्षिप्त गंगा-पूजन विधि समाप्तः ॥

श्री गङ्गा स्तुति

"नमः शिवायै गंगायै शिवदायै नमो नमः ।
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शाङ्कर्यै ते नमो नमः ॥ १ ॥
नमस्ते विश्वरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमो नमः ।
सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्त्तये ॥ २ ॥
सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक्श्रेष्ठ्यै नमोऽस्तुते ।
स्थाणुजङ्गमसंभूतविषहन्त्र्यै नमो नमः ॥ ३ ॥
भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमो नमः ।
मन्दाकिन्यै नमस्तेऽस्तु स्वर्गदायै नमो नमः ॥४॥
नन्दायै लिङ्गधारिण्यै नारायण्यै नमो नमः ।
नमस्ते विश्वमुख्यायै रेवत्यै ते नमो नमः ॥ ५ ॥
वृहत्यै ते नमस्ते ऽस्तु लोकधात्र्यै नमो नमः ।
नमस्ते विश्वमित्रायै नन्दिन्यै ते नमो नमः ॥६॥

पृथ्व्वै शिवामृतायै च सुवृषायै नमो नमः ।
शान्तायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः ॥ ७ ॥
उस्रायै सुखदोग्ध्र्यै च सञ्जीविन्यै नमो नमः ।
ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितघ्न्यै नमो नमः ॥ ८ ॥
प्रणतार्ति प्रभाञ्जन्यै जगन्मात्रै नमोऽस्तुते ।
सर्वापत्प्रतिपक्षायै मंगलायै नमो नमः ॥ ९ ॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ १० ॥
निर्लेपायै दुर्गहन्त्र्यै दक्षायै ते नमो नमः ।
परात्परतरे तुभ्यं नमस्ते मोक्षदे सदा ॥ ११ ॥"

श्री गङ्गाष्टकम्

"मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथी प्रार्थये ।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषुप्रेंखत-
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः॥१॥
त्वत्तीरे तरुकोटरान्तर्गतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरेनरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः ।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटा सङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ॥२॥
उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः ।

नत्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः ॥ ३ ॥
काकैर्निष्कुपितं श्वभिः कवलितं गोपायुभिर्लुण्ठितं
स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम् ।
दिव्यस्त्रीकरचारुचामरमरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः ॥४॥
अभिनवविसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
मंदनमथनमौलेर्मालती पुष्पमाला ।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्या
क्षपित कलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ॥५॥
एतत्तालतमालसालसरलव्यालोलवल्लीलता
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दुकुन्दोज्ज्वलम् ।
गन्धर्वामरसिद्धकिन्नरवधूत्तुङ्गस्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम्॥६॥
गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युत्तम् ।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ॥ ७ ॥
पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि ।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ॥ ८ ॥
गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः ।

प्रक्षाल्य गात्रकलिकल्मषपङ्कमाशु
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ ॥ ८ ॥"

॥ इति श्री गङ्गाष्टकम् सम्पूर्णम् ॥

श्री गङ्गाष्टक स्तोत्रम्

"भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहं
विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि ।
सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानसंगे
तरलतरतरंगे देवि गंगे प्रसीद ॥ १ ॥

भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः
कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति ।
अमर नगर नारीचामरग्राहिणीनां
विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥ २ ॥

ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटा-
वल्लिमुल्लासयन्ती
स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहा
गण्डशैलात्स्खलन्ती ।
क्षोणी पृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमू-
र्निर्भरं भर्त्सयन्ती
पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरि-
त्पावनी नः पुनातु ॥ ३ ॥

मज्जनमातंगकुम्भच्युतमदमदिरा
मोदमत्तालिजालं

स्नानैः सिद्धांगनानां कुचयुगविगल-
त्कुङ्कुमासंगपिंगम् ।
सायंप्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयै-
श्छन्नतीरस्थनीरं
पायान्नो गांगमम्भः करिकलभकरा-
क्रान्तरंहस्तरंगम् ॥ ४ ॥
आदावादिपितामहस्य नियम
व्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः
पादोदकं पावनम् ।
भूयः शम्भुजटाविभूषणमणि-
र्जह्नोर्महर्षेरियं
कन्या कल्मषनाशिनी भगवती
भागीरथी दृश्यते ॥ ५ ॥
शैलेन्द्रादवतारिणी निजजले
मज्जज्जनोत्तारिणी
पारावार विहारिणी भवभय-
श्रेणीसमुत्सारिणी ।
शेषाहेरनुकारिणी हरशिरो-
वल्लीदलाकारिणी
काशीप्रान्तविहारिणी विजयते
गंगा मनोहारिणी ॥ ६ ॥

कुतो वीचिर्वीचिस्तव यदि गता लोचनपथं
त्वमापीताम्बरपुरनिवासं वितरसि ।
त्वदुत्संगे गंगे पतति यदि कायस्तनुभृतां
तदा मातः शातक्रतवपदलाभोऽप्यति लघु ॥ ७ ॥
गंगे त्रैलोक्य सकलसुरवधू
धौतविस्तीर्णतोये
पूर्णब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजो-
हारिणी स्वर्गमार्गे ।
प्रायश्चित्तं यदि स्यात्तवजलकणिका
ब्रह्महत्यादिपापे
कस्त्वां स्तोतुं समर्थस्त्रिजगदघहरे
देविगंगे प्रसीद ॥ ८ ॥
मातर्जाह्नवि शम्भुसंगवलिते
मौलौनिधायाञ्जलिं
त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये
नारायणाङ्घ्रिद्वयम् ।
सानन्दं स्मरतो भविष्यति मम
प्राणप्रयाणोत्सवे
भूयाद्भक्तिरविच्युता हरिहर
द्वैतात्मिका शाश्वती ॥ ९ ॥
गंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्प्रयतो नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥१०॥"
॥ इति श्री गंगाष्टक स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

श्री गङ्गा स्तोत्रम्

"देविसुरेश्वरि भगवतिगंगे त्रिभुवनतारिणि तरलतरंगे ।
शंकरमौलिबिहारिणिविमलेमम मतिरास्तां तव पदकमले॥ १॥
भागीरथिसुखदायिनिमातस्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः ।
नाहं जाने तवमहिमानं पाहिकृपामयि मामज्ञानम् ॥ २ ॥
हरिपदपाद्यतरंगिणि गंगे हिमविधुमुक्ताधवलतरंगे ।
दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं कुरु कृपया भवसागरपारम् ॥३॥
तवजलममलं येन निपीतं परमपदं खलु तेन गृहीतम् ।
मातर्गङ्गे त्वयि योभक्तः किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ॥४॥
पतितोद्धारिणि जाह्नवि गंगे खण्डितगिरिवरमण्डितभंगे ।
भीष्मजननि हे मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये॥५॥
कल्पलताःमिव फलदां लोके प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके।
पारावारविहारिणिगंगे विमुखयुवति कृततरलापांगे ॥ ६ ॥
तव चेन्मातः स्रोतः स्नातः पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः ।
नरकनिवारिणि जाह्नवि गंगे कलुषविनाशिनि महिमोत्तुंगे॥७॥
पुनरसदंगे पुण्यतरंगे जय जय जाह्नवि करुणापगंगे ।
इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणे सुखदे शुभदे भृत्यशरण्ये ॥ ८ ॥
रोगं शोकं तापं पापं हर मे भगवति कुमतिकलापम् ।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥९॥
अलकानन्दे परमानन्दे कुरु करुणामयि कातरवन्द्ये ।
तवतटनिकटे यस्यनिवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः॥ १०॥

वरमिह नीरे कमठोमीनः किं वा तीरे शरटः क्षीणः ।
अथवा श्वपचोमलिनो दीनस्तव न हि दूरेनृपतिकुलीनः।।११।।
भो भुवनेश्वरि पुण्ये धन्ये देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये ।
गंगास्तवमिममलं नित्यं पठति नरो यःस जयतिसत्यम्।।१२।।
येषां हृदयेगंगाभक्तिस्तेषां भवति सदा सुखमुक्तिः ।
मधुराकांतापञ्झटिकाभिः परमानन्दकलितललिताभिः ।।१३।।
गंगास्तोत्रमिदं भवसारं वाञ्छितफलदं विमलं सारं ।
शंकरसेवकशंकररचितंपठति सुखीस्तव इति च समाप्तः।।१४।।"

।। इति श्री गङ्गा स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।।

गंगा नमस्कार मंत्र

"सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां
करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम् ।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरजुष्टां
कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ।।"

श्री गंगा चालीसा

।। दोहा ।।

जय गंगा जगतारणी, त्रिपथगामिनी मात ।
शरणागत जो आवहीं, सो नर सदा सिहात।।

।। चौपाई ।।

जय जय जय सुरलोक निवासिनी ।
जय जय भीमकार्य अघनासिनि ।।

जय ब्रह्माण्ड मण्डली धारिणि ।
सुरसरि भवसागर भव तारिणि ॥
विष्णु पदारविन्द अभिलाखी ।
शिवशंकर जटान मँह राखी ॥
जटा शंकरी नाम तुम्हारा ।
सुर मुनि वेद न पावत पारा ॥
अगजग हेतु मुक्ति फल देनी ।
अघपुंजन कहँ तुम हो छेनी ॥
सर्व सगर कुल तारन हारी ।
महिमा को कहि सकत तुम्हारी ॥
जब ते विष्णु चरण तें आईं ।
तब ते धर्मध्वजा फहराई ॥
गोमुख शिखर विराजत माता ।
सुयश तुम्हार भुवन विख्याता ॥
वेद पुराण शास्त्र यश गावहिं ।
करिमज्जन सब पाप नसावहिं ॥
गंगाजल जापै परि जाई ।
ताकर अघ सब जाहिं नसाई ॥
जेते नर भव पार उतारे ।
तेते नाहिं गगन मँह तारे ॥

यमगण तुमहिं विलोकिपराने ।
यमराजा अतिशय भय माने ॥
निर्मलधार अतीव सुहावन ।
करहिं सदा सब कहँ जो पावन ॥
बलि को छलन गये बलवाना ।
धरयो विराटरूप जग जाना ॥
नापि लीन्ह पल मँह भुवि सारी ।
लक्ष्मी पति लीला विस्तारी ॥
ब्रह्म लोक मँह चरण पखारा ।
धोइ बिरंचि कमण्डलु धारा ॥
प्रगट भई गंगा यहि भांती ।
ब्रह्म कमंडलु वासिनि राती ॥
पुनि भागीरथ तप अति कीन्हा ।
विधि ते मांगि गंग वर लीन्हा ॥
ब्रह्मकमण्डलु ते चलि धारा ।
शिवजटान महँ आसन मारा ॥
भजन कीन्ह भागीरथ भारी ।
भे प्रसन्न सब विधि त्रिपुरारी ॥
जटा खोलि तब गंग निकासी ।
यहि विधि तुम तहँ पुनः प्रकासी ॥
तीन बूंद जल शंकर त्यागी ।
एक पताल गई बड़ भागी ॥

भोगवती लै नाम सुहावन ।
करन लगी सब कहँ सो पावन ॥
दूजी स्वर्गलोक मँह छाई ।
मन्दाकिनी नाम सो पाई ॥
सकल देव दिक्पाल सिहाये ।
गंग स्नान करि पाप नसाये ॥
तीजी बूंद धरनि पै आई ।
भागीरथी नाम सो पाई ॥
जह्नु करत जहँ पै तप भारी ।
गंगा तेहि थल जबहिं पधारी ॥
करि आचमन लई ऋषि जबहीं ।
नाम जाह्नवी पायो तबहीं ॥
साठ कोटि सुत सगर अपावन ।
तिन कहँ तुम गति दीन्हीं पावन ॥
पुनि तुम मिलीं सिन्धु मँह जाई ।
गंगा सागर जहां सुहाई ॥
यहि विधि चरित अनेक तुम्हारे ।
सकल अर्हाहं मनरंजन हारे ॥
तुम्हरी कृपा पाइ जो माता ।
सो नर मुक्ति पदारथ पाता ॥

जो नित करहिं गंग अस्नाना ।
तिन कर होइ परम कल्याना ॥
अघ भाजैं दुख दूरि दुरावहिं ।
कोटिजन्मकृत पाप नसावहिं ॥
चारिपदारथ करतल रहहिं ।
जो जन भजन तुम्हारो करहीं ॥
मकर वाहिनी जय जय गंगे ।
रूप तुम्हार अनूप अभंगे ॥
नदी रूप तुम परहु दिखाई ।
आदि शक्ति तुम सबकी माई ॥
मोपर कृपा करहु जनजानी ।
हरहु कलेश सकल कल्याणी ॥
जो यह पाठ करै चालीसा ।
तापर कृपा करहिं गौरीसा ॥

॥ दोहा ॥

जय गंगे, जय जाह्नवी, जय सुर धुनि जगमात ।
करहुं चरण महँ दण्डवत, महिमा अति विख्यात ॥

॥ इति श्री गंगा चालीसा सम्पूर्णम् ॥

श्री गंगा जी की आरती

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता ।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित पाता ॥
ॐ जय गंगे माता ॥
चन्द्रसी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता ।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता ॥
ॐ जय गंगे माता ॥
भवसागर से तारे, सब जग को त्राता ।
करुणा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुखदाता ।
ॐ जय गंगे माता ॥
एक बार जोभी नर, शरण तेरी आता ।
यम की त्रास मिटाकर, परम सुगति पाता ॥
ॐ जय गंगे माता ॥
आरती मातु तुम्हारी, जो जन नित गाता ।
जगत जलधि से निश्चय, पार वही पाता ॥
ॐ जय गंगे माता ॥

